इज़ा ज़ुल्ज़िलतिल अर्दु ज़िल्ज़ालहा

अहवाले क़यामत

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

अहवाले क़यामत

मुअ़ल्लिफ़

डॉ०-आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

नाम किताब- **अहवाले क़यामत**

मुअल्लिफ़-**डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी**

सने इशाअत-जून-**2020**

कम्पोज़िंग-**जुनैद अली क़ादरी सफ़वी &**
ज़ैनुल आबदीन क़ादरी सफ़वी

क़ीमत- **100/-** रूपये

-: मिलने के पते :-

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तई़नुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरूदो सलाम हो रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐबो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

:– तम्हीद :–

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का शुक्र व एहसान है कि जिसकी तौफ़ीक़ से मैं इस किताब की ताअ़लीफ़ कर रहा हूँ और अल्लाह तबारक व तआ़ला का अ़ज़ीम फ़ज़्लो करम है जिसने मुझे ये सआ़दत अ़ता फ़रमाई है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाता है कि दुनियाँ राह गुज़र है और ऐ गुनाहों के पुतले तूने कितने गुनाह किये जिसका तुझे खुद अंदाजा और शुमार नहीं लेकिन फिर भी मैं तेरी तौबा पर तेरे गुनाहों को मुआ़फ़ कर देता हूँ और दुनियाँ में तेरे गुनाहों की परदा पोशी करता हूँ और तूने मेरी कितनी नाफ़रमानियाँ कीं फिर भी मैंने दर गुज़र फ़रमाया चुनांचा मैं चाहता हूँ कि ऐ मेरे बन्दे तू मेरी फ़रमां बरदारी के साथ अपनी ज़िन्दगी गुज़ार और मेरी ताअ़त व मेरी फ़रमां बरदारी पर ही तेरा ख़ात्मा हो ओर मेरे अवामिर व नवाही पर तू मुक़म्मल अ़मल पैरा हो जा ताकि तेरी आख़िरत संवर जाये और तू आख़िरत के सख़्त तरीन व दर्दनाक अ़ज़ाब से महफूज़ रहे

क्योंकि क़यामत का दिन इन्सान के गुमान से कहीं ज़्यादा सख़्त तर होगा उस दिन लोगों पर मुसल्लत होने वाले अ़ज़ाब की कैफ़ियत व शिद्दत का आ़लम ये होगा कि उसका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता और उस दिन लोग–

निहायत सख़्त मसाइबो आलाम में मुब्तिला होंगे और इन्तिहाई तकलीफ़ो परेशानी से लोग बेहाल होंगे उस दिन सूरज बहुत क़रीब होगा और लोग पसीने में ग़र्क़ हो रहे होंगे और प्यास से लोगों की ज़बानें बाहर को खिंच रही होंगी और कलेजे मुँह को आ रहे होंगे और बेटा अपने बाप से दूर भाग रहा होगा और बाप अपने बेटे से दूर भाग रहा होगा और बीवी अपने शौहर को भूल जायेगी और शौहर अपनी बीवी को न पहचानेगा और माँ अपने बच्चों को भूल जायेगी

और उस दिन लोग नंगे पाँव नंगे बदन मैदाने महशर में जमाअ़ होंगे और क़यामत की हौलनाकी व सख़्त मुसीबत लोगों को हलाक कर रही होगी और बाअ़ज़ लोग कहेंगे कि काश मैं दरख़्त होता जो कि काट दिया जाता और बाअ़ज़ कहेंगे कि काश मैं मिट्टी होता और मख़लूक़ में से कोई जिस्म ऐसा नहीं जो क़यामत की सख़्ती व इन्तिहाई तकलीफ़ो परेशानी को बरदाश्त करने की कुव्वत रखता हो सो उस दिन से डरो और दुनियाँ को तलाक़ देकर आख़िरत की तैयारी में कसरत से नेक आअ़माल करो ताकि अल्लाह तअ़ाला आख़िरत के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखे और अपनी आमान में रखे ऐ गुनाहों व नाफ़रमानियों में मसरुफ़ रहने वाले कब तक तू अपने गुनाहों पर पर्दा डाल सकेगा हालाँकि रोज़े क़यामत तमाम मख़लूक़ात के सामने तेरे तमाम गुनाह ज़ाहिर कर

दिये जायेंगे तब तू पछतायेगा और शर्मसार होगा मगर तेरी शर्मसारी तेरे कोई काम न आयेगी और तू दुनियाँ से वो चीज़ तलब करता है जो कि तेरे मुक़द्दर में नहीं है और ना ही तुझे मिल सकेगी और अल्लाह तआ़ाला ने जो कुछ तुझे दिया है वही तेरे लिये बेहतर है जिस तरह हम अपनी औलाद के लिये जो बेहतर समझते हैं वही करते हैं ठीक इसी तरह मेरा परवर दिगार भी अपने बन्दों के लिये जो बेहतर होता है वही उसके मुक़द्दर में लिख देता है

फिर अपने मुक़द्दर पर क्यों परेशान होता है बल्कि तुझे तो खुश होना चाहिये और अपने परवर दिगार का शुक्र बजा लाना चाहिये कि जो उसने तेरे हक़ में किया वो तेरे लिये बेहतर है याद रख कि मौत का फ़रिश्ता तुझे ख़बर नहीं देगा और न ही तुझे हमेशा ज़िन्दा और मौजूद रहना है बल्कि तू भूली बिसरी यादों में गुम हो जायेगा और जिनके गुनाह हल्के होंगे वो कामयाब होंगे और क़ब्र व दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेंगे पस अपने परवर दिगार से तौबा कर और नेक राह पर पलट आ और कसरत से नेक आअ़माल कर।

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

-: पहली बार सूर फूँकना :-

सूर एक सींग की तरह है जैसे बिगुल होता है और इसकी गोलाई ज़मीन व आसमान की तरह है बेशक इसराफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) साहिबे सूर हैं और उनके चार पर हैं और वो सूर को दाँयी रान पर रखे हुये हैं और सूर का सर उनके मुँह पर है और वो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुक्म के मुन्तज़िर हैं कि कब उन्हें सूर फूँकने का हुक्म होता है तो जब दुनियाँ की मुद्दत पूरी हो जायेगी तो सूर इसराफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) की पेशानी के क़रीब हो जायेगा।

पस इसराफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) उसे अपने चारों परों पर मिलायेंगे और सूर में फूँक देंगे फिर मल्कुल मौत अपना एक हाथ सातवीं ज़मीन के नीचे कर देंगे और दूसरा हाथ सातवें आसमान के ऊपर कर देंगे पस तमाम आसमानों व ज़मीन वालों की अर'वाह क़ब्ज़ कर लेंगे सिवाये इबलीस अ़लैहि लाअ़नत के और रुए ज़मीन पर कोई जानदार न बचेगा सिवाये जिबराईल, मीकाइल व इसराफ़ील व इज़राईल (अ़लैहिमुस्सलाम) के और आसमान पर कोई न रहेगा मगर वो जिन्हें अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने इस इरशाद से मुस्तस्ना किया है।

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और सूर फूँका जायेगा पस मर जायेंगे जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है मगर वही जिसे अल्लाह तआ़ला ज़िन्दा रखना चाहे। (सू०–ज़ुमर–39/68)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

फिर जब सूर में एक मर्तबा फूँक मारी जायेगी और ज़मीन और पहाड़ (अपनी जगहों से) उठा लिये जायेंगे फिर वो एक ही बार टकराकर रेज़ा रेज़ा कर दिये जायेंगे सो उस वक़्त वाक़ेअ़ होने वाली (क़यामत) बरपा हो जायेगी और सब आसमानी कुर्रे फट जायेंगे और ये कायनात (सियाह) शिगाफ़ों पर मुश्तमिल हो जायेगी और फ़रिश्ते उसके किनारों पर खड़े होंगे और आपके रब के अ़र्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते उठाये हुये होंगे (और) उस दिन तुम (हिसाब के लिये) पेश किये जाओगे (और) तुम्हारी कोई भी पोशीदा बात छुपी न रहेगी।
(सू०–हाक़्क़ाह–69/13 ता 17)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

फिर जब सूर फूँका जायेगा तो उनके दरमियान उस दिन न रिश्ते (बाक़ी) रहेंगे और न वो एक दूसरे का हाल पूछ सकेंगे।
(सू०–मुमिनून–23/101)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
और आसमानों व ज़मीन का (सब) ग़ैब अल्लाह ही के लिये है और क़यामत के बपा होने का वाक़अ़ा इस क़दर तेज़ होगा जैसे आँख का झपकना या उससे भी तेज़ तर होगा बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।
(सू०–नह्ल–16/77)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
और वही (अल्लाह) है जिसने आसमानों और ज़मीन को हक़ (पर मबनी तदबीर) के साथ पैदा फ़रमाया है और जिस दिन वो फ़रमायेगा हो जा तो वो (रोज़े महशर बपा) हो जायेगा उसका फ़रमान हक़ है और उस दिन उसी की बादशाही होगी जब सूर में फूँक मारी जायेगी (वही) हर पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला है और वही हिकमत वाला ख़बरदार है। (सू०–अनअ़ाम–6/73)

–: सूर क्या है :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि एक आअ़राबी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सूर क्या चीज़ है तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो एक सींग (की तरह) है जिसमें (रोज़े क़यामत) फूँक मारी जायेगी।
(तिर्मिज़ी–2/251-2430) (अबू दाऊद–6/598-4742)

-: सूर मुँह के क़रीब है :-

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं क्यों कर आराम करूँ जबकि सूर वाले फ़रिश्ते यानी इसराफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) ने सूर मुँह में लिया हुआ है और वो कान लगाये इस इन्तिज़ार में है कि उन्हें सूर फूँकने का कब हुक्म हो और वो सूर फूँकें सो ये अम्र रसूलुल्लाह के सहाबा पर सख़्त गुज़रा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम कहो ''हसबुनल्लाहा व नेअ़मल वकील अलल लाहि तवक्कल्ना'' यानी अल्लाह तआ़ला हमें काफ़ी है और वो बेहतर कारसाज़ है और हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया है।

(तिर्मिज़ी-सुनन-2/251-ह०-2431)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सूर फूँकने वाले फ़रिश्ते के हाथों में सूर है और वो अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुन्तज़िर हैं कि कब उनको सूर फूँकने का हुक्म हो और वो सूर फूँकें

(इब्ने माजा-सुनन-3/394-ह०-4273)

-: ज़हूरे क़यामत :-

जब सूर फूँका जायेगा तो तमाम अहले आसमान व अहले ज़मीन वालों के जिस्म ख़ौफ़ व घबराहट से काँप रहे होंगे सिवाये उसके जिसे अल्लाह तआ़ला महफ़ूज़ रखे और अपनी अमान में रखे और उस वक्त पहाड़ चलेंगे और आसमान फट पडेंगे और ज़मीन लरज़ जायेगी और हवामिल के हमल साक़ित हो जायेंगे और दूध पिलाने वाली माँ अपने बच्चे को भूल जायेगी और बच्चे ख़ौफ़ से बूढ़े हो जायेंगे और तहक़ीक़ सितारे झड़ पड़ेंगे व टूटेंगे और आफ़ताब तारीक व बे नूर हो जायेगा और आसमान ऊपर से खींच लिया जायेगा।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है-

और जिस दिन सूर फूँका जायेगा तो वो (सब लोग) घबरा जायेंगे जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं मगर जिन्हें अल्लाह चाहेगा (वो नहीं घबरायेंगे) और सब उस (अल्लाह) की बारगाह में आ़जिज़ी करते हुये हाज़िर होंगे और (ऐ इन्सान) तू पहाड़ों को देखेगा तो ख़्याल करेगा कि वो जमे हुये हैं हालाँकि वो बादल के उड़ने की तरह उड़ रहे होंगे ये अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को (हिकमत व तदबीर के साथ) मज़बूत व मुस्तहकम बना रखा है बेशक वो उन सब (कामों) से ख़बरदार है जो तुम करते हो।

(सू०-नम्ल-27/87,88)

इरशादे बारी तआ़ला है–

जब सूरज लपेट कर बे नूर कर दिया जायेगा और जब सितारे अपनी जगह से गिर पड़ेंगे और जब पहाड़ (गुबार बनाकर फ़ज़ा में) चलाये जायेंगे और जब हामला ऊँटनियाँ बेकार छूटी फिरेंगी (कोई उनका ख़बरगीर न होगा) और जब वहशी जानवर जमाअ़ किये जायेंगे (और) जब समुन्दर सुलगाये जायेंगे और जब रुहें (बदनों से) मिला दी जायेंगी और जब ज़िन्दा दफ़न की हुई लड़की से पूछा जायेगा कि वो किस गुनाह के सबब क़त्ल की गई थी और जब आअ़माल नामे खोले जायेंगे और जब समावी तबक़ात को फाड़कर अपनी जगहों से हटा दिया जायेगा और जब दोज़ख़ (की आग) भड़काई जायेगी और जब जन्नत क़रीब कर दी जायेगी तो हर शख़्स जान लेगा जो कुछ उसने हाज़िर किया है।
(सू०–तकवीर–81/1 ता 14)

इरशादे बारी तआ़ला है–

(याद करो) वो वाक़ेआ़ जो दिल दहलाकर रख देगा क्या है वो दिल दहलाने वाला वाक़ेआ़ और तुम्हें क्या मालूम वो दिल दहलाने वाला वाक़ेआ़ क्या है जिस दिन सारे लोग फैले हुये पतंगों की तरह हो जायेंगे और पहाड़ रंग बिरंगे धुनकी हुई ऊन की तरह हो जायेंगे पस वो शख़्स जिस (के आअ़माल) के पलड़े भारी होंगे तो वो खुश गवार ऐश व मसर्रत में होगा और जिसके आअ़माल के

पलड़े हल्के होंगे तो उसका ठिकाना हाविया (जहन्नुम का गढ़ा) होगा और आप क्या समझते हैं कि हाविया क्या है (वो जहन्नुम की) सख़्त दहकती हुई आग (का इन्तिहाई गहरा गढ़ा) है। (सू०–क़ारिया–101/1 ता 8)

इरशादे बारी तआ़ला है–
उस दिन (कायनात की) हर मुतहर्रिक चीज़ शदीद हरकत में आ जायेगी पीछे आने वाला एक और ज़लज़ला उसके पीछे आयेगा उस दिन (लोगों के) दिल ख़ौफ़ व इज़्तिराब से धड़कते होंगे (और) उनकी आँखें (ख़ौफ़ व हैबत से) झुकी हुई होंगी। (सू०–नाज़िआत–79/6 ता 9)

इरशादे बारी तआ़ला है–
बेशक जो वाअ़दा (क़यामत का) तुमसे किया जा रहा है वो ज़रुर पूरा होकर रहेगा फिर जब सितारों की रोशनी ज़ायल कर दी जायेगी और जब आसमानी कायनात में शिगाफ़ हो जायेंगे और जब पहाड़ (रेज़ा–रेज़ा करके) उड़ा दिये जायेंगे और जब पैग़म्बरों को (अपनी–अपनी उम्मतों पर गवाही के लिये) जमाअ़ किया जायेगा (कोई पूछे कि) इस मुआ़मले को किस दिन के लिये मुल्तवी किया गया है (तो जवाब ये है कि) फ़ैसले के दिन के लिये और तुम्हें क्या मालूम फ़ैसले का दिन क्या चीज़ है बड़ी ख़राबी होगी ऐसे लोगों की जो हक़ को झुठलाते हैं क्या हमने

पहले के लोगों हलाक नहीं किया फिर उनके पीछे बाद वालों को भी हलाक कर देंगे और ऐसा ही सुलूक हम मुजरिमों के साथ किया करते हैं बड़ी ख़राबी होगी उस दिन ऐसे लोगों की जो हक़ को झुठलाते हैं क्या हमने तुम्हें एक हक़ीर पानी से पैदा नहीं किया फिर हमने उसे मुक़र्ररा वक़्त तक एक महफ़ूज़ जगह (यानी रहमे मादर) में रखा (वक़्त के) एक मुअ़य्यन अंदाज़े तक फिर हमने (नुत्फ़ा से तवल्लुद तक तमाम मराहिल के लिये) वक़्त के अंदाज़े मुक़र्रर किये पस (हम) क्या ही खूब अन्दाज़े मुक़र्रर करने वाले हैं उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है क्या हमने ज़मीन को समेट लेने वाली नहीं बनाया (जो समेटती है) ज़िन्दों को भी और मुर्दों को भी हमने उस पर बुलन्द व मज़बूत पहाड़ रख दिये और हमने तुम्हें (शीरीं चश्मों के ज़रिए) मीठा पानी पिलाया उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी बर्बादी होगी (अब) तुम उस (अ़ज़ाब) की तरफ़ चलो जिसे तुम झुठलाया करते थे तुम (दोज़ख़ के धुँऐं पर मबनी) उस साये की तरफ़ चलो जिसके तीन हिस्से हैं जो न तो ठन्डा साया है और न ही आग की तपिश से बचाने वाला है बेशक वो (दोज़ख़) ऊँचे महल की तरह (बड़े-बड़े) शोअ़ले और चिंगारियाँ उड़ाती है (यूँ भी लगता है) गोया वो (चिंगारियाँ) ज़र्द रंग वाले ऊँट हों उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है ये ऐसा दिन है कि वो (उसमें) बोल भी न सकेंगे और न

ही उन्हें इजाज़त दी जायेगी कि वो माअ़ज़रत कर सकें उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है ये फ़ैसले का दिन है (जिसमें) हम तुम्हें और (सब) पिछले लोगों को जमाअ़ करेंगे फिर अगर तुम्हारे पास (अ़ज़ाब के बचने का) कोई हीला है तो मुझ पर चला लो उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है बेशक परहेज़गार ठन्डे सायों और चश्मों में (ऐश व राहत के साथ) होंगे और फल और मेवे जिस चीज़ की भी वो ख़्वाहिश करेंगे वो उनके लिये मौजूद होगी व (उनसे कहा जायेगा) तुम खूब मज़े से खाओ और पियो उन आअ़माले (सालिहा) के बदले जो तुम किया करते थे बेशक़ हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है (ऐ हक़ के मुनकिरों) तुम थोड़ा अ़रसा खा लो और फ़ायदा उठा लो बेशक तुम मुजरिम हो सो उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है और जब उनसे कहा जाता है कि तुम (अल्लाह के हुजूर) झुको तो वो नहीं झुकते उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है।
(सू०–मुरसलात–77/7 ता 50)

इरशादे बारी तआ़ला है–

जब सब आसमानी कुर्रे फट जायेंगे और जब सितारे झड़ पड़ेंगे और जब समुन्दर (और दरिया) उभर कर बह जायेंगे और जब क़ब्रें उखाड़ दी जायेंगीं उस वक़्त हर शख़्स को पता चल जायेगा

कि उसने आगे क्या भेजा।
(सू०–इनफ़ितार–82/1 ता 5)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत चाँद और सूरज लपेट दिये जायेंगे।
(बुख़ारी–सही–3/449-ह०–3200)

रोज़े क़यामत ज़मीनो आसमान में कुछ भी बाक़ी न रहेगा वो अपने अन्दर की हर चीज़ को बाहर निकाल कर फेंक देगी और सितारे झड़ पड़ेगे और चाँद व सूरज बे नूर हो जायेंगे और चारों तरफ़ तारीकी छा जायेगी और समुन्दर सूख जायेंगे व पहाड़ धुनकी हुई ऊन की तरह उड़ाये जायेंगे और लोग बिखरे हुये पतंगों की तरह होंगे और रोज़े क़यामत लोग नंगे बदन होंगे और उन की शर्मगाहें खुली होने के बावुजूद लोग क़यामत की हौलनाकियों व सख़्त मुसीबतो परेशानी के सबब एक दूसरे को देखने से बे नियाज़ रहेंगे।

चुनांचा इरशादे बारी तआ़ला है–
उनमें से हर एक को उस दिन अपनी ऐसी फ़िक्र पड़ी होगी कि उसे दूसरों का होश न होगा।
(सू०–अबस–80/37)

इरशादे बारी तआ़ला है–

जब ज़मीन अपने सख़्त भूचाल से बड़ी शिद्दत के साथ थरथराई जायेगी और ज़मीन अपने सब बोझ निकाल बाहर फेंकेगी और इन्सान कहेगा कि इसको क्या हो गया है उस दिन ज़मीन अपनी सारी ख़बरें बतायेगी क्योंकि तुम्हारे परवरदिगार ने उसे यही हुक्म दिया होगा (और) उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ गिरोह बनकर (जुदा जुदा हालतों में) निकलेंगे ताकि उन्हें उनके आअ़्माल दिखाये जायें तो जिसने ज़र्रा बराबर भी नेकी की होगी वो उसे देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर भी बुराई की होगी वो उसे देख लेगा। (सू०–ज़लज़ला–1 ता 8)

पस उस दिन न कोई इन्सान बाक़ी रहेगा और न जिन्न और न कोई शैतान और न कोई हैवान फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ मल्कुल मौत आज मैं तुझे ग़ज़ब का लिबास पहनाता हूँ तू मेरे ग़ज़ब व सख़्ती के साथ इब्लीस की तरफ़ जा और उसे मौत की सख़्ती चखा और उस पर तमाम मख़्लूक़ अव्वलीन व आख़िरीन व जिन्न व इन्सान की मौत की सख़्तियों से दो गुनी सख़्ती डाल और अपने साथ सत्तर हज़ार अ़ज़ाब के फ़रिश्तों को भी ले जा और उनमें हर एक फ़रिश्ते के पास आग की ज़ंजीरें हों पस मल्कुल मौत निदा करेगा तो दोज़ख़ के दरवाज़े खोल दिये जायेंगे फिर वो अ़ज़ाब के फ़रिश्ते उसमें से ज़ंजीरें निकालेंगे फिर मल्कुल मौत ऐसी शक्ल में नाज़िल-

होगा कि अगर उस शक्ल को आसमान व ज़मीन की मख़लूक़ देख ले तो सब के सब मर जायें फिर जब वो इब्लीस लईन के पास आयेंगे तो इब्लीस लईन बेहोश हो जायेगा और मल्कुल मौत की झड़क में ऐसी गरज़ होगी कि अगर आसमान व ज़मीन वाले सुन लें तो उस गरज़ से बेहोश हो जायें फिर उस पर अ़ज़ाब के फ़रिश्ते टूट पड़ेंगे और ज़ंजीरों के साथ उसकी खाल नोंच-नोंच कर उतार देंगे।

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रिश्ते को हुक्म देगा जो तमाम दरियाओं को खुश्क कर देगा और दरिया इस तरह खुश्क हो जायेंगे जैसे उनमें कभी पानी था ही नहीं फिर वो पहाड़ों के पास आयेगा और कहेगा कि तुम्हारी मुद्दत पूरी हो चुकी फिर वो पिघल जायेंगे फिर वो ज़मीन के पास आयेगा और कहेगा कि तेरी मुद्दत पूरी हो चुकी फिर ज़मीन तमाम बोझ निकाल बाहर कर देगी और तमाम इमारात गिर जायेंगी और उसका पानी सूख जायेगा।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है-

जो कुछ ज़मीन पर है सब फ़ना हो जायेगा सिर्फ़ आपके रब की ज़ाते पाक ही बाक़ी रहेगी जो साहिबे इज़्ज़त व इकराम है।
(सू०-रहमान-55/26,27)

फिर वो फ़रिश्ता आसमान पर जायेगा और उस पर ज़ोरदार आवाज़ देगा पस आफ़ताब तारीक हो जायेगा और माहताब बे नूर हो जायेगा और सितारे झड़ पड़ेंगे फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ मल्कुल मौत मेरी मख़्लूक़ में से अब कौन बाक़ी रह गया है तो वो अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब अब जिबरईल व मीकाइल व इसराफ़ील और मैं व हामिलीने अ़र्श ज़िन्दा हैं पस अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ मल्कुल मौत तूने मेरा कलाम सुना है कि हर जान को मौत का मज़ा चख़ना है और तुम सब मेरी मख़्लूक़ में से हो तो अब तुम सब भी मर जाओ तो वो सब के सब मर जायेंगे फिर अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई चीज़ बाक़ी न रहेगी फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला जिन फ़रिश्तों को चाहेगा दोबारा पैदा फ़रमायेगा।

:- हुजूर अ़लैहिस्सलाम की इ़ज़्ज़त व इकराम का बयान :-

फिर अल्लाह तआ़ला जब मख़्लूक़ को दोबारा ज़िन्दा करने का इरादा फ़रमायेगा तो सबसे पहले जिबराईल, मीकाइल, इसराफ़ील (अ़लैहिमुस्सलाम) को ज़िन्दा फ़रमायेगा फिर अल्लाह तआ़ला बुर्राक़ को संवारने का हुक्म देगा पस वो फ़रिश्ते उस बुर्राक़ को लेकर जन्नत में जायेगे और कहेंगे ऐ रिज़वाने जन्नत (ऐ जन्नत के दरबान) मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) और आपकी

उम्मत के लिये इसे सजा दो फिर वो बुर्राक़ को जन्नती लिबास पहनायेंगे जो याकूत से जड़ा हुआ होगा और बुर्राक़ की लगाम सब्ज़ ज़बरजद की होगी फिर अल्लाह तआ़ाला मलाइका से फ़रमायेगा कि इसे हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की क़ब्र मुबारक पर ले जाओ पस वो दो ख़िलअ़तें और एक जन्नती ताज और बुर्राक़ को लेकर हुजूर की क़ब्र मुबारक पर जायेंगे और उस वक़्त ज़मीन साफ़ व हमवार हो चुकी होगी फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की क़ब्रे अनवर से एक नूर ज़ाहिर होगा जो मिस्ले आसमान के किनारे तक बुलन्द होगा

फिर मीकाइल (अ़लैहिस्सलाम) कहेंगे ऐ-मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) आप पर सलाम हो फिर इसराफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) अ़र्ज़ करेंगे ऐ पाक रुह उठिये और अपने रब का हुक्म पूरा कीजिये और अपनी उम्मत के हिसाब और रहमान की बारगाह में पेशी के लिये उठिये पस आप की क़ब्र मुबारक खुल जायेगी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) अपनी क़ब्रे अनवर में बैठे हुये होंगे और अपने सर मुबारक और दाढ़ी मुबारक से मिट्टी झाड़ते होंगे पस जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) आपको दो ख़िलअ़तें देंगे (यानी वो जन्नती पोशाकें जो अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ से आपकी इ़ज़्ज़त व इकराम में आपको अ़ता होंगी) फिर वो एक ताज और बुर्राक़ पेश-

करेंगे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) से पूछेंगे ये कौन सा दिन है वो अ़र्ज़ करेंगे कि ये हश्र का दिन है और ये दिन काफ़िरों के लिये फ़िराक़ (फ़िक्र) और मोमिनों के लिये मुलाक़ात का दिन है और ये नदामत व मलामत और हसरत का दिन है फिर जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) अ़र्ज़ करेंगे कि आपके लिये ताज और दो ख़िलअ़तें और बुर्राक़ हाज़िर है और आपके लिये जन्नत को खोल दिया गया है और जन्नत को आपकी आमद के वास्ते आरास्ता कर दिया गया है और जहन्नुम को बन्द कर दिया गया है

फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमायेंगे ऐ जिबराईल मैं ये सब नहीं पूछता बस मैं ये पूछता हूँ कि मेरी गुनाहगार उम्मत का हाल क्या है शायद तू उन्हें पुल सिरात पर छोड़ आये हो तो इसराफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) अ़र्ज़ करेंगे ऐ-मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) मुझे अपने रब की क़सम मैंने अभी क़ब्रों से उठने का सूर नहीं फूँका है पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमायेंगे अब मेरा दिल खुश हुआ और मेरी आँखें ठन्डी हुईं फिर आप जन्नती ताज और ख़िलअ़तें ज़ैबे तन करेंगे और बुर्राक़ पर सवार होकर अ़र्श की तरफ़ र'वाना होंगे।

–: दोबारा सूर फूँके जाने का बयान :–

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ इसराफ़ील उठो और उठाने का सूर फूँको पस वो सूर फूँकेंगे और आवाज़ देंगे कि ऐ बदनों से निकलने वाली रुहों और बोशीदा हड्डियों और बिखरने वाले जिस्मों और मुन्क़ताअ़ रगों और जुदा होने वाली खालों और गिरे हुये बालों अल्लाह के हुक्म से खड़े हो जाओ तो वो सब अल्लाह तआ़ला के हुक्म से खड़े होंगे तो सब आसमान की तरफ़ देखेंगे और तहक़ीक़ वो फ़ना हो चुका होगा फिर वो ज़मीन को देखेंगे तहक़ीक़ को बदल चुकी होगी और वो पहाड़ों की तरफ़ देखेंगे वो चल चुके होंगे और दरिया खुश्क हो चुके होंगे और अ़ज़ाब के फ़रिश्ते हाज़िर होंगे और सूरज लपेट दिया गया होगा और मीज़ान क़ायम हो चुका होगा और जन्नत नज़दीक कर दी गयी होगी फिर उस दिन हर जान अपने हर अच्छे व बुरे अ़मल पर मुत्तलाअ़ होगी जो वो अपने साथ लायेगी।

इरशादे बारी तआ़ला है :–

फिर जब दूसरी बार सूर फूँका जायेगा तो वो सब अचानक देखते हुये खड़े हो जायेंगे।
(सू०–जुमर–39/68)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
फिर जब दोबारा सूर में फूँक मारी जायेगी तो वो दिन यानी रोज़े क़यामत बड़ा ही सख़्त दिन होगा और काफ़िरों पर हरगिज़ आसान न होगा।
(सू०-मुदस्सिर-74/8-10)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
जिस दिन सूर फूँका जायेगा तो तुम गिरोह दर गिरोह अल्लाह के हुजूर चले आओगे और आसमान के तबक़ात फाड़ दिये जायेंगे तो (फटने के बाइस गोया) वो दरवाज़े ही दरवाज़े हो जायेंगे और पहाड़ (गुबार बनाकर फज़ा में) उड़ा दिये जायेंगे सो वो रेत की तरह हो जायेंगे।
(सू०-नबा-78/18 ता 20)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दोंनों सूर के फूँको के दरमियान चालीस का फ़र्क़ होगा (या चालीस दिन या चालीस महीने या चालीस साल) फिर आसमान से पानी बरसेगा जिससे लोग ऐसे उग आयेंगे जैसे सब्ज़ा उग आता है और आदमी के बदन में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो गल न जाये सिवाये एक हड्डी के वो रीढ़ की हड्डी है इसी हड्डी से क़यामत के दिन लोग पैदा होंगे।
(मुस्लिम-सही-6/466-ह०-7414)

:- क़ब्रों से उठना और मैदाने महशर में जमाअ़ होने का बयान :-

फिर क़ब्रों से निकलने के बाद तमाम लोग नंगे पाँव नंगे जिस्म मैदाने महशर की तरफ़ तेज़ी से चलेंगे सिवाये अल्लाह तआ़ला के मख़सूस व मुक़र्रब बन्दों के और बाअ़ज़ लोग मैदाने महशर की तरफ़ सवारियों पर चलेंगे और बाअ़ज़ पैदल चलेंगे और बाअ़ज़ घुटनों के बल चलेंगे और बाअ़ज़ मुँह के बल घसिटते हुये चलेंगे और बाअ़ज़ लोग अल्लाह तआ़ला की रहमत के साये में चलेंगे और मैदाने महशर की ज़मीन हमवार होगी उसमें कोई ऊँच नीच न होगी और न कोई टीला होगा और न कोई साया होगा सिवाये इसके कि जिसे रब तआ़ला साया अ़ता फ़रमाये और वो ज़मीन दुनियाँ की ज़मीन की तरह न होगी बल्कि उसे दूसरी ज़मीन से बदल दिया गया होगा और उस वक़्त लोगों के दिल सख़्त ख़ौफ़ ज़दा होंगे व तमाम मख़लूक़ मैदाने महशर में जमाअ़ होगी।

मैदाने महशर की ज़मीन सफ़ेद होगी

इरशादे बारी तआ़ला है :-

जिस दिन ये ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जायेगी और जुमला आसमान भी बदल दिये जायेंगे और सब लोग अल्लाह के रुबरु हाज़िर होंगे। (सू०–इब्राहीम–14/48)

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्यामत के दिन लोग एक सफ़ेद ज़मीन पर इकट्ठे किये जायेंगे जो सुर्ख़ी मारती होगी जैसे मैदा की रोटी और उस ज़मीन में किसी के लिये अ़लामत व निशान न होगा।
(मुस्लिम–सही–6/356-ह०–7055)
(बुख़ारी–सही–6/93-ह०–6521)

:– रोज़े क्यामत लोग नंगे बदन उठाये जायेंगे :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क्यामत तुम नंगे पाँव और नंगे बदन और बे ख़त्ना उठाये जाओगे।
(बुख़ारी–सही–6/95-ह०–6525)
(नसाई–सुनन–1/674-ह०–2085,2086)
(मुस्लिम–सही–6/394-ह०–7200,7201)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क्यामत लोग नंगे पैर और नंगे बदन उठाये जायेंगे तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह तो मर्द–

व औ़रत एक दूसरे की तरफ़ देखेंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हश्र की मुसीबत ऐसी सख़्त होगी कि हर एक को सिर्फ़ अपनी फ़िक्र होगी जो उसे एक दूसरे को देखने से बे नियाज़ कर देगी।
(नसाई–सुनन–1/674-ह०–2087)
(इब्ने माजा–सुनन–3/395-ह०–4276)
(बुख़ारी–सही–6/96-ह०–6527)
(मुस्लिम–सही–6/394-ह०–7198)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
उनमें से हर एक को उस दिन अपनी ऐसी फ़िक्र पड़ी होगी कि उसे दूसरों का होश न होगा।
(सू०–अबस–80/37)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन लोग नंगे पाँव व नंगे बदन और बे ख़त्ना उठाये जायेंगे जैसा कि पैदा किये गये थे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फ़रमाई जिस दिन हम आसमान को यूँ लपेट देंगे जैसे लिखे हुये कागज़ को लपेट दिया जाता है जिस तरह हमने (कायनात को) पहली बार पैदा किया था हम उसी तरह दोबारा पैदा करेंगे ये वाअ़दा पूरा करना हमने लाज़िम कर लिया है (सू०–अम्बिया–21/104)

फिर मख़्लूक़ में से सबसे पहले हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को जन्नती लिबास पहनाया जायेगा और कई लोग मेरे असहाब में से दाँयी तरफ़ और बाँयी तरफ़ से पकड़े जायेंगे मैं कहूँगा ऐ मेरे रब ये तो मेरे सहाबी हैं तो मुझसे कहा जायेगा ऐ महबूब आप नहीं जानते कि इन्होंने आपके विसाल के बाद क्या-क्या बुराईयाँ कीं हैं और ये लोग दीन इस्लाम से अपनी ऐड़ियों पर फिर गये फिर मैं कहूँगा जैसा कि हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा ''अगर तू इनको सज़ा दे तो ये तेरे बन्दे हैं और अगर तू इनको मुआ़फ़ फ़रमां दे तो तू ग़ालिब हिकमत वाला है''।
(सू०-मायदा-5/118) (बुख़ारी-सही-6/95-ह०-6526)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/246-ह०-2423)
(बुख़ारी-सही-3/528-ह०-3349)
(मुस्लिम-सही-6/394-ह०-7201)

:- क़ब्रों से निकलकर मैदाने महशर की तरफ़ चलने का बयान :-

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और (जिस वक़्त दोबारा) सूर फूँका जायेगा तो वो फ़ौरन क़ब्रों से निकल कर अपने रब की तरफ़ दौड़ पडेंगे (वो रोज़े महशर की हौलनाकियों को देखकर) कहेंगे हाय हमारी बद बख़्ती हमें किसने हमारी ख़्वाबगाहों से उठा दिया (ये ज़िन्दा होना) तो वही है जिसका खुदाये रहमान ने-

वाअ़दा किया था और रसूलों ने सच फ़रमाया था ये महज़ एक चिंघाड़ होगी तो वो सब के सब यकायक हमारे हुजूर लाकर हाज़िर कर दिये जायेंगे फिर आज के दिन किसी जान पर कोई जुल्म न किया जायेगा और न तुम्हें कोई बदला दिया जायेगा सिवाये उन कामों के जो तुम किया करते थे। (सू०–यासीन–36/51 ता 54)

इरशादे बारी तआ़ाला है :–

वो तो उन (ज़ालिमों) को फ़क़त उस दिन तक के लिये मुहलत दे रहा है जिसमें (ख़ौफ़ के मारे) आँखें फटी रह जायेंगी वो लोग (मैदाने हश्र की तरफ़) अपने सर ऊपर उठाये हुये दौड़ते जा रहे होंगे इस हाल में कि उनकी पलकें भी न झपकती होंगी और उनके दिल (ख़ौफ़ व दहशत के सिवा हर ख़्याल से) खाली और उड़े हुये होंगे।
(सू०–इब्राहीम–14/42,43)

इरशादे बारी तआ़ाला है :–

जिस दिन लोग चिंगाड़ की सख़्त आवाज़ को बिल यक़ीन सुनेंगे यही क़ब्रों से निकलने का दिन होगा बेशक हम ही ज़िन्दा रखते हैं और हम ही मौत देते हैं और हमारी ही तरफ़ पलटकर आना है जिस दिन ज़मीन उन पर से फट जायेगी तो वो जल्दी जल्दी निकल पड़ेगे ये हश्र (फिर से लोगों को जमाअ़ करना) हम पर निहायत आसान है।
(सू०–क़ाफ़–50/42 ता 44)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और उन में से हर एक क़यामत के दिन उसके हुजूर तन्हा आने वाला है। (सू०-मरयम-19/95)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
जिस दिन हम परहेज़गारों को (ख़ुदाऐ) रहमान के हुजूर (मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की तरह) सवारियों पर ले जायेंगे और हम मुजरिमों को जहन्नुम की तरफ प्यासा हाँक कर ले जायेंगे।
(सू०-मरयम-19/85,86)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
ये ऐसे लोग हैं जो अपने चेहरों के बल दोज़ख़ की तरफ़ हाँके जायेंगे वो ठिकाने के लिहाज़ से बदतर और रास्ते के ऐतबार से गुमराह तर हैं।
(सू०-फुरक़ान-25/34)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह रोज़े क़यामत लोग अपने चेहरों के बल कैसे चलाये जायेंगे तो आप ने फ़रमाया कि जिस परवरदिगार ने इन्सान को दो पैरों पर चलाया है तो क्या वो उसे क़यामत के दिन मुँह के बल चलाने पर क़ादिर नहीं है तो हज़रत क़तादा ने कहा हमारे रब की इ़ज़्ज़त की क़सम बेशक वो इस पर क़ादिर है। (बुख़ारी-सही-4/707-ह०-4760)

➡ हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम मैदाने हश्र में पैदल और सवार लाये जाओगे और बाअ़ज़ लोग अपने मुँह के बल घसीटे जायेंगे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/247-ह०–2424) (बुख़ारी–सही–6/94-ह०–6523)

मैदाने हश्र में जमाअ़ होने का बयान

इरशादे बारी तआ़ला है :–
जिस दिन सब लोग तमाम जहानों के रब के हुजूर खड़े होंगे। (सू०–मुतफ़्फ़िफ़ीन–83/6)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
बेशक फ़ैसले का दिन (यानी क़यामत) का एक मुक़र्ररा वक़्त है जिस दिन सूर फूँका जायेगा तो तुम सब गिरोह दर गिरोह (अल्लाह के हुजूर) चले आओगे। (सू०–नबा–78/18)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
फिर सब लोग अपने रब के पास जमाअ़ किये जायेंगे। (सू०–अनआ़म–6/38)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
वो तुम्हें ज़रुर क़यामत के दिन जमाअ़ करेगा जिसमें कोई शक नहीं और बात में अल्लाह से ज़्यादा सच्चा कौन है।
(सू०–निसा–4/87)

-: रोज़े क़यामत जमाअ़ किये जाने वाले लोगों की अक़साम :-

➡ हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में से कई क़िस्म के गिरोह जमाअ़ किये जायेंगे जिन में से एक वो होगा जिनकी शक़्लें बन्दरों जैसी होंगी और वो लोगों में फ़ित्ना गर होंगे जैसा कि रब तअ़ाला का इरशादे गिरामी है-

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
और फ़ित्ना अंगेज़ी तो क़त्ल से भी ज़्यादा सख़्त (जुर्म) है। (सू०-बक़राह-2/191)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
और (जो लोग) ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी करते हैं उन्हीं लोगों के लिये लाअ़नत है और उनके लिये बुरा घर है। (सू०-राअ़द-13/25)

और दूसरा गिरोह वो होगा जो रोज़े क़यामत खिंजीर की सूरत पर होंगे और वो सूद खोर होंगे और फिर बिला तौबा मरे और एक रिवायत में है कि वो रोज़े क़यामत अंन्धे उठाये जायेंगे और अंन्धे होने के बाइस वो गिरते होंगे और ये वो लोग होंगे जो दुनियाँ में सूद खोर होंगे।

जो लोग सूद खाते हैं वो (रोज़े क़ियामत) खड़े न हो सकेंगे मगर उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने (आसेब) से छूकर बंद हवास कर दिया हो ये इसलिये कि वो कहते थे कि तिजारत (ख़रीद फरोख़्त) भी तो सूद की मानिन्द है हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने तिजारत को हलाल फ़रमाया है और सूद को हराम किया है।
(सू०–बक़राह–2/275)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और जो कुछ भी सूद में से बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो अगर तुम ईमान रखते हो फिर अगर तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से ऐलाने जंग पर ख़बरदार हो जाओ और अगर तुम (सूद से) तौबा कर लो तो तुम्हारा असल सरमाया तुम्हारा हक़ है।
(सू०–बक़राह–2/278-279)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
जो कोई भी मेरी नसीहत से मुँह मोड़ेगा तो उसको बड़ी तंग ज़िन्दगी मिलेगी और क़यामत के दिन हम उसे अन्धा करके उठायेंगे।
(सू०–ताहा–20/124)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
ऐ ईमान वालो दो गुना और चार गुना करके सूद मत खाया करो और अल्लाह से डरा करो ताकि तुम फ़लाह पाओ और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिये तैयार की गई है।
(सू०–आले इमरान–3/130-131)

और तीसरा गिरोह जो अपनी क़ब्रों से इस हाल पर उठेंगे कि वो लोग बग़ैर हाथ और पाँव के होंगे और ये वो लोग होंगे जो अपने हम सायों (पड़ोसियों को) ईज़ा (तकलीफ़) देते हैं और इस हाल पर मरे कि तौबा न की पस ये उनकी सज़ा होगी और उनका ठिकाना जहन्नुम होगा।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :–
और (भलाई और एहसान करो) नज़दीकी हम साये और अजनबी पड़ोसी (के साथ)।
(सू०–निसा–4/36)

और चौथा गिरोह वो होगा जो अपनी क़ब्रों से चौपायों की सूरत में उठेगा और ये वो लोग होंगे जो नमाज़ में सुस्ती किया करते थे और फिर बिला तौबा मरे।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :–
पस खराबी है उन नमाज़ियों के लिये जो अपनी नमाज़ में सुस्ती करते हैं। (सू०–माऊन–107/6)

और पाँचवाँ गिरोह अपनी क़ब्रों से इस हाल में उठेगा कि उनके पेट पहाड़ों की मानिन्द होंगे और उनके पेटों में साँप और बिच्छू भरे होंगे और उनकी शक्लें खिंजीरों की तरह होंगी और ये वो लोग होंगे जो ज़कात नहीं देते थे और इस हाल पर मरे कि तौबा न की तो ये उनकी सज़ा होगी और उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :-
और जो लोग सोना और चाँदी जमाअ़ करते हैं और उसे राहे खुदा में ख़र्च नहीं करते तो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दो जिस दिन उस (सोने व चाँदी और माल) को दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा फिर उस (तपे हुये माल) से उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जायेंगी (और उनसे कहा जायेगा) कि ये वही (माल) है जो तुमने अपनी जानों के लिये जमाअ़ किया था सो तुम इस माल का मज़ा चखो जिसे तुम जमाअ़ करते रहे थे।
(सू०-तौबा-9/34-35)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
उस शख़्स के लिये बड़ी ख़राबी व तबाही है जो माल जमाअ़ करता है और उसे गिन गिन कर रखता है वो ये गुमान करता है कि उसकी दौलत उसे हमेशा ज़िन्दा रखेगी हरगिज़ नहीं उसको तो ज़रुर ऐसी जगह हुतमा (चौरा चौरा करने वाली-

आग) में फेंका जायेगा और तुम्हें क्या माअ़लूम कि हुतमा क्या है ये अल्लाह तआ़ाला की भड़काई हुई आग है जो दिलों पर चढ़ जायेगी बेशक वो आग उन लोगों पर हर तरफ़ से बन्द कर दी जायेगी जबकि वो (भड़कते शोअ़लों के) लम्बे चौड़े सुतूनों में घिरे हुये होंगे (और उन लोगों के लिये कोई राहे फ़रार न होगी)।
(सू०–हुमाज़ाह–104/2 ता 9)

छटवाँ गिरोह रोजे क़यामत क़ब्रों से इस हाल में उठाया जायेगा कि उनके मुँहों से खून बहता होगा और उनकी अंतड़ियाँ (आँतें) वग़ैराह गलकर गिर चुकी होंगी और ये वो लोग होंगे जो ख़रीद फ़रोख़्त मे झूठ बोलते थे और हराम व हलाल में इम्तियाज़ नहीं रखते थे और फिर इस हाल पर मरे कि तौबा न की तो उनकी ये सज़ा होगी व उनका ठिकाना नारे दोज़ख़ होगा

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ाला है :–
बेशक जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों का थोड़ी सी क़ीमत के बदले सौदा कर देते हैं यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कोई हिस्सा न होगा और रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ाला इनसे क़लाम नहीं फ़रमायेगा और न ही इनकी तरफ़ निगाह करेगा और न ही इन्हें पाकीज़गी देगा और इनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सू०–आले इमरान–3/77)

और सातवाँ गिरोह जो क़ब्रों से उठाया जायेगा उनसे मुर्दार से भी बदतर बू आती होगी और ये वो लोग होंगे जो लोगों से छुपकर गुनाह किया करते थे और फिर बिला तौबा मरे तो उनकी ये सज़ा होगी और उनका ठिकाना नारे दोज़ख़ होगा

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :–

और जो लोगों से छुपकर गुनाह करते हैं और अल्लाह से नहीं छुपते जबकि वो (अल्लाह) उनके साथ होता है जब वो रात को ऐसी बात के मुताअ़ल्लिक़ छुपकर मशवरा करते हैं जिसे अल्लाह तआ़ला नापसंद फ़रमाता है और जो कुछ वो करते हैं अल्लाह तआ़ला उसे इहाता किये हुये है। (सू०–निसा–4/108)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और अल्लाह से डरते रहो बेशक वो सीनो की (पोशीदा) बातों को खूब जानता है।
(सू०–मायदा–5/7)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि तुम सबको उसी के पास जमाअ़ किया जायेगा।
(सू०–बक़राह–2/203)

और आठवाँ गिरोह जो क़ब्रों से उठाया जायेगा वो इस हाल में उठेगा कि उनके हलक़ कटे हुये होंगे और ये वो लोग होंगे जो झूठी गवाही देते थे और इस हाल पर मरे कि तौबा न की तो उनकी ये सज़ा होगी और उनका ठिकाना नारे दोज़ख़ होगा।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :-
बेशक़ अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला सरासर झूठा हो। (सू०-मोमिन-40/28)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
सो तुम बुतों की पलीदी से बचा करो और झूठी बात से परहेज़ किया करो। (सू०-हज-22/30)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
यक़ीनन अल्लाह उस शख़्स को हिदायत नहीं देता जो झूठा है। (सू०-जुमर-39/3)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और जो लोग झूठी गवाही नहीं देते और जब किसी लग्व चीज़ पर उनका गुज़र होता है तो शराफ़त से गुज़र जाते हैं।
(सू०-फुरक़ान-25/72)

और नौ वाँ गिरोह जो इस तरह अपनी क़ब्रों से निकाले जायेंगे कि उनकी ज़बानें उनके मुँह में न होंगी और उनके मुँह से पीप निकलता होगा और ये वो लोग होंगे जो गवाही छुपाते होंगे और इस हाल पर मरे कि तौबा न की तो उनकी ये सज़ा होगी और उनका ठिकाना नारे दोज़ख़ होगा।

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो उस गवाही को छुपाये जो उसके पास अल्लाह की तरफ़ से है। (सू०-बक़राह-2/140)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और गवाहों को जब भी (गवाही के लिये) बुलाया जाये तो वो इन्कार न करे। (सू०-बक़राह-2/282)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और तुम गवाही को छुपाया न करो और जो शख़्स गवाही को छुपाता है तो यक़ीनन उसका दिल गुनाहगार है। (सू०-बक़राह-2/283)

और दसवाँ गिरोह जो अपनी क़ब्रों से उठाया जायेगा उनका हाल ये होगा कि उनके सर नीचे झुके हुये होंगे और उनके पाँव उनके सरों से ऊपर होंगे और उनकी शर्मगाहों से पीप और ज़र्द पानी की नहरें चलती होंगी और ये वो लोग होंगे जो दुनियाँ में ज़िनाकारी किया करते थे फिर

बिला तौबा के मरे तो उनकी ये सज़ा होगी और उनका ठिकाना जहन्नुम की आग होगी।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :–
और तुम ज़िना के क़रीब भी मत जाओ बेशक ये (बहुत बुरा) बे हयाई का काम है और बहुत ही बुरी राह है। (सू०–बनी इसराईल–17/32)

और ग्यारहवाँ गिरोह जो अपनी क़ब्रों से इस हाल पर उठाया जायेगा कि उनके चेहरे सियाह होंगे और उनके पेट आग से भरे होंगे और ये वो लोग होंगे जो यतीमों का ना हक़ माल खाते हैं फिर ये बिला तौबा के मरे तो ये उनका बदला होगा और उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :–
और जो लोग ना हक़ जुल्म से यतीमों का माल खाते हैं वो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और वो अ़नक़रीब दकहती हुई आग में डाले जायेंगे। (सू०–निसा–4/10)

और बारहवाँ गिरोह अपनी क़ब्रों से इस हाल में उठेगा कि वो बर्स व जुज़ाम (कोढ़) में मुब्तिला होंगे और ये वो लोग होंगे जो अपने वालिदैन के नाफ़रमान होंगे फिर ये बिला तौबा के मरे तो ये उनकी सज़ा होगी और उनका ठिकाना आतिशे दोज़ख़ होगा।

जैसा कि इरशादे बारी तअ़ाला है :-
और हमने इन्सान को वालिदैन के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म फ़रमाया है।
(सू०-अहक़ाफ़-46/15)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
और वालिदैन के साथ भलाई करो।
(सू०-निसा-4/36)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो।
(सू०-अनअ़ाम-6/151)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
और आपके रब ने हुक्म फ़रमां दिया है कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत न करो और अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक किया करो अगर तुम्हारे सामने दोनों या दोनों में से कोई एक बुढ़ापे को पहुँच जाये तो उन्हें उफ़ भी न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन दोनों के साथ बड़े अ़दब के साथ बात किया करो और उन दोनों के लिये नरम दिली से आ़जिज़ी व इन्किसारी के बाजू झुकाये रखो और अल्लाह के हुजूर अ़र्ज़ करते रहो कि ऐ मेरे रब इन दोनों पर रहम फ़रमां जैसा कि इन्होने बचपन में मुझे (रहमत व शफ़क़त से) पाला था।
(सू०-बनी इसराईल-17/23ता-25)

और तेरहवाँ गिरोह जो अपनी क़ब्रो से उठाया जायेगा तो उनका हाल ये होगा कि वो आँखों से अन्धे होंगे और उनके दाँत बैलों की मान्निद होंगे और उनके होंठ उनके सीनों पर लटक रहे होंगे और ये वो लोग होंगे जो दुनियाँ में शराब पीते थे फिर ये बिला तौबा के मरे तो ये उनकी सज़ा होगी और उनका ठिकाना आतिशे दोज़ख़ होगा।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :–
ऐ ईमान वालो बेशक शराब और जुआ और नसब किये गये बुत और फ़ाल के तीर ये सब नापाक व शैतानी काम हैं सो तुम इनसे परहेज़ किया करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।
(सू०–मायदा–5/90)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
आपसे शराब और जुऐ की निसबत सवाल करते हैं तो आप फ़रमां दें इन दोनों में बड़ा गुनाह है।
(सू०–बक़राह–2/219)

और चौदहवाँ गिरोह जो अपनी क़ब्रों से इस हाल में उठेगा कि उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकते होंगे और वो पुल–सिरात से इस तरह गुज़र जायेंगे जैसे चुंधया देने वाली बिजली गुज़रती है और ये वो लोग होंगे जो दुनियाँ में अल्लाह व रसूल की फ़रमा बरदारी किया करते और नेक अ़मल करते थे और नमाज़

पढ़ते थे और रोज़ा रखते थे व अहकामे शरीअ़त पर अ़मल पैरा थे और ये नेकी की दावत देते थे और बुराई से मना करते थे फिर ये तौबा करते मरे तो ये उनकी जज़ा होगी और उनका ठिकाना जन्नत होगा और अल्लाह की रहमत व बख़्शिश और रज़ा के साथ पस अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :-
उनकी जज़ा उनके रब के हुज़ूर दायमी रिहायश के बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें र'वाँ हैं वो उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी हो गया है और वो लोग उस (अल्लाह) से राज़ी हो गये। (सू०-बय्यिना-98/8)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
बेशक जिन लोगों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर वो (उस पर मज़बूती से) क़ायम रहे तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं (और कहते हैं) कि तुम ख़ौफ़ न करो और न ग़म करो और तुम जन्नत की खुशियाँ मनाओ जिसका तुमसे वाअ़दा किया जाता था। (सू०-फुस्सिलत/हा मीम सज्दा-41/30)

-: पुलसिरात का बयान :-

पुलसिरात जहन्नुम की पुश्त पर है जिसके नीचे जहन्नुम होगी जिसमें शोअ़ले मारती हुई आग होगी जो कि फिसलने और गिरने की जगह है और लोग फिसल फिसल कर उसमें गिर रहे होंगे अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सात पुल पैदा किये हैं और हर पुल पर तीन हज़ार साल तक चलने का रास्ता है इसमें एक हज़ार साल तक चढ़ाई है और एक हज़ार साल तक उतराई है और एक हज़ार साल तक हमवार राह होगी और वो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ होगी और रात से ज़्यादा तारीक होगी उस पर नेज़ों की नोक से भी ज़्यादा तेज़ लम्बी लम्बी शाखें होंगी

अल्लाह तबारक व तआ़ला के हुक्म से पुल पर आने वाले लोगों को रोककर उनसे सवाल किया जायेगा सबसे पहले उसके ईमान के बारे में सवाल किया जायेगा अगर वो दुनियाँ में कुफ़्र व रिया से बचा रहा तो अल्लाह तआ़ला उसे निजात देगा वरना वो दोज़ख़ में गिर जायेगा और उससे दूसरा सवाल नमाज़ का होगा और तीसरा सवाल ज़कात का और चौथा सवाल रोज़े का और पाचवाँ सवाल हज का और छटा सवाल वालिदैन से नेकी और सिला रहमी का होगा पस-

अगर वो मज़कूरा सवालात में कामयाब हुआ तो अल्लाह तआ़ाला उसे बख़्श देगा और वो फ़लाह पा जायेगा वरना वो दोज़ख़ में गिर जायेगा पस पुलसिरात से तमाम मख़्लूक़ को गुज़रना होगा।

पस पहला गिरोह जो पुलसिरात से गुज़रेगा वो चमकती हुई बिजली की तरह गुज़र जायेगा और दूसरा गिरोह तेज़ आँधी की तरह गुज़रेगा और तीसरा गिरोह तेज़ उड़ने वाले परिन्दों की तरह और चौथा गिरोह तेज़ रफ़्तार घोड़े की तरह और पांचवाँ गिरोह तेज़ चलने वाले आदमी की तरह और छटा गिरोह दरमियाना रफ़्तार चलने वाले की तरह और सातवाँ तेज़ चलने वाले ऊँटों की तरह और आठवाँ गिरोह हामला औ़रत की रफ़्तार की मान्निद और नवाँ गिरोह घुटनों के बल और दसवाँ गिरोह सुरीन के बल घसिटते हुये गुज़रेगा बाअ़ज़ लोग सवारियों पर गुज़रेंगे और बाअ़ज़ लोग गुज़रने की ताक़त न पायेंगे तो उनमें से बाअ़ज एक माह की मुद्दत में गुज़रेंगे और बाअ़ज़ एक साल और बाअ़ज़ दो साल और तीन साल की मुद्दत में गुज़रेंगे और ऐसे ही मुद्दत बढ़ते बढ़ते यहाँ तक होगी कि सबसे आख़िर में गुज़रने वाला शख़्स पुलसिरात से पच्चीस साल के अ़रसे में गुज़र पायेगा।

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया– पुलसिरात को दोज़ख़ के दोनों किनारों पर रखा जायेगा उस पर तेज़ नोकदार काँटे होंगे फिर लोग उस पर गुज़रना शुरु होंगे पस बाअ़ज़ लोग बिजली की तरह गुज़र जायेंगे और बाअ़ज़ हवा की तरह और बाअ़ज़ पैदल चलने वालों की तरह गुज़रेंगे और उनमें से बाअ़ज़ लोगों के कुछ आज़ा (अंग) कटकर दोज़ख़ में गिरेंगे और बाअ़ज़ निजात पा जायेंगे और बाअ़ज़ उसी पर अटके रहेंगे और बाअ़ज़ लोग ओंधें मुँह जहन्नुम में गिरेंगे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/396-ह०–4280)

➡ ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे पहले पुलसिरात से गुज़रने की इजाज़त फुक़रा व मुहाजिरीन को मिलेगी। (मुस्लिम–सही–1/417-ह०–716)
(इब्ने हिब्बान–सही–8/556-ह०–7422)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि उन्होने दोज़ख़ का ज़िक्र किया और रोने लगी तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने पूछा कि ऐ आयशा तुझे किस चीज़ ने रुलाया है तो वो कहने लगीं कि मुझे दोज़ख़ की याद आ गयी इसलिये मैं रोने लगी हूँ तो हज़रत आयशा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या आप क़यामत के दिन अपने घर वालों को याद रखेंगे तो आप–

(सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत तीन मक़ामात ऐसे हैं जहाँ कोई किसी को याद नहीं रखेगा पहला मक़ाम मीज़ान (तराज़ू) के पास यहाँ तक कि उसे माअ़लूम हो जाये कि उसकी तौल हल्की है या भारी है और दूसरा मक़ाम नामा ए आअ़माल मिलने का वक़्त है कि जब कहा जायेगा कि आओ अपने अपने आअ़माल नामा पढ़ो यहाँ तक कि इन्सान जान ले कि उसका आअ़माल नामा उसके दाँये हाथ में आता है या बाँये हाथ में या क़मर के पीछे से और तीसरा मक़ाम पुलसिरात है जब उसे दोज़ख़ के ऊपर रखा जायेगा।
(अबू दाऊद–सुनन–6/608-ह०–4755)

और बेशक लोग पुलसिरात पर चलेंगे और आग उनके कदमों के नीचे और सरों के ऊपर और दाँये और बाँयें और आगे और पीछे होगी।

जैसा कि इरशादे बारी तअ़ाला है :–
और तुम में से कोई शख़्स ऐसा नहीं कि जिसका गुज़र दोज़ख़ के ऊपर से न हो ये वाअ़दा क़तई तौर पर आपके रब के ज़िम्मे है जो ज़रुर पूरा होकर रहेगा फिर हम परहेज़गारों को निजात देंगे और ज़ालिमों को उसमें घुटनों के बल गिरा देंगे।
(सू०–मरयम–19/71–72)

और आग उनकी अंतड़ियाँ और खालें जला देगी और उनके जिस्मों व खालों और गोश्तों में ये असर पैदा करेगी कि वो कोयले के मान्निद हो जायेंगे फिर उन्हें वैसा ही बना दिया जायेगा और उन पर इसी तरह से अ़ज़ाब होता रहेगा कि नये अजसाम बनते रहेंगे और उन पर मुसलसल सख़्त अ़ज़ाब होता रहेगा।

पुलसिरात से कुछ लोग अल्लाह की रहमत और उसके फ़ज़्ल के सबब बा आसानी और बिला मशक़्क़तो तकलीफ़ के गुज़र जायेंगे पुलसिरात उबूर करने के लिये एक गिरोह आयेगा तो वो पुलसिरात पर ठहर जायेंगे और कहेंगे कि हम तो आग से बहुत डरते हैं पस इस पुलसिरात से कैसे गुज़रें फिर जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) उन लोगों से कहेंगे कि दुनियाँ में तुम दरियाओं से कैसे गुज़रते थे तो वो कहेंगे कि हम दुनियाँ में कश्तियों पर सवार होकर दरियाओं को उबूर करते थे पस मलाइका उन मसाजिद को कश्तियों की सूरत में लायेंगे जिनमें वो नमाज़ पढ़ा करते थे तो वो उन कश्तियों में सवार होकर पुलसिरात से गुज़र जायेंगे और मुअ़ज़्ज़िन उन कश्तियों की लगामें थामें होंगे और मसाजिद के आइम्मा उन कश्तियों को चलायेंगे उन्हें देखकर लोग कहेंगे कि ये कोई मलाइका मुक़र्रबीन हैं या अम्बिया किराम हैं तो एक निदा देने वाला कहेगा ये वो लोग हैं जो नमाज़े पंजगाना बा जमाअ़त क़ायम रखते थे।

आअ़्माल नामे दिये जाने का बयान

(फ़रिश्तों का बन्दों के आअ़्माल लिखना)

हर इन्सान के अच्छे व बुरे आअ़्माल लिखने के लिये किरामत कातिबीन फ़रिश्ते उसके दायें और बायें काँधे पर होते हैं और एक रिवायत में है कि हर इन्सान के साथ पाँच फ़रिश्ते होते हैं दो फ़रिश्ते दिन को और दो फ़रिश्ते रात को और एक फ़रिश्ता तमाम वक़्तों में से किसी भी वक़्त उससे जुदा नहीं होता जब बन्दा बैठ जाये तो एक उनमें से एक उसकी दाँयी जानिब बैठता है और दूसरा उसके बाँयी जानिब बैठता है और जब बन्दा चलता है तो उनमें से एक उसके आगे चलता है और दूसरा उसके पीछे चलता है और जब बन्दा सोता है तो उन दोनों में से एक फ़रिश्ता उस बन्दे के सर के पास होता है और दूसरा फ़रिश्ता उसके क़दमों के पास होता है।

जैसा कि इरशादे बारी तअ़ाला है–
हर इन्सान के लिये यके बाद दीगर आने वाले (फ़रिश्ते) हैं जो उसके आगे और उसके पीछे अल्लाह के हुक्म से उसकी निगेहबानी करते हैं। (इस आयते करीमा से मुराद रात और दिन के फ़रिश्ते हैं) (सू०–राअ़द–13/11)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

जब दो लेने वाले (फ़रिश्ते उस के हर क़ौल व फ़ेअ़्ल को तहरीर में) ले लेते हैं जो दाँयी तरफ़ और बाँयी तरफ़ बैठे हुये हैं वो मुँह से कोई बात नहीं कहने पाता मगर उसके पास एक निगेहबान (लिखने के लिये) तैयार रहता है।
(सू०–क़ाफ़–50/17,18)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

हालाँकि तुम पर निगेहबान फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो बहुत मुअ़ज़्ज़ज़ हैं (तुम्हारे आअ़्माल नामे) लिखने वाले हैं वो उन (तमाम कामों) को जानते हैं जो तुम करते हो। (सू०–इन्फ़ितार–82/10 ता 12)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते उनके पास लिख रहे होते है। (जुख़रुफ़–43/80)

आअ़्माल नामे गले में लटका दिये जाते

पूरे साल के आअ़्माल नामे शबे बरात की रात में अल्लाह तबारक व तआ़ला के हुजूर पेश होते हैं और हर आअ़्माल नामे को ख़त में सर मुहर कर दिया जाता है तो तमाम खुतूत बाअ़ज़ से बाअ़ज़ मिलाकर जमाअ़ कर दिये जाते हैं फिर जब उसकी रुह निकलती है तो उसका आअ़्माल नामा लपेट कर मुहर कर दिया जाता है और–

उसकी गर्दन से लटका दिया जाता है और उसके साथ ही उसे उसकी क़ब्र में रख दिया जाता है।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :-
और हर एक का आअ़माल नामा हमने उसकी गर्दन में पैवस्त कर दिया है यानी उसके आअ़माल नामे को उसके गले का क़लाबा बना दिया है और हम उसके लिये क़यामत के दिन ये आअ़माल नामा निकालेंगे जिसे वो अपने सामने खुला हुआ पायेगा (और उससे कहा जायेगा) कि अपनी किताबे (आअ़माल) पढ़ ले आज तू अपना हिसाब जाँचने के लिये खुद ही काफ़ी है।
(सू०-बनी इसराईल-17/13,14)

-: दायें हाथ में आअ़माल नामे दिये जाने का बयान :-

अल्लाह तबारक व तआ़ला जिससे आसान हिसाब लेगा तो उस पर वो गज़बनाक न होगा और अल्लाह उसकी बुराईयाँ उसके आअ़माल नामे से दूर कर देगा और उसकी नेकियाँ उसके आअ़माल नामे पर ज़ाहिर फ़रमां देगा और उसके सर पर एक ताज रखा जायेगा और उसे जन्नती लिबास अ़ता किया जायेगा जिसे वो ज़ैबे तन करेगा और उसको तीन जोड़े कंघन अ़ता किये जायेंगे जिसमें एक जोड़ा सोने का होगा और एक चाँदी का और एक मोतियों से जड़ा हुआ होगा-

फिर वो अपने मोमिनीन भाइयों के पास आयेगा तो वो लोग उसके जमाल व कमाल के बाइस उसे पहचान न सकेंगे और उसका आअ़माल नामा उसके दाँये हाथ में होगा और उस आअ़माल नामे में सिर्फ़ नेकियाँ ही नेकियाँ होंगी फिर वो लोगों से कहेगा क्या तुम लोग मुझे पहचानते हो मैं फुलां बिन फुलां हूँ तहक़ीक़ अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने इकराम बख़्शा और मुझे आग से बरी किया और जन्नत में मुझे हमेशगी दी।

जैसा कि इरशादे बारी तअ़ाला है :-

जब (सब) आसमानी कुर्रे फट जायेंगे और अपने रब का हुक्म (इन्शिक़ाक़) बजा लायेंगे और (यही ताअ़मीले अम्र) उसके लायक़ है और जब ज़मीन (रेज़ा-रेज़ा करके) फैला दी जायेगी और जो कुछ उसके अन्दर है वो उसे बाहर निकाल फेंकेगी और खाली हो जायेगी और (वो भी) अपने रब का हुक्मे (इन्शिक़ाक़) बजा लायेगी और (यही इताअ़त) उसके लायक़ है ऐ इन्सान तू अपने रब तक पहुँचने में सख़्त मशक़्क़त बर्दाश्त करता है बिल आख़िर तुझे उसी से जा मिलना है पस जिस शख़्स का नामा ए आअ़माल उसके दाँहिने हाथ में दिया जायेगा तो अ़नक़रीब उससे आसान सा हिसाब लिया जायेगा और वो अपने अहले ख़ाना की तरफ़ मसरुर (खुश) व शादाँ पलटेगा। (सू०-इन्शिक़ाक़-84/1 ता 9)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

जिस दिन वो तुम्हें जमाअ़ होने के दिन (यानी मैदाने हश्र में) इकट्ठा करेगा ये हार व जीत और नुकसान उठाने का दिन है और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है व नेक अ़मल करता है तो अल्लाह उस (के आअ़माल नामे) से उसकी ख़तायें मिटा देगा और उसे जन्नतों में दाख़िल फ़रमायेगा जिनके नीचे से नहरें बह रही हैं वो उनमें हमेशा रहेंगे ये बहुत बड़ी कामयाबी है।
(सू०-तग़ाबुन-64/9-10)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

वो दिन (याद करें) जब हम लोगों के हर तबके को उनके पेशवा के साथ बुलायेंगे सो जिसे उसका आअ़माल नामा उसके दाँहिने हाथ में दिया जायेगा तो वो अपना आअ़माल नामा (मसर्रतो शादमानी से) पढ़ेंगे और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म न होगा।
(सू०-बनी इसराईल-17/71)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

सो जो शख़्स ईमान ले आया और (अ़मलन) दुरस्त हो गया तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न ही वो ग़मगीन होंगे।
(सू०-अनआ़म-6/48)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

उस दिन तुम (हिसाब के लिये) पेश किये जाओगे (और) तुम्हारी कोई पोशीदा बात छुपी न रहेगी सो वो शख़्स जिसका आअ़माल नामा दाँये हाथ में दिया जायेगा तो वो (खुशी से) कहेगा आओ मेरा आअ़माल नामा पढ़ लो मैं तो यक़ीन रखता था कि मैं अपने हिसाब को (आसान) पाने वाला हूँ सो वो पसंदीदा ज़िन्दगी बसर करेगा बुलन्द व बाला जन्नत में जिसके ख़ोशे (फलों की कसरत के बाइस) झुके हुये होंगे (उनसे कहा जायेगा) खूब लुत्फ़ अंदोज़ी के साथ खाओ और पियो उन (आअ़माल) के बदले में जो तुम गुज़िश्ता (ज़िन्दगी के) अय्याम में आगे भेज चुके थे।
(सू०–हाक़्क़ाह–69/18 ता 24)

–: क़यामत में तीन बार पेश होना :–

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोग क़यामत के दिन तीन बार पेश किये जायेंगे दो पेशियों में तकरार और उज़्रात होंगे (यानी गुफ़्तगू व माअ़ज़िरत) और आख़िर तीसरी पेशी में किताबें (आअ़माल नामे) उड़कर हाथों में आ जायेंगे किसी के दाहिने हाथ में और किसी के बाँये हाथ में। (इब्ने माजा–सुनन–3/396-ह०–4277) (तिर्मिज़ी–सुनन–2/248-ह०–2425)

बायें हाथ व पीठ के पीछे से आअ़माल नामा दिये जाने का बयान

जिसको आअ़माल नामा बाँये हाथ में दिया जायेगा तो उसके लिये हलाकत व सख़्त अ़ज़ाब है और काफ़िरों के सर पर आग की टोपी रखी जायेगी और उन्हें आग से पिघले हुये ताँबे का लिबास पहनाया जायेगा और उनके हाथ उनकी गर्दनों से जकड़े होंगे और उनके चेहरे सियाह होगें पस जब काफ़िर अपनी कुफ़्फ़ार क़ौम के पास आयेगा तो वो उसे देखकर डर जायेंगे और दूर भागेंगे और उसको पहचान न सकेंगे हत्ता कि वो कहेगा मैं फुलां बिन फुलां हूँ फिर मलायका उसे घसीटते हुये दोज़ख़ की तरफ़ ले जायेंगे ये हाल कुफ़्फ़ारों का होगा व कुफ़्फ़ार अपना आअ़माल नामा बाँये हाथ से भी न ले सकेंगे बल्कि पीठ के पीछे से लेंगे।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :-

जिसका नामा ए आअ़माल उसकी पीठ के पीछे से दिया जायेगा तो अ़नक़रीब वो मौत को पुकारेगा और वो दोज़ख़ की भड़कती हुई आग में दाख़िल होगा बेशक वो (दुनियाँ में) अपने अहले ख़ाना में खुश व खुर्रम रहता था बेशक उसने ये गुमान कर लिया था कि वो हिसाब के लिये (अल्लाह के पास) हरगिज़ लौटकर न जायेगा क्यों नहीं बेशक उसका रब उसको खूब देखने वाला है।

(सू०-इन्शिक़ाक़्-84/10ता-15)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और जो शख़्स इस (दुनियाँ) में (हक़ से) अन्धा रहा सो वो आख़िरत में भी अन्धा और राहे (निजात) से भटका रहेगा।
(सू०-बनी इसराईल-17/72)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया सो वही लोग दोज़ख़ी हैं जो उसमें हमेशा रहने वाले हैं और वो क्या ही बुरा ठिकाना है। (सू०-तग़ाबुन-64/10)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और जिस शख़्स का नामा ए आअ़माल उसके बाँयें हाथ में दिया जायेगा तो वो कहेगा हाय काश मुझे मेरा आअ़माल नामा न दिया गया होता और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है हाय काश वो (मौत) ही काम तमाम कर चुकी होती (आज) मेरा माल मुझसे (अ़ज़ाब को) कुछ भी दूर न कर सका मुझसे मेरी कुव्वत व सल्तनत भी जाती रही (हुक्म होगा) इसे पकड़ लो और इसे तौक़ पहना दो फिर इसे दोज़ख़ में झोंक दो फिर एक ज़ंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ है इसे जकड़ दो बेशक़ ये बड़ी अ़ज़मत वाले अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था और न मुहताज को खाना खिलाने पर रग़बत दिलाता था सो आज के दिन न उसका कोई गरम जोश दोस्त है और न पीप के सिवा-

(उसके लिये) कोई खाना है जिसे गुनाहगरों के सिवा कोई न खायेगा (सू०–हाक़्क़ाह–69/25 ता 37)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उन्हें अ़ज़ाब छूकर रहेगा इस वजह से कि वो ना फ़रमानी किया करते थे। (सू०–अनआ़म–6/49)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और (हर एक के सामने) आअ़माल नामा रख दिया जायेगा सो आप मुजरिमों को देखेंगे (वो) उन (गुनाहों और जुर्मों) से ख़ौफ़ ज़दा होंगे जो उस (आअ़माल नामे) में दर्ज होंगे और कहेंगे हाय हलाकत है इस आअ़माल नामे को क्या हुआ है इसने न कोई छोटी (बात) छोड़ी है और न कोई बड़ी (बात) मगर इसने (हर हर बात को) शुमार कर लिया है जो कुछ वो करते रहे थे (अपने सामने) हाज़िर पायेंगे और आपका रब किसी पर ज़ुल्म न फ़रमायेगा (सू०–कह्फ़–18/49)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और आप देखेंगे (कुफ़्फ़ार व मुन्किरीन का) हर गिरोह घुटनों के बल गिरा हुआ बैठा होगा हर फ़िरक़े को उस (के आअ़माल) की किताब की तरफ़ बुलाया जायेगा आज तुम्हें उन आअ़माल का बदला दिया जायेगा जो तुम किया करते थे ये हमारा (लिखवाया हुआ) दफ़्तर है जो तुम्हारे बारे

में सच सच बयान करेगा बेशक हम वो सब कुछ लिखवा (कर महफ़ूज़ कर) लिया करते थे जो तुम किया करते थे तो जो लोग ईमान लाये और नेक आअ़माल करते रहे तो उनका रब उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमां लेगा यही तो वाज़ेह कामयाबी है और जिन लोगों ने कुफ़्र किया (उनसे कहा जायेगा) क्या मेरी आयतें तुम पर पढ़ पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थीं पस तुमने तकब्बुर किया और तुम मुजरिम लोग थे और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वाअ़दा सच्चा है और क़यामत (के आने) में कोई शक नहीं है तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते क़यामत क्या है हम उसे वहम व गुमान के सिवा कुछ नहीं समझते हैं और हम (इस पर) यक़ीन करने वाले नहीं हैं और उनके लिये वो सब बुराईयाँ ज़ाहिर हो जायेंगी जो वो अन्जाम देते थे और वो (अ़ज़ाब) उन्हें घेर लेगा जिसका वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे और (उनसे) कहा जायेगा आज हम तुम्हें भुला देते हैं जिस तरह तुमने अपने इस दिन की पेशी को भुला दिया था और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है और तुम्हारे लिये कोई मददगार न होगा ये इस वजह से है कि तुमने अल्लाह की आयतों को मज़ाक़ बना रखा था और दुन्यावी ज़िन्दगी ने तुम्हें धोके में डाल दिया था सो आज न तो वो उस (दोज़ख़) से निकाले जायेंगे और न उनसे तौबा के ज़रिये (अल्लाह की) रज़ा जोई कुबूल की जायेगी। (सू०-जासिया-45/ 28 ता 35)

–: रोज़े क़यामत दोबारा ज़िन्दा करके उठाया जाना हक़ है :–

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
और बाँयी जानिब वाले क्या (ही बुरे लोग) हैं बाँयी जानिब वाले जो दोज़ख़ की सख़्त गरम हवा और खौलते हुये पानी में और सियाह धुंऐ के साये में होंगे जो कभी न ठण्डा होगा और न ही फ़रहत बख़्श होगा बेशक (अहले दोज़ख़) वो इससे पहले (दुनियाँ में) खुशहाल रह चुके थे और वो गुनाहे अ़ज़ीम (यानी कुफ़्र व शिर्क) पर इसरार किया करते थे और कहा करते थे कि क्या जब हम मरकर मिट्टी हो जायेंगे और बोसीदा हड्डियाँ हो जायेंगे तो क्या हम (फिर ज़िन्दा करके) उठाये जायेंगे और क्या हमारे बाप दादा भी (ज़िन्दा किये जायेंगे) आप फ़रमां दें बेशक अगले और पिछले (सब के सब) एक मुअ़य्यन दिन के मुक़र्रराह वक़्त पर जमाअ़ किये जायेंगे फिर बेशक तुम लोग ऐ गुमराहो झुठलाने वालो तुम ज़रुर काँटेदार (थोहड़ के) दरख़्त से खाओगे और उससे अपने पेट भरोगे फिर उस पर सख़्त खौलता पानी पियोगे और तुम सख़्त प्यासे ऊँट के पीने की तरह पिओगे ये क़यामत के दिन उनकी ज़ियाफत (मेहमानी) होगी हम ही ने तुम्हें पैदा किया था फिर तुम (दोबारा पैदा किये जाने की) तसदीक़ क्यों नहीं करते भला ये

तो बताओ जो नुत्फ़ा तुम (रहम में) टपकाते हो तो क्या उससे इन्सान को तुम पैदा करते हो या हम पैदा करते हैं हम ही ने तुम्हारे दरमियान मौत को मुक़र्रर फ़रमाया और हम (इसके बाद फिर ज़िन्दा करने से) आ़जिज़ नहीं हैं और इस बात से (भी आ़जिज़ नहीं हैं) कि तुम्हारे जैसे औरों को बदल कर बना दें और तुम्हें ऐसी सूरत में पैदा कर दें जिसे तुम जानते भी न हो बेशक तुमने अपनी पैदाइश (की हक़ीक़त) माअ़लूम कर ली फिर भी तुम नसीहत क्यों नहीं लेते।
(सू०–वाक़िआ़–56/41 ता 62)

इरशादे बारी तआ़ाला है :–
और कहते हैं कि जब हम (मर कर बोसीदा) हड्डियाँ और रेज़ा–रेज़ा हो जायेंगे तो क्या हमें नये सिरे से पैदा करके उठाया जायेगा फ़रमां दीजिये तुम पत्थर हो जाओ या लोहा या कोई ऐसी मख़्लूक़ जो तुम्हारे ख़्याल में (उसका ज़िन्दा होना इन चीज़ों से भी मुश्किल) हो (कि उसमें ज़िन्दगी पाने की बिल्कुल सलाहियत ही न हो) फिर वो कहेंगे कि कौन हमें दोबारा ज़िन्दा करेगा फ़रमां दीजिये जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया था फिर वो (तआज्जुब और तमस्ख़ुर के तौर पर) आपके सामने अपने सर हिला देंगे और कहेंगे ये कब होगा फ़रमां दीजिये उम्मीद है जल्द ही हो जायेगा। (सू०–बनी इसराईल–17/49ता–51)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

बर्बादी है तेरी हाँ बर्बादी है तेरी फिर सुन ले बर्बादी है तेरी हाँ बर्बादी है तेरी क्या इन्सान ये समझता है कि उसे यूँ ही (बग़ैर हिसाबो किताब) के छोड़ दिया जायेगा क्या वो (अपनी इब्तिदा में) मनी का एक क़तरा न था जो (औ़रत के रहम में) टपका दिया जाता है फिर वो (रहम में जाल की तरह जमा हुआ) एक मुअ़ल्लक़ वुजूद बन गया फिर उसने पैदा फ़रमाया फिर उसने (उन्हें) दुरस्त किया फिर ये कि उसने उसी नुत्फ़ा ही के ज़रिये दो क़िस्में बनाई मर्द और औ़रत तो क्या वो इस बात पर क़ादिर नहीं है कि वो मुर्दों को फिर से ज़िन्दा करे।

(सू०–क़ियामह–75/34 ता 40)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

उस दिन हम सारी समावी कायनात को इस तरह लपेट देंगे जैसे लिखे हुये कागज़ को लपेट दिया जाता है जिस तरह हमने (कायनात को) पहली बार पैदा किया था हम (उसके ख़त्म हो जाने के बाद) उसी अ़मले तख़लीक़ को दोहरायेंगे ये वाअ़दा पूरा करना हमने लाज़िम कर लिया है (और) हम ये ज़रुर करने वाले हैं।

(सू०–अम्बिया–21/104)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
(ज़मीन की) इसी (मिट्टी) से हमने तुम्हें पैदा किया और इसी में हम तुम्हें लौटायेंगे और इसी से हम तुम्हें दूसरी मर्तबा फिर निकालेंगे।
(सू०-ताहा-20/54)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
तुम किस तरह अल्लाह का इन्कार करते हो हालाँकि तुम बेजान थे उसने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी फिर तुम्हें मौत से हम किनार करेगा और फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे (सू०-बक़राह-2/28)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
मैं क़सम खाता हूँ रोज़े क़यामत की और मैं क़सम खाता हूँ (बुराईयों पर) मलामत करने वाले नफ़्स की क्या इन्सान ये ख़्याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को (जो मरने के बाद रेज़ा-रेज़ा होकर बिखर जायेंगी) हरगिज़ इकट्ठा न करेंगे क्यों नहीं हम तो इस बात पर भी क़ादिर हैं कि उसकी उँगलियों के एक एक जोड़ और पोरों तक को दुरस्त कर दें इन्सान ये चाहता है कि अपने आगे (की ज़िन्दगी में) भी गुनाह करता रहे वो पूछता है कि क़यामत का दिन कब होगा फिर जब आँखें चुधियाँ जायेंगी और चाँद अपनी रौशनी खो देगा और सूरज और चाँद इकट्ठे (बे नूर) हो जायेंगे उस वक़्त इन्सान पुकार उठेगा कि

(यहाँ से) भाग जाने का ठिकाना कहाँ है हरगिज़ नहीं कोई जाए पनाह नहीं है (और) उस दिन आपके रब ही के पास क़रार होगा (और) उस दिन इन्सान उन (आअ़माल) से ख़बरदार किया जायेगा जो उसने आगे भेजे थे और जो पीछे छोड़े थे बल्कि इन्सान अपने (अहवाले) नफ़्स पर (खुद ही) वाक़िफ़ होगा चाहे वो कितने ही बहाने बनाये। (सू०–क़ियामाह–75/1 ता 15)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

वो जानदार को बेजान से निकालता है और बेजान को जानदार से निकालता है और वो ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद (फिर) ज़िन्दा व शादाब फ़रमाता है और तुम भी इसी तरह (क़ब्रों से) निकाले जाओगे।
(सू०–रुम–30/19)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और इन्सान कहता है क्या जब मैं मर जाऊँगा तो अ़नक़रीब ज़िन्दा करके निकाला जाऊँगा क्या इन्सान ये बात याद नहीं करता कि हमने इससे पहले भी उसे पैदा किया था जबकि वो कोई चीज़ ही न था पस आपके रब की क़सम हम उनको और (जुमला) शैतानों को (रोज़े क़यामत) ज़रुर जमाअ़ करेंगे फिर हम उन (सब) को दोज़ख के गिर्द ज़रुर हाज़िर करेंगे इस तरह कि वो घुटनों के बल गिरे पड़े होंगे फिर हम हर गिरोह से ऐसे

शख़्स को ज़रुर चुनकर निकाल लेंगे जो उनमें से (खुदाये) रहमान पर सबसे ज़्यादा ना फ़रमान व सरकश होगा फिर हम उन लोगों को खूब जानते हैं जो दोज़ख़ में झोंके जाने के ज़्यादा सज़ावार हैं (सू०-मरयम-19/66 ता 70)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और ये कहते रहे कि क्या जब हम (मरकर बोसीदा) हड्डियाँ और रेज़ा-रेज़ा हो जायेंगे तो क्या हमें फिर भी नये सिरे से ज़िन्दा करके उठाया जायेगा क्या उन्होंने नहीं देखा जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया है वो इस बात पर भी क़ादिर है कि वो उन लोगों की मिस्ल दोबारा पैदा फ़रमां दे और उसने उनके लिये एक वक़्त मुक़र्रर फ़रमां दिया है जिसमें कोई शक नहीं।
(सू०-बनी इसराईल-17/98-99)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

(कुफ़्फ़ार) कहते हैं क्या हम पहली वाली हालत पर लौटाये जायेंगे क्या उस वक़्त जब हम बोसीदा हड्डियों में तब्दील हो चुके होंगे (तब भी ज़िन्दा किये जायेंगे) वो कहते हैं कि अगर ऐसा हुआ तो ये बड़े घाटे की वापसी होगी फिर तो ये एक ही बार शदीद हैबत नाक आवाज़ के साथ (कायनात के तमाम अजराम का) फट जाना होगा

फिर वो (सब लोग) यकायक खुले मैदाने (हश्र) में आ मौजूद होंगे। (सू०–नाज़िअ़ात–79/10 ता 14)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–

या इसी तरह उस शख़्स को (नहीं देखा) जो एक बस्ती पर से गुज़रा जो अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी तो उसने कहा कि अल्लाह इसकी मौत के बाद इसे कैसे ज़िन्दा फ़रमायेगा सो (अपनी कुदरत का मुशाहदा कराने के लिये) अल्लाह तअ़ाला ने उसे सौ बरस तक मुर्दा रखा फिर उसे ज़िन्दा किया फिर पूछा तू यहाँ (मरने के बाद) कितनी देर ठहरा रहा उसने कहा मैं एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा ठहरा हूँ फ़रमाया (नहीं) बल्कि तू सौ बरस तक पड़ा रहा है पस अब तू अपने खाने और पीने (की चीज़ों) को देख (वो) मुतग़य्यर (बासी) भी नहीं हुईं हैं और अब अपने गधे की तरफ़ नज़र कर (जिसकी हड्डियाँ भी सलामत नहीं रहीं) और ये इसलिये कि हम तुझे लोगों के लिये (अपनी कुदरत की) निशानी बना दें और अब उन हड्डियों की तरफ़ देख हम उन्हें कैसे हरकत देते (और उठाते) हैं फिर उन्हें गोश्त (का लिबास) पहनाते हैं जब ये (मुअ़ामला) उस पर खूब आशकार हो गया तो वो बोल उठा मैं जान गया हूँ कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है। (सू०–बक़राह–2/259)

:– रोज़े हश्र लोगों के अहवाल :–

मैदाने हश्र में तमाम मख़्लूक़ इन्सान व जिन्न, जानवर, व परिन्दे सब जमाअ़ होंगे और सूरज उनके बहुत ज़्यादा क़रीब होगा जिसकी शिद्दत के सबब लोगों के दिमाग़ खौलते होंगे व जुबानें सख़्त प्यास की वजह से खिंच रही होंगी और लोगों के दिल ख़ौफ़ से बैठ रहे होंगे और हर बाल के नीचे से पसीना बह रहा होगा यहाँ तक कि वो पसीना ज़मीन पर जारी हो जायेगा और बाअ़ज़ का पसीना उनके घुटनों तक बाअ़ज़ का पसीना उसकी सुरीन तक और बाअ़ज़ का पसीना उसकी कानों की लौ तक और बाअ़ज़ लोग उस पसीने में डूबने के क़रीब होंगे और लोग चालीस साल तक टकटकी बाँधे खड़े रहेंगे इस दरमियान में किसी का हिसाबो किताब न होगा और न मीज़ान क़ायम होगा और लोग ख़ौफ ज़दा परेशान हाल खड़े होंगे और मुन्तज़िर होंगे कि अल्लाह तअ़ाला लोगों का हिसाबो किताब शुरु करे और वो पचास हज़ार साल का एक दिन होगा जिसमें तमाम मख़्लूक़ का हिसाबो किताब होगा।

इरशादे बारी तअ़ाला है :–

फ़रिश्ते और रुहुल अमीन उस (के अ़र्श) की तरफ़ चढ़ेंगे एक ऐसे दिन में जिसकी मिक़दार पचास हज़ार साल है। (सू०–मअ़ारिज–70/4)

सूरज क़रीब और ज़मीन हमवार होगी

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमातीं हैं कि मैने पूछा या रसूलल्लाह जिस दिन ज़मीनो आसमान बदले जायेंगे तो उस दिन लोग कहाँ होंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि पुलसिरात पर होंगे और ज़मीन का बदलना ये होगा कि सूरज क़रीब आ जायेगा और टीले, पहाड़, गढ्ढे साफ़ होकर सब बराबर हो जायेंगे और आसमान का बदलना ये होगा कि सूरज क़रीब आ जायेगा व शिद्दत की गरमी होगी अल्लाह तआ़ला रहम फ़रमाये। (इब्ने माजा–सुनन–3/396-ह०–4279)

➡ हज़रत मिक़दाद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़यामत के दिन सूरज बन्दों के क़रीब कर दिया जायेगा यहाँ तक कि एक या दो मील की मुसाफ़त पर होगा और सूरज उनको पिघला देगा यहाँ तक कि हर कोई शख़्स अपने आअ़माल के मुताबिक़ पसीने में डूब जायेगा और बाअ़ज़ का पसीना टखनों तक और बाअ़ज़ का पसीना घुटनों तक और बाअ़ज़ लोग तो कमर तक पसीने में डूबे होंगे और बाअ़ज़ लोगों का पसीना लगाम देगा यानी बाअ़ज़ का पसीना कानों की लौ तक होगा (मुस्लिम–सही–6/396-ह०–7206) (तिर्मिज़ी–सुनन–2/245-ह०–2421)

➡हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस दिन लोग अपने मालिक के रुबरु खड़े होंगे उस दिन लोग निस्फ़ कानों तक पसीने में ग़र्क़ खड़े होंगे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/396-ह०–4278)
(बुख़ारी–सही–6/98-ह०–6531)
(मुस्लिम–सही–6/395-ह०–7203)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन लोग पसीने में सराबोर होंगे यहाँ तक कि उनका पसीना ज़मीन में सत्तर हाथ तक फैल जायेगा और उनके मुँह तक पहुँच कर कानों को छूने लगेगा। (बुख़ारी–सही–6/99-ह०–6532)

रोज़े हश्र कोई किसी के काम न आयेगा

और उस दिन कोई किसी के काम न आयेगा बाप बेटे से और बेटा बाप से दूर भागेगा और माँ अपनी औलाद से और औलाद अपनी माँ से दूर भागेगी शौहर बीवी से और बीवी शौहर से दूर भागेगी उस वक़्त हर नफ़्स अपनी–अपनी फ़िक्र में होगा कि किसी तरह मुझे निजात मिल जाये और मैं क़यामत व दोज़ख़ के सख़्त तरीन अ़ज़ाब से तहफ़्फ़ुज़ पाऊँ और अल्लाह के ग़ज़ब–

से बच जाऊँ मगर कुछ लोग उस दिन राहतो मर्सरत में होंगे हंसते और खुशियाँ मनाते होंगे उनके चेहरे नूर से रोशन होंगे ये वो लोग होंगे जिन्होंने दुनियाँ की ज़िन्दगी के बजाए आख़िरत को तरजीह दी और अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल की इताअ़त में सर्फ़ की।

इरशादे बारी तआ़ला है :-

बेशक वो उस दिन को दूर समझ रहे हैं और हम उसे क़रीब देख रहे हैं जिस दिन आसमान पिघले हुये ताँबे की तरह हो जायेगा और पहाड़ (धुनकी हुई) रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा हालाँकि वो एक दूसरे को दिखाये जायेंगे (और) मुजरिम ये चाहेगा (और आरजू करेगा) कि काश इस दिन के अ़ज़ाब (से रिहायी) के बदले में अपने बेटे को दे-दें और अपनी बीवियाँ और अपना भाई दे-दें और अपना (तमाम) ख़ानदान जो उसे पनाह देता था और जितने लोग भी रुये ज़मीन पर हैं सब लोगों को (अपने अ़ज़ाब के) फ़िदिये में दे डालें फिर ये बदला उसे (अल्लाह के अ़ज़ाब से) बचा ले ऐसा हरगिज़ न होगा बेशक वो तो भड़कती हुई आग है सर और तमाम आज़ा ए बदन की खाल उतार देने वाली है वो उसे बुला रही है जिसने (हक़ से) मुँह फेरा और (जिसने) माल जमाअ़ किया फिर उसे संभाल कर रखा।
(सू०-मआ़रिज-70/6 ता 18)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
तुम्हें क़यामत के दिन हरगिज़ तुम्हारी क़राबतें फ़ायदा न देंगी और न तुम्हारी औलाद (और उस दिन अल्लाह तआ़ला) तुम्हारे दरमियान मुक़म्मल जुदाई कर देगा और अल्लाह तआ़ला उन कामों को खूब देखने वाला है जो तुम कर रहे हो।
(सू०-मुम्तहिना-60/3)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
फिर जब कान फाड़ देने वाली आवाज़ आयेगी उस दिन आदमी अपने भाई से भागेगा और अपनी माँ से और अपने बाप से और अपनी बीवी से और अपनी औलाद से (दूर भागेगा) उस दिन हर शख़्स को ऐसी (परेशान कुन) हालत लाहक़ होगी जो उसे (एक दूसरे से) बेपरवाह कर देगी उस दिन बहुत से चेहरे (ऐसे भी होंगे जो नूर से) चमक रहे होंगे वो मुस्कुराते हंसते और खुशियाँ मनाते होंगे और बहुत से चेहरे ऐसे होंगे जिन पर उस दिन गर्द पड़ी होगी (मज़ीद) उन (चेहरों) पर सियाही छाई होगी यही लोग काफ़िर (और) फ़ाजि़र (बदकिरदार) होंगे।
(सू०-अबस-81/33 ता 42)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
ऐ लोगो अपने रब से डरते रहो बेशक क़यामत का ज़लज़ला बड़ी सख़्त चीज़ है जिस दिन तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली माँ अपने बच्चे-

को भूल जायेगी जिसे वो दूध पिला रही थी और हर हमल वाली औ़रत अपना हमल गिरा देगी और (ऐ देखने वाले) तू लोगों को नशे की हालत में देखेगा हालाँकि वो नशे में न होंगे लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब (ही इतना) सख़्त होगा (कि हर शख़्स हवास बाख़्ता हो जायेगा)।
(सू०–हज–22/1–2)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
ऐ लोगों अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जिस दिन कोई बाप अपने बेटे की तरफ़ से बदला न दे सकेगा और न कोई ऐसा बेटा होगा जो अपने बाप की तरफ़ से कुछ भी बदला देने वाला हो बेशक अल्लाह का वाअ़दा सच्चा है सो दुनियाँ की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे और न ही फ़रेब देने वाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह के बारे में धोके में न डाल दे।
(सू०–लुक़मान–31/33)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
जिस दिन न कोई माल नफ़अ़ देगा और न औलाद मगर वही शख़्स (नफ़अ़ मन्द होगा) जो अल्लाह की बारगाह में सलामती वाले बे ऐ़ब दिल के साथ हाज़िर हुआ।
(सू०–शुअ़रा–26/88-89)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और उस दिन से डरो जब कोई जान किसी दूसरी जान की जगह कोई भी बदला न दे सकेगी और न उसकी तरफ़ से (अपने आप को छुड़ाने के लिये) कोई मुआ़वज़ा कुबूल किया जायेगा और न उसको (इज़्ने इलाही के बग़ैर) कोई सिफ़ारशी फ़ायदा पहुँचा सकेगा और न उन्हें कोई मदद दी जा सकेगी। (सू०-बक़राह-2/48, 123)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आयेगा और न ही उनकी मदद की जायेगी। (सू०-दुख़ान-44/41)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
फिर जब सूर फूँका जायेगा तो उनके दरमियान उस दिन न रिश्ते बाक़ी रहेंगे और न वो एक दूसरे का हाल पूँछ सकेंगे (सू०-मोमिनून-23/101)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
अगर हर ज़ालिम शख़्स की मिल्कियत में वो (सारी दौलत) हो जो ज़मीन में है तो वो यक़ीनन उसे (अपनी जान छुड़ाने के लिये) अ़ज़ाब के बदले में दे डाले और (ऐसे लोग) जब अ़ज़ाब को देखेंगे तो अपनी नदामत छुपाये फिरेंगे और उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा। (सू०-यूनुस-10/54)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ (गुनाह) न उठा सकेगा और कोई बोझ में दबा हुआ (दूसरे को) अपना बोझ बटाने के लिये बुलायेगा तो उससे कुछ भी बोझ उठाया न जा सकेगा ख़्वाह वो क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो। (सू०-फ़ातिर-35/18)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को सबसे हल्का अ़ज़ाब होगा तो उस शख़्स से रब तआ़ला फ़रमायेगा अगर तेरे पास दुनियाँ होती और जो कुछ उसमें है तू उसका मालिक होता तो क्या तू दुनियाँ और जो कुछ उसमें है वो सब देकर खुद को अ़ज़ाब से छुड़ाता तो वो कहेगा हाँ (मुस्लिम-सही-6/364-ह०-7083)

–: रोज़े हश्र नेक लोगों के अहवाल :–

इरशादे बारी तआ़ाला है :–
उस दिन बहुत से चेहरे (ऐसे भी होंगे जो नूर से) चमक रहे होंगे (वो मुस्कुराते हँसते और खुशियाँ मनाते होंगे। (सू०–अबस–80/38 ता 41)

इरशादे बारी तआ़ाला है :–
जो भी अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाये और नेक अ़मल करते रहे तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होगे। (सू०–मायदा–5/69)

इरशादे बारी तआ़ाला है :–
जो भी मेरी हिदायत की पैरवी करेगा उन पर न कोई ख़ौफ़ तारी होगा और न वो ग़मगीन होंगे। (सू०–बक़राह–2/38)

इरशादे बारी तआ़ाला है :–
पस जो परहेज़गार बन गया और उसने अपनी इस्लाह कर ली तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो रंजीदा होंगे। (सू०–आअ़राफ़–7/35)

इरशादे बारी तआ़ाला है :–
बेशक जिन लोंगो ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उन्होंने इस्तिक़ामत इख़्तियार कर ली तो–

उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे यही लोग अहले जन्नत हैं जो उसमें हमेशा रहने वाले हैं ये उन आअ़माल की जज़ा है जो वो किया करते थे। (सू०–अहक़ाफ़–46/13,14)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

सारे दोस्त व अहबाब उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे सिवाये परहेज़गारों के (उन्हीं की दोस्ती और विलायत काम आयेगी और उनसे फ़रमाया जायेगा) ऐ मेरे (मुक़र्रब) बन्दो आज के दिन तुम पर न कोई ख़ौफ़ है और न ही तुम ग़मज़दा होगे ये वो लोग हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाये और हमेशा ताबेअ़ फ़रमान रहे तुम और तुम्हारे साथ जुड़े रहने वाले साथी सब जन्नत में दाख़िल हो जाओ (जन्नत की नेअ़मतों राहतों और लज़्ज़तों के साथ) तुम्हारी तकरीम की जायेगी उन पर सोने की पलेटों और गिलासों का दौर चलाया जायेगा और वहाँ वो सब चीज़ें (मौजूद) होंगी जिसकी वो ख़्वाहिश करेंगे और जिनसे उनकी आँखें राहत पायेंगी और तुम वहाँ हमेशा रहोगे और (ऐ परहेज़गारों) ये वो जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिये गये हो उन (आअ़माल) के सिले में जो तुम अंजाम देते थे (और) तुम्हारे लिये उसमें बा कसरत फल और मेवे हैं सो तुम उन में से खाते रहोगे।
(सू०–ज़ुख़रुफ़–43/67 ता 73)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और अल्लाह ऐसे लोंगों को जिन्होंने परहेज़गारी इख़्तियार की है उन्हें उनकी कामयाबी के साथ निजात देगा (और) उन्हें न कोई बुराई पहुँचेगी और न ही वो ग़मगीन होंगे।

(सू०-जुमर-39/61)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

बेशक जो लोग (अल्लाह की राह में) शब व रोज़ अपने माल पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करते हैं तो उनके लिये उनके रब के पास उनका अज्र है (रोज़े क़यामत) उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो रंजीदा होंगे।

(सू०-बक़राह-2/274)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और जिन लोंगों के चेहरे सफ़ेद (रौशन) होंगे तो वो अल्लाह की रहमत में होगे और वो उसमें हमेशा रहेंगे।

(सू०-आले इमरान-3/107)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

बहुत से चेहरे उस दिन शगुफ़्ता व तरो ताज़ा होंगे और (बिला हिजाब) अपने रब (के हुस्न व जमाल) को तक रहे होंगे।

(सू०-क़ियामाह-75/23)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

उस दिन बहुत से चेहरे (हसीन) व रौनक़ और तरो ताज़ा होंगे अपनी नेक काविशों के बाइस खुश व खुर्रम होंगे आ़लीशान जन्नत में (क़याम पज़ीर) होंगे।

(सू०–ग़ाशिया–88/8 ता 10)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ये ऐसा दिन है (जिसमें) सच्चे लोगों को उनका सच फ़ायदा देगा उनके लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं वो उनमें हमेशा रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वो उस (अल्लाह) से राज़ी हो गये यही (रज़ाये इलाही) सबसे बड़ी कामयाबी है।

(सू०–मायदा–5/119)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और जो लोग ईमान लाये और नेक आअ़माल करते रहे वो बहिश्त के चमनों में होंगे उनके लिये उनके रब के पास वो (तमाम नेअ़मतें) होंगी जिनकी वो ख़्वाहिश करेंगे यही तो बहुत बड़ा फ़ज़्ल है ये वो (इनआ़म) है जिसकी खुश ख़बरी अल्लाह ऐसे बन्दों को सुनाता है जो ईमान लाये और नेक आअ़माल करते रहे।

(सू०–शूरा–42/22)

मैदाने हश्र में बुरे लोंगों के अहवाल

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और आप क़यामत के दिन उन लोगों को देखेंगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला है कि उनके चेहरे सियाह होंगे क्या तक़ब्बुर करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है। (सू०–ज़ुमर–39/60)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और बहुत से चेहरे ऐसे होंगे जिन पर उस दिन गर्द पड़ी होगी (मज़ीद) उन (चेहरों) पर सियाही छायी होगी यही लोग काफ़िर (और) फ़ाजिर (बद किरदार) होंगे। (सू०–अबस–80/40 ता 42)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
जिस दिन कई चेहरे सफ़ेद होंगे और कई चेहरे सियाह होंगे तो जिनके चेहरे सियाह हो जायेंगे (उनसे कहा जायेगा) कि तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया तो जो कुफ़्र तुम करते रहे थे सो आज उसके अ़ज़ाब (का मज़ा) चख लो। (सू०–आले इमरान–3/106)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
मुजरिम लोग अपने चेहरों की सियाही से पहचान लिये जायेंगे पस उन्हें पेशानी के बालों और पैरों से पकड़कर खींचा जायेगा। (सू०–रहमान–55/48)

इरशादे बारी तआला है :-

और कितने ही चेहरे उस दिन बिगड़ी हुई हालत में (मायूस और सियाह) होंगे ये गुमान करते होंगे कि उनके साथ ऐसी सख़्ती की जायेगी जो उनकी कमर तोड़ देगी। (सू०-क़ियामाह-75/24,25)

इरशादे बारी तआला है :-

उस दिन कितने ही चेहरे ज़लील व ख़्वार होंगे (अल्लाह को भूलकर दुनियाँवी) मेहनत करने वाले (चन्द रोज़ा ऐश व आराम के ख़ातिर सख़्त) मशक़्क़तें उठाने वाले दहकती हुई आग में जा गिरेंगे उन्हें खौलते हुये चश्मे से पानी पिलाया जायेगा उनके लिये ख़ारदार खुश्क ज़हरीली झाड़ियों के सिवा कोई खाना न होगा (ये खाना) न उन्हें फ़रबा करेगा और न ही भूक मिटायेगा। (सू०-ग़ाशिया-88/2 ता 7)

इरशादे बारी तआला है :-

यक़ीनन जब ज़मीन पाश पाश करके रेज़ा रेज़ा कर दी जायेगी और आपका रब जलवा फ़रमां होगा और फ़रिश्ते क़तार दर क़तार (उसके हुज़ूर) हाज़िर होंगे और उस दिन दोज़ख़ पेश की जायेगी उस दिन इन्सान को समझ आ जायेगी मगर अब उसे नसीहत कहाँ (फ़ायदामंद) होगी वो कहेगा ऐ काश मैंने अपनी (इस असल) ज़िन्दगी के लिये (कुछ) आगे भेज दिया होता (जो आज मेरे काम आता) सो उस दिन उसके अज़ाब की तरह कोई-

अ़ज़ाब न दे सकेगा। (सू०–फ़ज्र–89/21 ता 26)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–

आप ज़ालिमों को उन (आअ़माल) से डरने वाला देखेंगे जो उन्होंने कमा रखें है और वो (अ़ज़ाब) उन पर वाक़ैअ़ होकर रहेगा। (सू०–शूरा–42/22)

–: मुख़्तलिफ़ अहवाल :–

–: मुसलमान काफ़िरों पर हँसेंगे :–

बेशक मुजरिम लोग ईमान वालों का (दुनियाँ में) मज़ाक़ उड़ाया करते थे और जब उनके पास से गुज़रते तो आपस में आँखों से इशारा बाज़ी करते थे और जब अपने घर वालों की तरफ़ लौटते तो (मोमिनों की तंगदस्ती और अपनी खुशहाली का मुवाज़ना करके) इतराते और दिल लगी करते हुये पलटते थे और जब ये (मग़रुर लोग) उन (कमज़ोर हाल मोमिनों) को देखते तो कहते यक़ीनन ये लोग राह से भटक गये है हालाँकि वो उन (के हाल) पर निगेहबान बनाकर नहीं भेजे गये थे पस आज (देखो) अहले ईमान काफ़िरों पर हँस रहे हैं सजे हुये तख़्तों पर बैठे (अपनी खुशहाली और काफ़िरों की बदहाली का) नज़ारा कर रहे है सो क्या काफ़िरों को उस (मज़ाक़) का पूरा बदला दे दिया गया जो वो किया करते थे। (सू०–मुतफ़्फ़िफ़ीन–83/29 ता 36)

–: काफ़िर आरज़ू करेंगे कि काश हम मुसलमान होते :–

इरशादे बारी तआ़ला है :–
कुफ़्फ़ार (आख़िरत में मोमिनों पर अल्लाह की रहमत के मनाज़िर देखकर) बार–बार आरज़ू करेंगे कि काश हम मुसलमान होते।
(सू०–हिज्र–15/2)

–: आख़िरत के मुक़ाबले दुनियाँ की ज़िन्दगी एक सुबह या एक शाम :–

इरशादे बारी तआ़ला है :–
जिस दिन सूर फूँका जायेगा और उस दिन हम मुजरिमों को यूँ जमाअ़ करेंगे कि उनके जिस्म और आँखें (शिद्दते ख़ौफ़ और अन्धेपन के बाइस) नीली होंगी आपस में चुपके चुपके बातें करते होंगे कि तुम दुनियाँ में मुश्किल से दस दिन ही ठहरे होगे हम खूब जानते हैं वो जो कुछ कह रहे होंगे जबकि उनमें से एक अ़क़्ल व अ़मल में बेहतरीन शख़्स कहेगा कि तुम तो एक दिन के सिवा (दुनियाँ में) ठहरे ही नहीं।
(सू०–ताहा–20/102 ता 104)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और जिस दिन वो उन्हें जमाअ़ करेगा (तो वो महसूस करेंगे कि) गोया वो दिन की एक घड़ी के सिवा दुनियाँ में ठहरे ही न थे वो एक दूसरे को पहचानेंगे बेशक वो लोग ख़सारे में रहे जिन्होंने अल्लाह से मुलाक़ात को झुठलाया था और वो हिदायत याफ़्ता न हुये। (सू०-यूनुस-10/45)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

इरशाद होगा कि तुम दुनियाँ में कितनी मुद्दत ठहरे रहे (हो) वो कहेंगे हम एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा ठहरे (होंगे) आप आअ़दाद शुमार करने वालों से पूछ लें इरशाद होगा तुम (वहाँ) नहीं ठहरे मगर बहुत ही थोड़ा अ़रसा काश कि तुम (ये बात वहीं) जानते होते।
(सू०-मुमिनून-23/112 ता 114)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

वो जिस दिन उसे देख लेंगे तो (ये ख़्याल करेंगे कि) वो (दुनियाँ में) एक शाम या उसकी सुबह के सिवा ठहरे ही न थे। (सू०-नाज़िआ़त-79/46)

कुफ़्फ़ार कहेंगे काश मैं मिट्टी होता

इरशादे बारी तआ़ला है :-

उस दिन वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया और रसूल की ना फ़रमानी की आरज़ू करेंगे कि काश (उन्हें

मिट्टी में दबाकर) उन पर ज़मीन बराबर कर दी जाती और वो अल्लाह तआ़ला से कोई भी बात न छुपा सकेंगे। (सू०–निसा–4/42)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
बिला शुबा हमने तुम्हें अ़नक़रीब आने वाले अ़ज़ाब से डरा दिया है सो उस दिन हर आदमी उन (आअ़माल) को देख लेगा जो उसने आगे भेजे हैं और (हर) काफ़िर कहेगा ऐ काश कि मैं मिट्टी होता (ताकि इस अ़ज़ाब से बच जाता)। (सू०–नबा–78/40)

नाफ़रमान लोग सज्दा न कर सकेंगे

इरशादे बारी तआ़ला है :–
जिस दिन साक़ (पिन्डली) खोल दी जायेगी (यानी अहवाले क़यामत की हौलनाक शिद्दत से परदा उठाया जायेगा) और वो (नाफ़रमान) लोग सज्दे के लिये बुलाये जायेंगे तो वो सज्दा न कर सकेंगे उनकी आँखें (हैबत, दहशत, व डर और नदामत के बाइस) झुकी हुई होंगी (और) उन पर ज़िल्लत छा रही होगी हालाँकि वो (दुनियाँ में भी) सज्दे के लिये बुलाये जाते थे जबकि वो तंदरुस्त थे (मगर फिर भी वो सज्दे के इन्कारी थी) पस (ऐ हबीबे मुकर्रम) आप मुझे और उस शख़्स को जो इस कलाम को झुठलाता है (इन्तिक़ाम के लिये) छोड़ दें अब हम उन्हें आहिस्ता–आहिस्ता (तबाही की–

तरफ़) इस तरह ले जायेंगे कि उन्हें माअ़लूम तक न होगा और मैं उन्हें मुहलत दे रहा हूँ बेशक मेरी तदबीर बहुत मज़बूत है।
(सू०–क़लम–68/42 ता 45)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तुम्हें अपने रब की कोई निशानी माअ़लूम है जिसके ज़रिए तुम उसे पहचान सको तो वो कहेंगे हाँ ''पिन्डली ज़रिया ए शिनाख़्त है'' फिर अल्लाह तआ़ला अपनी पिन्डली खोल देगा तो हर मोमिन उसके हुजूर सज्दा रेज़ हो जायेगा सिर्फ़ वो लोग बाक़ी रहेंगे जो महज़ रियाकारी के लिये उसे सज्दा किया करते थे और वो सज्दा करना चाहेंगे लेकिन सज्दा न कर सकेंगे क्योंकि उनकी पुश्त तख़्ते की मानिन्द कर दी जायेगी।
(बुख़ारी–सही–6/583-ह०–7439)
(मुस्लिम–सही–1/303-ह०–454)

–: सात क़िस्म के लोग अल्लाह की रहमत के साये में होंगे :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सात–

क़िस्म के लोग ऐसे है जिन्हें क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ाला साया अ़ता फ़रमायेगा जिस दिन उसके साये के सिवा कोई दूसरा साया न होगा (1) इन्साफ़ करने वाला हुक्मरान (2) वो नौजवान जो इ़बादते खुदावन्दी में परवान चढ़ा (3) और वो शख़्स जिसका दिल मस्जिद में जाने के बाद वापसी तक उसी में लगा रहे (4) वो दो शख़्स जिन्होंने अल्लाह के लिये (आपस में मुहब्बत रखी और अल्लाह के लिये उन्होंने मुलाक़ात की और अल्लाह ही के लिये जुदा हुये) (5) और वो शख़्स जिसने तन्हाई में अल्लाह का ज़िक्र किया पस (ख़ौफ़ से या मुहब्बत में) उसकी आँखों के आँसू बह निकले (6) और वो शख़्स जिसे किसी हसीना जमीला अच्छे नसब वाली औ़रत ने (ज़िना या बदकारी के लिये) बुलाया तो उसने कहा कि मुझे अल्लाह तआ़ाला का डर है (7) और वो शख़्स जिसने इस तरह छुपाकर सद्क़ा दिया कि बाँये हाथ को ख़बर न हुई कि दाँये हाथ ने क्या दिया।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/226-ह०–239)
(बुख़ारी–सही–6/229-ह०–6806)
(मुस्लिम–सही–3/58-ह०–2380)
(बुख़ारी–सही–1/437-ह०–660)
(नसाई–सुनन–3/572-ह०–5386)

सज्दे के निशानात को आग पर खाना हराम व एक शख़्स का अ़जीब वाक़ेआ़

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत चौदहवीं रात के चाँद की तरह तुम अपने परवरदिगार को देखोगे जब तमाम लोग उठाये जायेंगे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा जो दुनियाँ में जिसकी पूजा किया करता था वो उसके पीछे जाये चुनाँचा कोई सूरज के पीछे हो जायेगा और कोई चाँद के पीछे हो लेगा और कोई बुतों के पीछे हो जायेगा और कोई शयातीन के पीछे चलेगा और सिर्फ़ मेरी उम्मत के मुसलमान बाक़ी रह जायेंगे

जिनमें मुनाफ़िक़ भी होंगे उस वक़्त दोज़ख़ की पुश्त पर एक पुल रख दिया जायेगा पस सबसे पहले मैं अपनी उम्मत के साथ उस पुल पर से गुज़रूँगा उस रोज़ रसूलों के अलावा किसी और को कलाम करने की हिम्मत व ताक़त न होगी उस रोज़ रसूल कहेंगे इलाही सलामती दे सलामती दे और जहन्नुम में साअ़दान की तरह आँकडे होंगे क्या तुमने साअ़दान के काँटे देखे हैं सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया जी हाँ फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो साअ़दान के काँटो की तरह होंगे और वो–

आँकड़े लोगों को उनके बुरे आअ़्माल के मुताबिक़ घसीटेंगे बाअ़ज़ लोग तो अपनी बद आअ़्मालियों की वजह से हलाक हो जायेंगे और कुछ ज़ख़्मों से चूर होकर बच जायेंगे और अल्लाह तआ़ला जहन्नुम में से जिन पर मेहरबानी करना चाहेगा तो फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि जो लोग अल्लाह तआ़ला की इ़बादत किया करते थे वो निकाल लिये जायें तो फ़रिश्ते उन्हें सज्दों के निशानात से पहचान कर निकाल लेंगे क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने सज्दों के निशानात को आग पर खाना हराम कर दिया है उन लोगों को जहन्नुम से इस हालत में निकाला जायेगा कि निशानाते सुजूद के इ़लावा उनकी हर चीज़ को आग खा चुकी होगी ये लोग कोयले की तरह जले भुने हुये दोज़ख़ से निकलेंगे फिर उन पर आबे हयात डाला जायेगा तो वो ऐसे नुमू (बढ़ने व फलने फूलने की कुव्वत) पायेंगे जैसे कुदरती बीज पानी के बहाव में उगता है

फिर जब अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला करने से फ़ारिग़ हो जायेगा तो एक शख़्स जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान रह जायेगा वो जहन्नुम से निकलकर जन्नत में दाख़िल होने के एतबार से आख़री होगा उसका मुँह दोज़ख़ की जानिब होगा और वो अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब मेरा मुँह दोज़ख़ की तरफ़ से फेर दे क्योंकि इसकी बदबू ने मुझे झुलसा दिया है व इसके शोअ़लों ने मुझे जला दिया है तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा–

अगर तेरे साथ अच्छा सुलूक किया जाये तो फिर आइन्दा मुझसे कुछ और तो नहीं माँगेगा वो अ़र्ज़ करेगा हरगिज़ नहीं फिर अल्लाह तआ़ला उसका मुँह दोज़ख़ की तरफ़ से फेर देगा जब वो जन्नत की तरफ़ मुँह करेगा तो उसकी तरो ताज़गी और बहार को देखकर जितनी देर तक अल्लाह को मंजूर होगा वो ख़ामोश रहेगा फिर उसके बाद वो कहेगा ऐ मेरे परवर दिगार मुझे जन्नत के दरवाज़े तक पहुंचा दे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तूने इस पर क़ौल और क़रार न किया था कि जो कुछ तू माँग चुका हो उसके इ़लावा कुछ और न मागूँगा तो वो अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे परवरदिगार तेरी मख़लूक़ में सबसे बढ़कर बदनसीब मैं ही न हो जाऊँ फिर इरशाद होगा अगर तुझे ये भी अ़ता कर दिया जाये तो इसके इ़लावा कुछ और सवाल तो नहीं करेगा वो अ़र्ज़ करेगा तेरी वुजुर्गी की क़सम इसके इ़लावा फिर और कोई सवाल न करूँगा फिर अल्लाह तआ़ला उसको जन्नत के दरवाज़े पर पहुंचा देगा

फिर जब वो जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचेगा तो वहाँ शादाबी व ताज़गी और फरहत देखकर जितनी देर अल्लाह को मन्जूर होगा वो ख़ामोश रहेगा फिर यूँ कहेगा कि ऐ मेरे रब मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमां दे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ आदम के बेटे तुझ पर अफ़सोस तू कितना वाअ़दा ख़िलाफ़ और अपने क़ौल व क़रार

पर क़ायम नहीं क्या तूने इस बात का अ़हद न किया था अब मैं कोई दरख़्वास्त न करूँगा तो वो अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब मुझे अपनी मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा बद नसीब न कर तब उसकी बातों पर अल्लाह तआ़ला हंस देगा और उसे जन्नत में जाने की इजाज़त दे दी जायेगी।
(बुख़ारी–सही–1/511-ह०–806)
(बुख़ारी–सही–6/114-ह०–6573,7437)
(मुस्लिम–सही–1/297-ह०–451)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस वक़्त अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी मख़्लूक़ के इन्साफ़ से फ़ारिग़ होगा और जिन लोगों को आग से बाहर निकालना चाहेगा उनको निकाल लेगा उस वक़्त फ़रिश्तों को और पैग़म्बरों को शफ़ाअ़त का हुक्म देगा वो लोग उन लोगों को उनकी निशानियों से शिनाख़्त करेंगे कि आग इन्सान के हर एक उ़ज़्व को खा लेगी सिवाए सज्दो की जगह को यानी सात मक़ामात जिन पर सज्दा किया जाता फिर उन पर चश्मे हयात का पानी डाला जायेगा और वो इस तरह से उग जायेंगे जिस तरीक़े से दाना उगता है यानी फिर से उनमें जान व तरो ताज़गी आ जायेगी और वो लोग उस पानी की बरकत से तन्दुरुस्त हो जायेंगे और आग के निशान बिल्कुल ख़त्म हो जायेंगे। (नसाई–सुनन–1/442-ह०–1143)

-: रोज़े क़यामत वुज़ू के निशान चमकते होंगे :-

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत मेरी उम्मत के मुँह व हाथ पाँव सज्दों की वजह से चमकते होंगे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/371-ह०–607)
(नसाई–सुनन–1/101-ह०–152)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी उम्मत के लोग क़यामत के दिन बुलाये जायेंगे जबकि वुज़ू के निशानात की वजह से उनकी पेशानियाँ और हाथ पाँव चमकते होंगे अब तुममें से जो कोई अपनी जितनी चमक बढ़ाना चाहे तो बढ़ाऐ।
(बुख़ारी–सही–1/168-ह०–136)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़यामत के दिन तुम सफ़ेद पेशानी और सफ़ेद हाथ पाँव के साथ मेरे पास आओगे और तुम्हारी सफ़ेद पेशानी व हाथ पाँव वुज़ू की वजह से होंगे और ये मेरी उम्मत–

का निशान होगा और किसी दूसरी उम्मत में ये निशान न होगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/397-ह०–4282)

मुसलमान के बदले काफ़िर दोज़ख़ में

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तबारक व तआ़ला हर मुसलमान की तरफ़ एक यहूदी या नसरानी भेजेगा और कहेगा कि ये जहन्नुम से तेरा फ़िदया व छुटकारा है यानी अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान के बदले एक काफ़िर को जहन्नुम में डालेगा।
(मुस्लिम–सही–6/320-ह०–7011)

–: मुसलमानों के गुनाह यहूद व नसारा पर डाले जायेंगे :–

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मुसलमानों में से बाअ़ज़ लोग पहाड़ों के बराबर अपने गुनाह लेकर आयेंगे और अल्लाह तआ़ला उनके गुनाहों को बख़्श देगा और उनके गुनाहों को यहूद व नसारा पर डाल देगा।
(मुस्लिम–सही–6/321-ह०–7014)

जो खाना खिलायेगा वो जन्नत से खायेगा

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मोमिन किसी दूसरे मोमिन को भूक की हालत में खाना खिलायेगा तो अल्लाह तअ़ाला क़यामत के दिन जन्नत के फल व मेवा खिलायेगा और जो मोमिन किसी दूसरे मोमिन को प्यास की हालत में पानी पिलायेगा तो अल्लाह तअ़ाला क़यामत के दिन शराबे तहूर पिलायेगा और जो मोमिन किसी बरहना मोमिन को कपड़ा पहनाएगा तो अल्लाह तअ़ाला क़यामत के दिन उसे जन्नत का सब्ज़ लिबास पहनाएगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/267-ह०–2449)

–: रोज़े क़यामत तीन क़िस्म के लोगों पर अ़ज़ाब :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन शख़्स ऐसे हैं जिन पर अल्लाह तअ़ाला रोज़े क़यामत नज़रे करम नहीं फ़रमायेगा और इनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा जिसके पास ज़ायद पानी हो और वो मुसाफ़िर को न दे और वो शख़्स जो इमाम की–

बैत सिर्फ़ हुसूले दुनियाँ के लिये करे और तीसरा वो शख़्स जो अपना सामाने फरोख़्त लेकर नमाज़ अ़स्र के बाद बैठ जाये और कहे कि अल्लाह की क़सम मुझे इस सामान के ऐवज़ इतना इतना माल दिया जाता है तो ख़रीदने वाले ने उसकी बात मान ली और उससे सामान ख़रीद लिया (झूठी क़सम खाकर सामान फ़रोख़्त करना गुनाहे अ़ज़ीम है)।
(बुख़ारी–सही–2/630-ह०–2358)

इरशादे बारी तआ़ला है–
बेशक जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़स्मों का थोड़ी सी क़ीमत के ऐवज़ सौदा करते हैं यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं और न क़यामत के दिन अल्लाह इनसे कलाम फ़रमायेगा और न ही इनकी तरफ़ निगाह फ़रमायेगा और न इन्हें पाकीज़गी देगा और इनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।
(सू०–आले इमरान–3/77)

पानी पिलाने का सवाब, एक जन्नती का एक दोज़ख़ी की सिफ़ारिश करना

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के रोज़ लोग (अहले जन्नत) सफ़ों में क़ायम होंगे कि एक

दोज़ख़ी एक मर्द के पास से गुज़रेगा तो कहेगा ऐ फुलाँ आपको याद नहीं वो दिन जब आपने पानी माँगा था तो मैंने आपको पानी पिलाया था चुनाँचा ये जन्नती उस दोज़ख़ी की सिफ़ारिश करेगा और एक और मर्द गुज़रेगा तो कहेगा आपको वो दिन याद नहीं जब मैंने आपको तहारत के लिये पानी दिया था चुनाँचा ये भी उसकी सिफ़ारिश करेगा। (इब्ने माजा–सुनन–3/185-ह०–3685)

–: दुनियाँ की हुकूमत रोज़े क़यामत नदामत होगी :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम लोग हुकूमत मिल जाने की तमन्ना करते हो हालाँकि क़यामत के दिन हुकूमत का मिल जाना हसरत व नदामत होगी। (नसाई–सुनन–3/574-ह०–5391)

–: दुनियाँ में सेर होकर खाने वाले रोज़े क़यामत भूके रहेंगे :–

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के पास एक आदमी ने डकार ली तो आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अपनी डकार को रोको क्योंकि दुनियाँ

में ज़्यादा सेर होकर खाने वाले क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा भूके रहेंगे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/159-ह०–2578,369)

–: तस्वीर बनाने वाले पर अ़ज़ाब :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तस्वीर (जानदार) बनाने वाले को अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत अ़ज़ाब देता रहेगा यहाँ तक कि वो उसमें रुह फूँके और वो कभी उसमें रुह न डाल सकेगा अगर तस्वीर बनाना चाहो तो दरख़्तों या उन चीज़ों की तस्वीरें बना लिया करो जिनमें रुह नहीं होती।
(बुख़ारी–सही–2/549-ह०–2225)

मूरती बनाने वाले से कहा जायेगा जान डाल मगर वो जान न डाल सकेगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो लोग मूरती बनाते हैं उनको क़यामत के दिन अ़ज़ाब होगा और उनसे कहा जायेगा कि इनको जिला (यानी इसमें रुह डाल) जिनको तुमने बनाया था। (मुस्लिम–सही–5/309-ह०–5535)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स दुनियाँ में कोई तस्वीर बनाये उसको क़यामत में अ़ज़ाब दिया जायेगा और उसे तस्वीर में जान डालने को कहा जायेगा और वो जान न डाल सकेगा।
(मुस्लिम–सही–5/310-ह०–5541)
(अबू दाऊद–सुनन–6/767-ह०–5024)
(नसाई–सुनन–3/565-ह०–5365)

–: हर धोके बाज़ का क़यामत के दिन एक झण्डा होगा :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन हर दग़ाबाज़ का एक झण्डा होगा जिससे उसकी शिनाख़्त होगी। (मुस्लिम–सही–5/15-ह०–4536)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया धोका करने वाले के लिये क़यामत के रोज़ एक झण्डा गाढ़ा जायेगा और कहा जायेगा ये फुलाँ बिन फुलाँ का धोका है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/228-ह०–2756)

मांगने वाले के चेहरे पर गोश्त नहीं होगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स मुसलसल लोगों से सवाल करता रहता है वो क़यामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसके चेहरे पर गोश्त की एक बोटी तक न होगी (बुख़ारी–सही–2/189-ह०–1474)

बाहमी मुहब्बत के बाइस नूर के मिम्बर

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि जो लोग मेरे लिये और मेरी बुजुर्गी के वास्ते आपस में मुहब्बत करते हैं तो मैंने उनके वास्ते नूर के मिम्बर तैयार किये हैं जिन पर अम्बिया और शुहदा भी रश्क करेंगे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/225-ह०–2390)

–: क़यामत में हश्र उसी के साथ जिससे मुहब्बत हो :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल क़यामत कब आयेगी आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तूने उसके लिये क्या तैयारी की है उसने कहा मैंने तो उसके लिये कोई ख़ास तैयारी नहीं की है मैंने ज़्यादा रोज़े, ज़्यादा नमाज़ें और ज़्यादा सद्क़ा व ख़ैरात तो जमाअ़ नहीं किये हैं अलबत्ता मैं अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से मुहब्बत करता हूँ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया फिर तुम रोज़े क़यामत उनके साथ होगे जिनसे तुम मुहब्बत रखते हो तो हमने पूछा कि हमारे साथ भी यही मुआ़मला होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ और हम उस दिन बहुत ज़्यादा खुश होंगे।
(बुख़ारी–सही–5/659-ह०–6167)
(बुख़ारी–सही–6/423-ह०–7153)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया

या रसूलल्लाह आप उस शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं जो लोगों से मुहब्बत रखता है लेकिन (आअ़माल व किरदार में) उन जैसा नहीं है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर शख़्स उसके साथ होगा जिससे वो मुहब्बत रखता है।
(बुख़ारी–सही–5/660-ह०–6169)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया आदमी रोज़े क़यामत उसी के साथ होगा जिसे वो दोस्त रखता है और उसे अपने आअ़माल का पूरा–पूरा बदला यानी अज्र दिया जायेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/223-ह०–2385)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स ने ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क़यामत कब आयेगी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के लिये तुमने क्या तैयारी की है उसने कहा कि मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तू उसी के साथ होगा जिससे तू मुहब्बत रखता है।
(मुस्लिम–सही–6/237-ह०–6710)

रोज़े हश्र मालदार व ग़रीब की आरज़ू काश हाजत के मुताबिक़ रिज़्क़ मिलता

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कोई मालदार व मुहताज ऐसा नहीं जो रोज़े क़यामत ये आरज़ू न करे कि अल्लाह तआ़ला उसको दुनियाँ में हाजत के मुताबिक़ रिज़्क़ देता और मालदार कहेंगे अल्लाह तआ़ला दुनियाँ में बहुत मालदार न करता और वो ऐसा इसलिये कहेंगे क्योंकि वो अल्लाह की तरफ़ से मिलने वाले फुक़रा के मरातिब आ़लिया को देखेंगे। (इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4140)

रोज़े क़यामत हर कोई नादिम होगा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो भी मरता है वो रोज़े क़यामत शर्मिन्दा होगा सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह नदामत क्या होगी तो आप ने फ़रमाया कि अगर नेक है तो वो नादिम होगा कि मैंने और ज़्यादा नेक अ़मल क्यों न किये और अगर गुनाहगार है तो इस बात पर नदामत होगी कि मैं गुनाहों से क्यों न बचा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/232-ह०–2403)

-: मेरी खालें कैंचियों से काटी जातीं :-

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनियाँ में मसाइबो आलाम से दो चार होने वाले लोगों को जब रोज़े क़यामत अल्लाह तआला अज़ीम सवाब व मरातिब अता फ़रमायेगा तो दुनियाँ में आफ़ियत व ऐशो आराम से रहने वाले लोग उनके सवाब व मरातिब को देखकर तमन्ना करेंगे कि काश दुनियाँ में मेरी खालें कैंचियों से काटी जातीं।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/231-ह०-2402)
(इब्ने अबी शैबा-अलमुसन्निफ़-3/537-ह०-13134)
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-4/602-ह०-6553)

-: जन्नत व दोज़ख़ में ग़ोता :-

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अहले दोज़ख़ में से एक शख़्स को लाया जायेगा जिसने दुनियाँ बड़ी ऐश से गुज़ारी हो और कहा जायेगा कि इसको जहन्नुम में एक ग़ोता दो फिर उसको जहन्नुम में एक गोता देकर निकालेंगे फिर उससे पूछेंगे कि ऐ फुलाँ तूने कभी दुनियाँ में आराम व राहत देखी है तो वो कहेगा नहीं मैं नहीं जानता आराम व राहत क्या है और एक अहले जन्नत

में से लाया जायेगा जिसकी दुनियाँ बड़ी सख़्ती व तकलीफ़ों से गुज़री होगी और हुक्म होगा इसको जन्नत में एक ग़ोता दो फिर वहाँ से निकालकर उसको लायेंगे और पूछेंगे कि ऐ फुलाँ तूने कभी सख़्ती और तकलीफ़ देखी है तो वो कहेगा कि मुझे कभी सख़्ती और बला नहीं पहुँची।
(इब्ने माजा–सुनन–3/412-ह०–4321)
(मुस्लिम–सही–6/365-ह०–7088)

–: हिसाबो किताब का बयान :–

रोज़े हश्र तमाम मख़्लूक़ जमाअ़ की जायेगी और तमाम लोग अपने रब के हुज़ूर पेश होंगे और अपने हिसाबो किताब के इन्तिज़ार में खड़े होंगे मगर रब तआ़ला न तो उनसे कलाम फ़रमायेगा और न ही उनके मुआ़मलात में नज़र करेगा हत्ता कि लोग चालीस साल तक टकटकी बांधे खड़े रहेंगे और लोग भूके प्यासे शदीद तकलीफ़ो परेशानी के आलम में बुरे हाल में होंगे उस दिन हर शख़्स अपने किये हुये आअ़माल को अपने सामने पायेगा और उस दिन कोई किसी को नफ़ा न दे सकेगा और न ही अल्लाह तआ़ला के गज़ब व अ़ज़ाब से कोई बचाने वाला होगा और कुछ लोगों को जहन्नुम की तरफ़ ले जाया जायेगा और बाअ़ज़ को घसीटते हुये औंधा करके जहन्नुम में डाल दिया जायेगा।

और जालिमों की माअ़ज़िरत भी उन्हें कोई नफ़ा न दे सकेगी और पोशीदा बातें ज़ाहिर होंगी और लोगों की जुबानें गूँगी कर दी जायेगी और उनके आज़ा (जिस्मानी अंग) उनके आअ़मालो की गवाही देगें और मीज़ान क़ायम किया जायेगा और दोज़ख़ सामने लायी जायेगी और उसमें आग भड़काई जायेगी।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :-

ये वही दोज़ख़ है जिसका तुमसे वाअ़दा किया जाता रहा है आज इस दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ इस वजह से कि तुम कुफ़्र करते रहे थे आज हम उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बातें करेगें और उनके पाँव उनके आअ़माल की गवाही देंगे जो वो किया करते थे अगर हम चाहते तो उनकी आँखों के निशान तक मिटा देते फिर वो रास्ते पर दौड़ते तो कहाँ देख सकते थे और अगर हम चाहते तो उनकी रिहायश गाहों पर ही उनकी सूरतें बिगाड़ देते फिर न वो आगे जाने की कुदरत रखते और न ही वापस लौट सकते पर हम जिसे तवील उम्र देते हैं उसे कुव्वत व तबीअ़त में वापस (बचपन या कमज़ोरी की तरफ़) पलटा देते हैं फिर क्या वो अक़्ल नहीं रखते हैं।
(सू०-यासीन-36/63 ता 68)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मनों को दोज़ख़ की तरफ़ जमाअ़ करके लाया जायेगा फिर उन्हें रोक रोक कर (व हांक हांक कर) चलाया जायेगा यहाँ तक कि जब वो दोज़ख़ तक पहुँच जायेंगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उन (के जिस्मों) की खालें उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगी उन आअ़माल पर जो वो किया करते थे फिर वो लोग अपनी खालों से कहेगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी तो वो कहेंगी हमें उस अल्लाह ने गोयायी अ़ता की जो हर चीज़ को कुव्वते गोयायी अ़ता फ़रमाता है और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और तुम उसी की तरफ़ पलटाये जाओगे।

(सू०-हामीम-सज्दा/फुस्सिलत-41/19 ता 21)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

जिस दिन (खुद) उनकी ज़बानें और उनके हाथ और उनके पाँव उन्हीं के ख़िलाफ़ गवाही देंगे जो कुछ वो करते रहे थे।

(सू०-नूर-24/24)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और आँख और दिल उनमें से हर एक से बाज़ पुर्स होगी।

(सू०-बनी ईसराईल-17/36)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

तुम तो (गुनाह करते वक़्त) उस (ख़ौफ़) से भी पर्दा नहीं किया करते थे कि तुम्हारे कान तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे और न (ये कि) तुम्हारी आँखें और न (ये कि) तुम्हारी खालें (ही गवाही दे देंगी) लेकिन तुम गुमान करते थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से कामों को जो तुम करते हो जानता ही नहीं है और तुम्हारा यही गुमान जो तुमने अपने रब के बारे में क़ायम किया तुम्हें हलाक कर गया सो तुम नुक़सान उठाने वालों में से हो गये अब अगर वो सब्र करें तब भी उनका ठिकाना दोज़ख़ है और अगर वो (तौबा के ज़रिये अल्लाह की) रज़ा हासिल करना चाहें तो भी वो रज़ा पाने वालों में से न होंगे।
(सू०-हामीम-सज्दा/फुस्सिलत-41/22 ता 24)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह रोज़े क़यामत क्या हम अपने रब को देखेंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम्हें दोपहर के वक़्त में जबकि बदली न हो तो सूरज के देखने में कोई मुश्किल होती है तो सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि नहीं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम्हें चौदहवीं रात के चाँद के देखने में कोई मुश्किल होती है जबकि बादल न हो तो सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि नहीं-

फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि इसी तरह तुम लोगों को अपने रब के देखने में कोई मुश्किल न होगी और तुम्हारे और रब के दरमियान किसी क़िस्म का कोई हिजाब न होगा सिवाये इसके जितना तुम्हें सूरज और चाँद को देखने में होता है नीज़ फ़रमाया फिर इसके बाद अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से हिसाब करेगा और फ़रमायेगा कि ऐ-फुलां क्या मैंने तुझे इ़ज़्ज़त न दी और तुझे सरदार नहीं बनाया और तुझे जोड़ा नहीं बनाया और तेरे लिये घोड़े और ऊँट तेरे ताबेअ़ न किये क्या मैंने तुझे रियासत और आराम की हालत में नहीं छोड़ा तो वो अ़र्ज़ करेगा जी हाँ ऐ मेरे रब

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तू ये गुमान करता था कि तू मुझसे मुलाक़ात करेगा वो अ़र्ज़ करेगा नहीं फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि मैं तुझे भुला देता हूँ जिस तरह दुनियाँ में तूने मुझे भुला दिया था (यानी तेरी ख़बर न लूँगा और अ़ज़ाब से नहीं बचाऊँगा) फिर अल्लाह तआ़ला दूसरे बन्दे से हिसाब फ़रमायेगा और वही गुफ़्तगू फ़रमायेगा जो पहले वाले शख़्स से फ़रमाई थी फिर अल्लाह तआ़ला तीसरे शख़्स से हिसाब फ़रमायेगा और उससे भी इसी तरह की गुफ़्तगू फ़रमायेगा फिर वो शख़्स अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब मैं तुझ पर व तेरी किताबों पर और तेरे रसूलों-

पर ईमान लाया और मैंने नमाज़ पढ़ी और रोज़े रख्खे और मैंने सद्क़ा ख़ैरात किया वो अपनी नेकियों की ताअ़रीफ़ करेगा फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा तेरा झूठ अभी तेरे सामने खुलकर आ जायेगा हम तेरे ऊपर अभी गवाहों को खड़ा करते हैं वो अपने दिल में सोचेगा कि मुझ पर कौन गवाही देगा फिर उसके मुँह पर मुहर लगा दी जायेगी और उसकी रान व गोश्त व हड्डियों को हुक्म होगा कि बोल तो उसकी रान व उसका गोश्त और उसकी हड्डियाँ उसके आअ़माल की गवाही देंगी ये इसलिये होगा ताकि उसका कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहे और ये शख़्स मुनाफ़िक़ यानी झूठा मुसलमान होगा और उस शख़्स पर अल्लाह तआ़ला अपनी नाराज़गी का इज़हार फ़रमायेगा।
(मुस्लिम–सही–6/476-ह०–7438)
(अबू दाऊद–सुनन–6/590-ह०–4730)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयते मुबारका पढ़ी कि ‘‘जिस दिन ज़मीन अपनी तमाम ख़बरे बतायेगी’’ (सू०–ज़लज़ला–99/4) फिर फ़रमाया क्या तुम जानते हो उसकी ख़बरें क्या हैं तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह व उसका रसूल बेहतर जानते हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उसकी ख़बरें ये हैं कि वो हर इन्सान मर्द व औ़रत के बारे में उनके–

आअ़माल की गवाही देगी जो उन्होंने उसकी पीठ पर किये होंगे वो कहेगी इसने फुलां फुलां दिन फुलाँ फुलाँ काम किये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि ज़मीन को इसी काम का हुक्म दिया गया है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/250-ह०–2429)

–: मुजरिमों का दुनियाँ में दोबारा आने की ख़्वाहिश करना :–

रोज़े क़यामत हर छोटी बड़ी चीज़ की निसबत सवाल होगा और लोग अ़ज़ाब की मुख़्तलिफ़ सख़्तियों और तकलीफ़ व परेशानियों में मुब्तिला होंगे और बाअ़ज़ लोग उस वक़्त ये तमन्ना करेंगे कि हमारे आअ़माल अल्लाह के हुजूर पेश न हों और हमारे गुनाह और बुराईयाँ लोगों के सामने ज़ाहिर न हों ताकि हम ज़लील व नादिम और रुसवा होने से बच जायें और बाअ़ज़ लोग यूँ कहेंगे ऐ मेरे रब हमें दुनियाँ में वापस भेज दे ताकि हम अच्छे काम करें।

इरशादे बारी तआ़ाला है :–
अब ये (काफ़िर) उस आख़िरी अन्जाम के सिवा किस बात के मुन्तज़िर है जिस दिन वो आख़िरी अन्जाम सामने आ जायेगा तो जो लोग इससे क़ब्ल उसे भुला चुके थे वो कहेंगे बेशक हमारे रब के रसूल हक़ (बात) लेकर आये थे सो क्या–

(आज) हमारा कोई सिफ़ारशी है जो हमारे लिये सिफ़ारिश कर दे या हम (फिर दुनियाँ में) लौटा दिये जायें ताकि हम (इस मर्तबा) उन (आअ़्माल) से मुख़्तलिफ़ अ़मल करें जो (पहले) करते रहे थे बेशक उन्होंने अपने आप को नुकसान पहुँचाया। (सू०–आअ़राफ़–7/53)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और अगर आप देखें (तो उन पर तआ़ज्जुब करें) कि जब मुजरिम लोग अपने रब के हुज़ूर सर झुकाये होंगे (और कहेंगे) ऐ हमारे रब हमने देख लिया और हमने सुन लिया पस अब हमें (दुनियाँ में) वापस लौटा दे ताकि हम नेक अ़मल कर लें बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं और अगर हम चाहते तो हम हर नफ़्स को हिदायत अ़ता कर देते लेकिन मेरी तरफ़ से ये फ़रमान साबित हो चुका है कि मैं ज़रुर सब (सरकश) इन्सानों और जिन्नों से दोज़ख़ को भर दूँगा पस अब तुम मज़ा चखो कि तुमने अपने इस दिन की पेशी को भुला रखा था बेशक हमने तुमको भुला दिया है और अपने उन आअ़्माल के बदले जो तुम करते रहे (अब) दायमी अ़ज़ाब चखते रहो।
(सू०–सज्दा–32/12 ता 14)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

अगर आप (उन्हें उस वक़्त) देखेंगे जब वो आग (के किनारे) पर खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे ऐ–

काश हम (दुनियाँ) में) पलटा दिये जायें तो (अब) हम अपने रब की आयतों को (कभी) नहीं झुठलायेंगे और ईमान वालों में से हो जायेंगे (इस इक़रार में कोई सच्चाई नहीं) बल्कि उन पर वो (सब कुछ) ज़ाहिर हो गया है जो वो पहले छुपाया करते थे और अगर वो (दुनियाँ में) लौटा (भी) दिये जायें तो (फिर) वही दोहराऐंगे जिससे वो रोके गये थे और बेशक वो (पक्के) झूठे हैं और वो (यही) कहते रहेंगे (जैसे उन्होंने पहले कहा था) कि हमारी इस दुन्याँवी ज़िन्दगी के सिवा (और) कोई (ज़िन्दगी) नहीं और हम (मरने के बाद) उठाये नहीं जायेंगे और अगर आप (उन्हें उस वक़्त) देखें जब वो अपने रब के हुजूर खड़े किये जायेंगे (फिर) रब तआ़ला फ़रमायेगा क्या ये (ज़िन्दगी) हक़् नहीं है (तो) वो कहेंगे क्यों नहीं हमारे रब की क़सम (ये हक़् है फिर) अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा पस अब तुम अ़ज़ाब का मज़ा चखो इस वजह से कि तुम कुफ़्र किया करते थे पस ऐसे लोग नुक़सान में रहेंगे जिन्होंने अल्लाह की मुलाक़ात को झुठला दिया यहाँ तक कि जब उनके पास अचानक क़यामत आ पहुँचेगी तो वो कहेंगे हाय अफ़सोस हम पर जो हमने इस (क़यामत पर ईमान लाने) के बारे में (तक़सीर) की और वो अपनी पीठों पर अपने (गुनाहों के) बोझ लादे हुये होंगे सुन लो वो बहुत बुरा बोझ है जो ये उठा रहे हैं।

(सू०-अनआ़म-6/27 ता 31)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और आप ज़ालिमों को देखेंगे कि जब वो अ़ज़ाबे (आख़िरत) देख लेंगे तो कहेंगे क्या (दुनियाँ में) पलट जाने का कोई रास्ता है और आप उन्हें देखेंगे कि वो दोज़ख़ पर ज़िल्लत व ख़ौफ़ के साथ सर झुकाये हुये पेश किये जायेंगे (और उसे चोरी चोरी) छुपी हुई निगाहों से देखते होंगे और ईमान वाले कहेंगे बेशक नुक़सान उठाने वाले वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को और अपने अह्ल व अ़याल को क़यामत के दिन ख़सारे में डाल दिया याद रखो बेशक ज़ालिम लोग दायमी अ़ज़ाब में (मुब्तिला) रहेंगे।
(सू०–शूरा–42/44-45)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और अगर ये ज़ालिम लोग उस वक़्त को देख लें जब (उख़र'वी) अ़ज़ाब उनकी आँखों के सामने होगा (तो जान लेंगे) कि सारी कुव्वतों का मालिक अल्लाह है और बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है (और) जब वो (पेशवायाने कुफ़्र) जिनकी पैरवी की गई अपने पैरोकारों से बेज़ार होंगे और (वो सब अल्लाह का) अ़ज़ाब देख लेंगे और सारे असबाब उनसे मुनक़ताअ़ हो जायेंगे और (ये बेज़ारी देखकर मुशरिक) पैरोकार कहेंगे काश हमें (दुनियाँ में जाने का) एक मौक़ा मिल जाये तो हम (भी) उनसे बेज़ारी ज़ाहिर कर दें जैसे इन्होंने (आज) हमसे बेज़ारी ज़ाहिर की है यूँ अल्लाह–

उन्हें उनके अपने आअ़्माल उन्हीं पर हसरत बनाकर दिखा देगा और वो (किसी भी सूरत) दोज़ख़ से निकलने न पायेंगे।
(सू०–बक़राह–2/165 ता 167)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
और आप लोगों को उस दिन से डरायें जब उन पर अ़ज़ाब आ पहुँचेगा तो वो लोग जो जुल्म करते रहे होंगे कहेंगे ऐ हमारे रब हमें थोड़ी देर के लिये मुहलत दे दे कि हम तेरी दाअ़्वत को कुबूल कर लें और रसूलों की पैरवी कर लें (तो उनसे कहा जायेगा) कि क्या तुम्हीं लोग पहले क़समें नहीं खाते रहे कि तुम्हें कभी ज़वाल नहीं आयेगा और तुम (अपनी बारी पर) उन्हीं लोगों के (छोड़े हुये) महल्लात में रहते थे (जिन्होंने अपने अपने दौर में) अपनी जानों पर जुल्म किया था हालाँकि तुम पर अ़याँ हो चुका था कि हमने उनके साथ क्या मुअ़ामला किया था और हमने तुम्हारे (फ़हम के) लिये मिसालें भी बयान की थीं और उन्होंने (दौलत व इक़्तिदार के नशे में बद–मस्त होकर) अपनी तरफ़ से बड़ी फ़रेब कारियाँ कीं जबकि अल्लाह के पास उनके हर फ़रेब का तोड़ था अगरचा उनकी मक्काराना तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी उखड़ जायें सो अल्लाह को हरगिज़ अपने रसूलों से वाअ़्दा ख़िलाफ़ी करने वाला न समझना बेशक अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है। (सू०–इब्राहीम–14/44 ता 47)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

या अ़ज़ाब देखते वक़्त कहने लगे कि अगर एक बार मेरा दुनियाँ में लौटना हो जाये तो मैं नेकोकारों में से हो जाऊँगा। (सू०-जुमर-39/58)

-: रोज़े क़यामत आअ़मालों की पुरसिश होगी :-

रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला लोगों से उनके आअ़माल के मुताअ़ल्लिक़ सवाल करेगा वो लोगों से पूछेगा कि मैंने तुझे जवानी दी तो तूने उसे कहाँ ख़र्च किया मैंने तुझे मुहलत दी तो तूने उस मुहलत में क्या किया मैंने तुझे माल दिया तो तूने उस माल को कहाँ-कहाँ ख़र्च किया मैंने तुझे इ़ल्म के ज़रिये इ़ज़्ज़त बख़्शी तो तूने उस इ़ल्म का क्या किया रोज़े क़यामत इन्सान अपनी जगह से हिल न सकेगा जब तक कि उससे चार बातों की पुरसिश न हो जाये (1) उ़म्र किस काम में गुज़ारी (2) अपने इ़ल्म पर कितना अ़मल किया (3) माल कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया (4) और अपने जिस्म को किस काम में लगाया।

इरशादे बारी तआ़ला है :-

सो आपके रब की क़सम उन सब से ज़रुर पुरसिश करेंगे उन आअ़माल के मुताअ़ल्लिक़ जो वो करते रहे थे। (सू०-हिज्र-15/92-93)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से हर एक निगरान है और हर एक से बाज़ पुर्स (सवाल, पूछताछ) होगी हाकिमे वक़्त निगरान है उससे भी पूछा जायेगा और मर्द अपने अहले ख़ाना का निगरान उससे भी सवाल जवाब होगा और औ़रत अपने ख़ाविन्द के घर व माल की निगरान है उससे भी पूछा जायेगा और ग़ुलाम अपने आक़ा के माल का निगरान है उससे भी पूछा जायेगा अलगरज़ तुममें से हर एक निगरान है और तुममें से हर एक से सवाल होगा।
(बुख़ारी–सही–5/165-ह०–5188)

➡ हज़रत इब्ने मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान क़यामत के दिन उस वक़्त तक अपने रब के पास खड़ा रहेगा जब तक उससे पाँच बातों के बारे में सवाल न हो जाये (1) उसने अपनी ज़िन्दगी किस काम में गुज़ारी (2) अपनी जवानी को किन कामों में सर्फ़ किया (3) माल किस तरह कमाया (4) अपने माल को कहाँ ख़र्च किया (5) अपने इ़ल्म पर क्या अ़मल किया।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/243-ह०–2416)

➡ हज़रत इब्ने हातिम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी हत्ता कि तुम में से हर एक अपना सद्क़ा लेकर फिरेगा मगर उस सद्क़े को कुबूल करने वाला नहीं मिलेगा फिर रोज़े क़यामत तुम में से हर शख़्स अल्लाह के सामने खड़ा होगा जबकि उसके और अल्लाह के दरमियान कोई पर्दा हाइल न होगा और न कोई तरजुमान होगा जो उसकी गुफ़्तगू को नक़ल करे बिला शुबा फिर अल्लाह तआ़ाला उससे फ़रमायेगा क्या मैंने तुझे माल न दिया था वो अ़र्ज़ करेगा क्यों नहीं फिर अल्लाह तआ़ाला फ़रमायेगा क्या मैंने तेरे पास एक अ़ज़ीम पैग़म्बर नहीं भेजा था वो अ़र्ज़ करेगा क्यों नहीं फिर वो अपनी दाँयी तरफ़ देखेगा तो उसे आग के सिवा कोई चीज़ नज़र न आयेगी फिर जब वो बाँयी तरफ़ नज़र डालेगा तो उधर भी सिवाये आग के कुछ भी नज़र न आयेगा लिहाज़ा तुम में से हर शख़्स को उस आग से बचना चाहिये अगरचा खजूर का एक टुकड़ा ही दे दे अगर ये भी मुम्किन न हो तो अच्छी बात कह दे (क्योंकि ये भी सद्क़ा है)
(बुख़ारी–सही–2/152-ह०–1413)
(इब्ने माजा–सुनन–1/624-ह०–1843)
(मुस्लिम–सही–3/46-ह०–2348)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन बन्दा अल्लाह तआ़ला के हुजूर पेश किया जायेगा तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या मैंने तुझे देखने व सुनने की कुव्वत नहीं दी क्या मैंने तुझे माल और औलाद नहीं दिये क्या मैंने तेरे लिये जानवर और खेतियाँ तेरे ताबेअ़ न की क्या तेरा ये ख़्याल था कि आज के दिन तू मुझसे मुलाक़ात करेगा तो वो कहेगा कि नहीं तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा आज मैं तुझे उसी तरह छोड़ता हूँ जिस तरह तूने मुझे भुलाया था।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/249-ह०–2428)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ इब्ने आदम मैं बीमार हुआ और तूने मेरी अ़यादत न की बन्दा अ़र्ज़ करेगा कि ऐ मेरे परवर दिगार मैं तेरी अ़यादत कैसे करता जबकि तू खुद तमाम जहानों का पालने वाला है इरशाद होगा क्या तूझे माअ़लूम नहीं कि मेरा फुलाँ बन्दा बीमार हुआ और तूने उसकी अ़यादत न की क्या तू नहीं जानता अगर तू उसकी अ़यादत करता तो मुझे उसके पास मौजूद पाता फिर अल्लाह तआला–

फ़रमायेगा ऐ इब्ने आदम मैंने तुझसे खाना माँगा लेकिन तुने मुझे खाना नहीं खिलाया बन्दा अ़र्ज़ करेगा कि ऐ मेरे रब मैं तुझे खाना कैसे खिलाता जबकि तू तो हम सबका परवरदिगार है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तुझे माअ़लूम नहीं कि मेरे फुलाँ बन्दे ने तुझसे खाना माँगा था अगर तू उसे खाना खिलाता तो तू मुझे उसके पास मौजूद पाता

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ इब्ने आदम मैंने तुझसे पानी माँगा था और तूने मुझे पानी नहीं पिलाया तो बन्दा अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे परवरदिगार मैं तुझे पानी कैसे पिलाता तू तो तमाम जहानो का रब है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि मेरे फुलाँ बन्दे ने तुझसे पानी माँगा था अगर तू उसे पानी पिलाता तो मुझे उसके पास मौजूद पाता।

(मुस्लिम–सही–6/201-ह०–6556)
(इब्ने हिब्बान–सही–1/426-ह०–269)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/446-ह०–9182)
(अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–2/418-ह०–1742)

उस दिन बादशाही सिर्फ़ अल्लाह की होगी और वो लोगों का फ़ैसला करेगा

इरशादे बारी तआला है :–
और बादशाही उस दिन सिर्फ़ अल्लाह ही की होगी वही उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमायेगा पस जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल करते रहे वो नेअ़मत के बाग़ात में (क़याम पज़ीर) होंगे और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो उन्हीं लोगों के लिये ज़िल्लत आमेज़ अ़ज़ाब होगा। (सू०–हज–22/56-57)

इरशादे बारी तआला है :–
सारी की सारी ज़मीन क़यामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और सारे आसमानी कुर्रे उसके दाँये हाथ (यानी क़ब्जा–ए–कुदरत) में लिपटे हुये होंगे। (सू०–जुमर–39/67)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत अल्लाह तआला ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लेगा और आसमानों को अपने दाँये हाथ में लपेट लेगा फिर फ़रमायेगा मैं ही बादशाह हूँ दुनियाँ के बादशाह आज कहाँ हैं। (बुख़ारी–सही–4/751-ह०–4812) (मुस्लिम–सही–6/354-ह०–7050)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला आसमानों को लपेट लेगा और उन्हें अपने दाहिने हाथ में लेगा और कहेगा मैं ही जब्बार हूँ मैं ही बादशाह हूँ कहाँ हैं जाबिर और कहाँ हैं तकब्बुर करने वाले फिर अल्लाह तआ़ला ज़मीन को लपेट लेगा और फ़रमायेगा मैं ही जब्बार हूँ मैं ही बादशाह हूँ कहाँ हैं जाबिर और कहाँ हैं मुताकब्बिर जो अपने आप को जब्बार समझते थे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/395-ह०–4275)
(अबू दाऊद–सुनन–6/591-ह०–4732)

जिन गुनाहों का तआ़ल्लुक़ हुक़ूकुल्लाह से है जैसे रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात, वग़ैराह अगर हमने इनकी अदायगी में कोताही की और अल्लाह के हुक़ूक़ हमारे ज़िम्मे बाक़ी रहे तो ये अल्लाह के हुक़ूक़ हैं अल्लाह तआ़ला चाहे तो अपनी रहमत से मुआ़फ़ फ़रमां दे या चाहे तो सज़ा दे और जुमला गुनाहों और कोताहियों की मुआ़फ़ी और बख़्शिश की रब तआ़ला से उम्मीद की जा सकती है मगर जिन गुनाहों का तआ़ल्लुक़ हुक़ूकुल इबाद (यानी इन्सानों के हुक़ूक़) से है अगर हमने उनकी अदायगी न की जो हुक़ूक़ हमारे ज़िम्मे थे या किसी की हक़ तल्फ़ी की या किसी का हक़ हम पर बाक़ी रहा और हमने अपने हक़दारों से माफ़ी

नहीं माँगी और उन्होंने हमें मुआ़फ़ न किया तो इन तमाम हुकूक़ों को अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ नहीं फ़रमायेगा जब तक कि हक़दार मुआ़फ़ न करे या उसका हक़ उसे अदा कर दिया जाये मगर अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने मक़बूल व मुक़र्रब बन्दों के उन हुकूक़ों को जो उसके ज़िम्मे बाक़ी थे उसके हक़दारों से किसी न किसी तरह माअ़फ़ी के लिये राज़ी करेगा और उनके हक़दारों से अपने मख़सूस बन्दों को माअ़फ़ी दिलवायेगा और उस दिन बादशाही सिर्फ़ अल्लाह ही की होगी और तमाम लोग उसके हुज़ूर अपने हिसाबो किताब के लिये खड़े होंगे और अल्लाह तआ़ला लोगों के दरमियान फ़ैसला फ़रमायेगा।

इरशादे बारी तआ़ला है :-

जिस दिन वो सब (क़ब्रों से) निकल पड़ेंगे और उन (के आअ़माल) से कुछ भी अल्लाह पर पोशीदा न रहेगा (इरशाद होगा) आज किसकी बादशाही है (फिर इरशाद होगा) अल्लाह ही की जो यकता है सब पर ग़ालिब है आज के दिन हर जान को उसकी कमाई का बदला दिया जायेगा आज कोई ना इंसाफ़ी न होगी बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है और आप उनको क़रीब आने वाली आफ़त के दिन से डरायें जब ज़ब्ते ग़म से कलेजे मुँह को आयेंगे और ज़ालिमों के लिये ना कोई दोस्त होगा और ना कोई सिफ़ारशी कि जिसकी बात मानी जाये-

और वो ख़यानत करने वाली निगाहों को जानता है और (उन बातों को) जो सीने (अपने अन्दर) छुपाये रखते हैं और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमाता है और जिन (बुतों) को ये लोग अल्लाह के सिवा पूजते हैं वो कुछ भी फ़ैसला नहीं कर सकते बेशक अल्लाह ही सुनने वाला देखने वाला है और क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देख लेते उन लोगों का अन्जाम कैसा हुआ जो इनसे पहले थे वो लोग कुव्वत में भी इनसे बहुत ज़्यादा थे और उन आसार व निशानात में भी जो वो ज़मीन में (छोड़ गये) थे फिर अल्लाह ने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया और उनके लिये अल्लाह (के अ़ज़ाब) से बचाने वाला कोई न था ये इस वजह से हुआ कि उनके पास उनके रसूल खुली निशानियाँ लेकर आये थे फिर उन्होंने कुफ़्र किया तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें (अ़ज़ाब में) पकड़ लिया बेशक वो बड़ी कुव्वत वाला सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।
(सू०–मोमिन/ग़ाफ़िर–40/16 ता 22)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
हालाँकि जिन्नात को माअ़लूम है कि वो (भी अल्लाह के हुज़ूर) यक़ीनन पेश किये जायेंगे।
(सू०–सफ़्फ़ात–37/158)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
अगर कोई (नेक या बद) अ़मल राई के दाने के

बराबर भी हो फिर ख़्वाह वो किसी पत्थर के नीचे (छुपा) हो या आसमानों में या ज़मीन में (तब भी) अल्लाह तआ़ला उसे (रोज़े क़यामत हिसाब के लिये) हाज़िर कर देगा बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बारीक बीन है और ख़बरदार है। (सू०–लुक़मान–31/16)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

जिस दिन वो फ़रिश्तों को देखेंगे तो उस दिन मुजरिमों के लिये कोई खुशी का मौक़ा न होगा बल्कि ये कहते फिरेंगे खुदाया हमें अपनी पनाह दे कि ये हम से दूर हो जायें और फिर हम उन आअ़माल की तरफ़ मुतवज्जै होंगे जो उन्होंने (दुनियाँ में) किये थे हम उनका फ़ैसला करने पर आयेंगे तो उन्हें फ़ज़ा में बिखरा हुआ गर्द व गुबार (की तरह बे क़ीमत) बना देंगे उस दिन अह्ले जन्नत की क़याम गाह बेहतर होगी और आराम गाह भी खूबतर होगी (जहाँ वो हिसाब व किताब की दोपहर के बाद जाकर क़ैलूला करेंगे) और उस दिन आसमान फटकर बादल (की तरह धुंऐं) में बदल जायेंगे और फ़रिश्ते गिरोह दर गिरोह उतारे जायेंगे उस दिन सच्ची बादशाही सिर्फ़ (खुदाए) रहमान की होगी और वो दिन काफ़िरों पर सख़्त (मुश्किल) होगा और उस दिन हर ज़ालिम (गुस्से और हसरत से) अपने हाथों को काट काट कर खायेगा (और) कहेगा काश मैंने रसूल की माअ़य्यत में (आकर हिदायत का)

रास्ता इख़्तियार किया होता हाय अफ़सोस काश मैंने फुलां शख़्स को दोस्त न बनाया होता बेशक उसने मेरे पास नसीहत आ जाने के बाद मुझे उससे बहका दिया
(सू०–फुरक़ान–25/22 ता 29)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
ख़बरदार जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है वो यक़ीनन जानता है जिस हाल पर तुम हो (ईमान पर हो या मुनाफ़िक़त पर) और जिस दिन लोग उसकी तरफ़ लौटाये जायेंगे तो वो उन्हें बता देगा जो कुछ वो किया करते थे और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।
(सू०–नूर–24/64)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और वही है जो रात के वक़्त तुम्हारी रुहें क़ब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुम दिन के वक़्त कमाते हो वो जानता है फिर वो तुम्हें दिन में उठा देता है ताकि (तुम्हारी ज़िन्दगी की) मुअ़य्यन मियाद पूरी कर दी जाये फिर तुम्हारा पलटना उसी की तरफ़ है फिर वो (रोज़े महशर) तुम्हें उन (तमाम आअ़माल) से आगाह फ़रमां देगा जो तुम (इस ज़िन्दगानी में) करते रहे थे।
(सू०–अनआ़म–6/60)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

आप फ़रमां दीजिये तुम अ़मल करो सो अ़नक़रीब तुम्हारे अ़मल को अल्लाह (भी) देख लेगा और उसका रसूल (भी) और अहले ईमान (भी) और तुम अ़नक़रीब हर पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाले (रब) की तरफ़ लौटाये जाओगे सो वो तुम्हें उन आअ़माल से ख़बरदार फ़रमां देगा जो तुम किया करते थे।
(सू०–तौबा–9/105)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

(ऐ इन्सान) क्या तुझे माअ़लूम नहीं कि अल्लाह उन सब चीज़ो को जानता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है कहीं भी तीन (लोगों) की कोई (भी) सरगोशी (ऐसी) नहीं होती मगर ये कि वो (अल्लाह अपने मुहीत इ़ल्म के साथ) उनका चौथा होता है और न कोई पाँच (लोगों) की सरगोशी ऐसी होती है मगर ये कि उसमें वो (अल्लाह अपने इ़ल्मे मुहीत के साथ) उनका छठा होता है और न इससे कम (लोगों) की और न ज़्यादा की मगर वो (अल्लाह हमेशा) उनके साथ होता है वो जहाँ कहीं भी होते हैं फिर वो क़यामत के दिन उन्हें उन कामों से ख़बरदार फ़रमां देगा जो वो करते रहे थे बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।
(सू०–मुजादिला–58/60)

आअ़्माल का पूरा बदला दिया जायेगा

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
सो क्या हाल होगा जब हम उनको उस दिन जिस (के बपा होने) में कोई शक नहीं जमाअ़ करेंगे और जिस जान ने जो कुछ भी (आअ़्माल में से) कमाया होगा उसे उसका पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर कोई जुल्म न किया जायेगा। (सू०-आले इमरान-3/25)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
बेशक क़यामत की घड़ी आने वाली है मैं उसे पोशीदा रखना चाहता हूँ ताकि हर जान को उस (अ़मल) का बदला दिया जाये जिसके लिये उसने कोशिश की। (सू०-ताहा-20/15)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
बेशक आपका रब उन सब को उनके आअ़्माल का पूरा पूरा बदला देगा जो कुछ वो कर रहे हैं यक़ीनन वो उनसे खूब आगाह है।
(सू०-हूद-11/11)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
उस दिन अल्लाह उन्हें उन (के आअ़्माल) की पूरी पूरी जज़ा देगा जिसके वो सही हक़दार हैं और वो जान लेंगे कि अल्लाह (खुद भी) हक़ है

(और हक़ को) ज़ाहिर फ़रमाने वाला (भी) है। (स०–नूर–24/25)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

वो दिन (याद करें) जब हर शख़्स महज़ अपनी जान की तरफ़ से (दिफ़ाअ़ के लिये) झगड़ता हुआ हाज़िर होगा और हर जान को जो कुछ उसने किया होगा उसका पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जायेगा। (सू०–नह्ल–16/111)

सबसे पहले उम्मते मुस्लिमा का हिसाब

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हम आख़िरी उम्मत हैं लेकिन सबसे पहले हमारा हिसाब होगा निदा आयेगी उम्मी उम्मत कहाँ है और उसके नबी कहाँ हैं तो हम (दुनियाँ में) सबसे आख़िर हैं और (जन्नत में) सबसे अव्वल होंगे। (इब्ने माजा–सुनन–3/399-ह०–4290)

➡ ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का फ़रमान है कि जब दूसरी उम्मतों का हिसाब हो रहा होगा तो मेरी उम्मत जन्नत में जा चुकी होगी यानी दुनियाँ में आमद के लिहाज़ से मेरी उम्मत सबसे आख़िरी है लेकिन हिसाब व

किताब व जन्नत में दाख़िले के लिहाज़ से सबसे मुक़द्दम होंगे।

–: कयामत में सबसे पहले नमाज़ का हिसाब :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन सबसे पहले नमाज़ का हिसाब होगा अगर नमाज़ उ़म्दाह निकलीं (यानी शरायत के मुताबिक़ और अरकान के मुताबिक़ अपने वक़्त पर अदा कीं) तो उस शख़्स ने छुटकारा हासिल कर लिया और वो शख़्स मुराद को पहुँच गया और अगर नमाज़ उ़म्दाह न हुईं तो वो शख़्स ख़सारे व नुक़सान में पड़ गया और वो बर्बाद हो गया और अगर जिसकी फ़र्ज़ नमाज़ें पूरी न हुई तो फ़र्ज़ नमाज़ों को नवाफ़िल से पूरा किया जायेगा और उसके बाद दूसरे आअ़माल की भी यही हालत होगी। (नसाई–सुनन–1/209-ह०–468)

➡ सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन सबसे पहले नमाज़ का हिसाब होगा और जिनकी फ़र्ज़ नमाज़ें पूरी न होंगी तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि क्या मेरे बन्दे के कुछ नवाफ़िल भी हैं और अगर नवाफ़िल हुये तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा

कि मेरे बन्दों के फ़र्ज़ों को निफ़िलों से पूरा करो। (अबू दाऊद–सुनन–1/639-ह०–864)

–: नेक मोमिन का पर्दे में हिसाब :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया रोज़े क़्यामत अल्लाह तआ़ला मोमिन को अपने नज़दीक बुलायेगा और उस पर अपना पर्दा डाल देगा फिर अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमायेगा क्या तुझको फुलाँ–फुलाँ गुनाह याद हैं वो मोमिन कहेगा हाँ ऐ मेरे परवरदिगार जब वो अपने गुनाहों का इक़रार कर लेगा और उसे यक़ीन आ जायेगा कि अब तो मैं हलाक हुआ तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि मैंने दुनियाँ में तेरे गुनाहों पर पर्दा डाला और आज भी मैं तेरी मग़फ़िरत करता हूँ चुनाँचा उसको नेकियों की किताब दे दी जायेगी। (बुख़ारी–सही–2/678-ह०–2441)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शख़्स से क़्यामत के दिन हिसाब होगा उसको अ़ज़ाब दिया जायेगा तो मैंने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अल्लाह तआ़ला तो कुरान में फ़रमाता है कि–

''तो अ़नक़रीब उससे आसान सा हिसाब लिया जायेगा'' (सू०–इनशिक़ाक–84/8)
तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये हिसाब नहीं है बल्कि ये तो फ़क़त उसको उसके आअ़माल का दिखा देना है।
(मुस्लिम–सही–6/405-ह०–7225)

ज़ुल्म से ली गई ज़मीन का हिसाब

➡ हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स किसी की ज़मीन का कुछ हिस्सा यहाँ तक कि एक बालिस्त ज़मीन ज़ुल्म से लेगा तो क़यामत के दिन उसके गले में सात ज़मीनों का तौक़ डाला जायेगा।
(बुख़ारी–सही–2/684-ह०–2452,2453)
(मुस्लिम–सही–4/231-ह०–4132)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स किसी की थोड़ी ज़मीन ना हक़ ले लेगा तो वो क़यामत के दिन सात ज़मीनों में धंसता चला जायेगा।
(बुख़ारी–सही–3/445-ह०–3196)

➡ हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है अर्वा बिन्ते उवैस ने उनसे घर के बाअ़ज़ हिस्से के बारे में झगड़ा किया तो उन्होंने कहा कि इसे छोड़ दो और ज़मीन इसे दे दो क्योंकि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से सुना है आपने फरमाया कि जिसने ना हक़ (अपने हक़ के बग़ैर) एक बालिश्त ज़मीन ले ली तो अल्लाह तआ़ाला रोज़े क़यामत उसे सात ज़मीनों का तौक़ पहनायेगा ऐ अल्लाह अगर ये अर्वा झूठी है तो इसे अन्धा कर दे और इसकी क़ब्र इसके घर में बना दे रावी कहते हैं कि मैने अर्वा को देखा कि वो अन्धी को गई थी और दीवारों को टटोलती थी और कहती थी कि मुझे सईद की बद्दुआ़ा लगी है फिर वो एक रोज़ अपने घर के कुँऐ में गिर पड़ी वहीं उसकी क़ब्र बन गई। (मुस्लिम–सही–4/231-ह०–4133)

–: अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेगा :–

इरशादे बारी तआ़ाला है :–

जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है सब अल्लाह के लिये है वो बातें जो तुम्हारे दिलों में हैं ख़्वाह उन्हें ज़ाहिर करो या उन्हें छुपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा फिर वो जिसे चाहेगा बख़्श देगा और जिसे चाहेगा अ़ज़ाब देगा और अल्लाह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखता है। (सू०–बक़राह–2/284)

-: बग़ैर सींग वाली बकरी का हिसाब :-

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला क़यामत के दिन तवज्जो करेगा और फ़रमायेगा मुझे मेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ज़ालिम मेरी सज़ा से बच कर नहीं गुज़रेगा और मख़लूक़ में इन्साफ़ होगा यहाँ तक कि बग़ैर सींग वाली बकरी को सींग वाली बकरी से इन्साफ़ दिलावाया जायेगा जो उसने सींग मारा था।
(तबरानी मुअ़जम कबीर–1/665-ह०–1405)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़यामत के दिन तुम हक़दारों को उनके हक़ अदा करोगे यहाँ तक कि बग़ैर सींग वाली बकरी का बदला सींग वाली बकरी से लिया जायेगा।
(मुस्लिम–सही–6/207-ह०–6580)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/245-ह०–2420)

-: हक़दारों को उनके हक़ का बदला दिया जायेगा :-

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और जो कोई (किसी का हक़) छुपाता है तो रोज़े क़यामत उसे वो लाना पड़ेगा जो उसने छुपाया था फिर हर शख़्स को उसके अ़मल का पूरा बदला दिया जायेगा और उन ज़ुल्म नहीं किया जायेगा। (सू०-आले इमरान-3/161)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर रहम फ़रमाये जिसके पास अपने भाई की इ़ज़्ज़त व माल का हक़ है तो वो पकड़े जाने से पहले साहिबे हक़ से माअ़फ़ी माँग ले क्योंकि उस जगह न तो दीनार होंगे और न ही दिरहम होंगे पस जो उसके पास नेकियाँ होंगी तो नेकियों से हक़दारों का हक़ और मज़लूमीन का बदला चुकाया जायेगा और अगर नेकियाँ न हुईं तो उन मज़लूमीन और हकदारों के गुनाह उस पर डाले जायेंगे।
(बुख़ारी-सही-6/99-ह०-6534)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/245-ह०-2419)
(बुख़ारी-सही-2/683-ह०-2449)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस किसी के पास उसके भाई की जुल्म से (नाजाइज़) ली हुयी इज़्ज़त या माल हो तो उसे चाहिये कि वो अपने मुसलमान भाई को दुनियाँ में ही अदा कर दे इससे पहले कि वो क़यामत के दिन आये और तुझसे इज़्ज़त या माल के बदले तेरी नेकियाँ ले ले और अगर तेरे पास नेकियाँ कम हुईं तो वो अपने गुनाह तेरे ऊपर डालेगा।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/587-ह०–6513)

–: हुक़ूक़ अदा न करने वाला रोज़े क़यामत मुफ़लिस होगा :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि मुफ़लिस कौन है तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हम तो मुफ़लिस उसे जानते हैं जिसके पास माल व मताअ़ में से कुछ भी न हो तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुफ़लिस वो है जो क़यामत के दिन इस तरह आयेगा कि उसके पास रोज़ा व नमाज़ व ज़कात होगी लेकिन उसने किसी को गाली दी होगी किसी पर तुहमत (झूठा इल्ज़ाम, बोहतान) लगाया होगा या किसी का माल खाया–

होगा किसी का ख़ून बहाया होगा या किसी को मारा होगा पस वो बैठा होगा और ये लोग इन जुर्मों के बदले उसकी नेकियाँ ले जायेंगे और अगर गुनाहों का बदला पूरा होने से पहले नेकियाँ ख़त्म हो गयीं तो उनके गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे फिर उसे जहन्नुम की आग में डाल दिया जायेगा। (मुस्लिम–सही–6/207-ह०–6579)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/244-ह०–2418)

–: जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान जुल्म का बदला :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अहले ईमान जहन्नुम से छुटकारा पा जायेंगे तो उन्हें जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान एक पुल पर रोक लिया जायेगा फिर उन्होंने दुनियाँ में जो एक दूसरे पर जुल्मो सितम किये होंगे उसका क़िसास व बदला लिया जायेगा यहाँ तक कि जब वो पाको साफ़ हो जायेंगे तब उन्हें जन्नत में जाने की इजाज़त मिलेगी नीज़ फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की जान है अहले जन्नत में से हर एक अपना मुक़ाम दुनियाँ में अपने घर की निस्बत ज़्यादा जानने वाला होगा।
(बुख़ारी–सही–2/678-ह०–2440,6535,)

ज़कात अदा न करने वालों का अंजाम

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और जो लोग सोना और चाँदी का ज़ख़ीरा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते तो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दो जिस दिन उस (सोने, चाँदी और माल) को दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा फिर उस (तपे हुये माल) से उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जायेंगी (और उनसे कहा जायेगा) कि ये वही (माल) है जो तुमने अपनी जानों के लिये जमाअ़ किया था सो तुम (इस माल का) मज़ा चखो जिसे तुम जमाअ़ करते थे।
(सू०–तौबा–9/34-35)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कोई सोने व चाँदी का मालिक ऐसा नहीं जो उसकी ज़कात अदा नहीं करता हो तो क़्यामत के दिन उसका माल दोज़ख़ की आग में गरम किया जायेगा फिर उसे तख़्तों की तरह बनाकर उसके पहलू (करवटें) व पेशानी और पीठ को दाग़ा जायेगा जब वो ठन्डे हो जायेंगे तो उन्हें दोबारा गर्म किया जायेगा उस दिन ये अ़मल उनके साथ बराबर होता रहेगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला फ़रमादे उस दिन में जिसकी मिक़्दार–

पचास हज़ार साल है फिर उसको जन्नत या दोज़ख़ की तरफ़ रास्ता दिखाया जायेगा और कोई ऊँटों वाला ऐसा नहीं जो ऊँटों की ज़कात नहीं देता मगर ये कि उसको एक हमवार ज़मीन पर औंधा करके लिटाया जायेगा और वो ऊँट अपने खुरों से उसको रोंधेंगे जब उस पर आख़िरी ऊँट गुज़र जायेगा तो पहले वाला ऊँट आ जायेगा और वो फिर दोबारा रोंधेंगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के दरमियान फ़ैसला फ़रमादे उस दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल होगी फिर उसको जन्नत या दोज़ख़ का रास्ता दिखाया जायेगा

और कोई बकरी वाला ऐसा नहीं जो उनकी ज़कात अदा नही़ करता हो मगर ये कि उसको एक हमवार ज़मीन पर लिटाया जायेगा फिर वो बकरियाँ आयेंगी और वो सब अपने खुरों से उसको रोंधेंगी और सींगों से मारेंगी और जब उस पर आख़िरी बकरी गुज़र जायेगी तो फिर पहली बकरी को उस पर लौटाया जायेगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला फ़रमादे उस दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल होगी फिर उसको जन्नत या दोज़ख़ का रास्ता दिखाया जोयगा।

(मुस्लिम–सही–3/21-ह०–2290)

(अबू दाऊद–सुनन–2/318-ह०–1658)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स ऊँट, गाय और बकरियों का मालिक हो फिर उनकी ज़कात अदा न करे तो क़यामत के दिन वो जानवर खूब मोटे ताज़े होकर आयेंगे और अपने सींगों से अपने मालिकों को मारेंगे और अपने क़दमों से रोंधेंगे फिर जब आख़िरी जानवर गुज़र जायेगा तो फिर पहला जानवर आ जायेगा और ये इसी तरह होता रहेगा हत्ता कि लोग अपने अपने ठिकानों (जन्नत या दोज़ख़) में पहुँच जायेंगे।
(नसाई–सुनन–2/129-ह०–2444, 2460)
(बुख़ारी–सही–1/145-ह०–1402, 6958)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/375-ह०–617)

➡हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि एक यमनी ख़ातून ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुई जिसके हाथ में मोटे मोटे सोने के दो कंघन थे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उससे दरयाफ़्त फ़रमाया क्या तुम इसकी ज़कात अदा करती हो उसने जवाब दिया कि नहीं तो आप ने फ़रमाया क्या तुझे ये पसन्द है कि रोज़े क़यामत अल्लाह तुझे आग के दो कंघन पहनाये ये बात सुनकर उस ख़ातून ने वो दोनों कंघन उतार दिये और कहा कि ये दोनों कंघन अल्लाह और उसके रसूल के लिये हैं।
(नसाई–सुनन–2/136-ह०–2483)

–: माल को साँप की शक्ल में मुसल्लत किया जायेगा :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स मालदार हो और अपने माल की ज़कात अदा न करे तो वो माल रोज़े क़यामत एक गंजे साँप की शक्ल में उसके गले का तौक़ होगा और वो उससे भागेगा और साँप उसका पीछा करेगा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयते करीमा तिलावत फ़रमाई ''जो लोग उस (माल व दौलत) में से देने में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता किया है वो हरगिज़ इस बुख़्ल को अपने हक़ में बेहतर ख़्याल न करें बल्कि ये उनके हक़ में बुरा है अ़नक़रीब क़यामत के दिन उन्हें (गले में) उसका तौक़ पहनाया जायेगा'' (सू०–आले इमरान–3/180) (नसाई–सुनन–2/120-ह०–2445)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स ऊँट, बैल, बकरियाँ रखता हो और उनकी ज़कात अदा न करे तो क़यामत के दिन वो एक चटियल मैदान में खड़ा किया जायेगा–

और उसको जानवर अपने खुरों और सीगों से मारेंगे और जो मालदार अपने माल की ज़कात अदा नहीं करेगा तो रोज़े क़यामत वो माल एक गंजे साँप की शक्ल में उसके पास आयेगा वो उस साँप को देखकर भागेगा और वो साँप उसके पीछे पीछे ये कहता हुआ भागेगा कि मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ जिससे तू दुनियाँ में कंजूसी किया करता था जब वो शख़्स देखेगा कि भागने से अब कोई फ़ायदा नहीं है तो वो मजबूर होकर अपना हाथ उस गंजे साँप के मुँह में डाल देगा और वो अज़दहा (बड़ा साँप) उसके हाथ को चबायेगा।
(नसाई–सुनन–2/127-ह०–2458)
(बुख़ारी–सही–6/321-ह०–6957)
(मुस्लिम–सही–3/27-ह०–2297)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/660-ह०–1392)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स अपने माल की ज़कात अदा न करे तो क़यामत के दिन उस शख़्स का माल एक गंजा साँप बनकर आयेगा जिसकी आँखों पर काले रंग के दो नुक़्ते होंगे और वो साँप उस शख़्स से लिपट जायेगा और कहेगा मैं तेरा माल हूँ मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ। (नसाई–सुनन–2/136-ह०–2485)

–: क़यामत में पहला फ़ैसला ना हक़ ख़ून का होगा :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़यामत के दिन लोगों के दरमियान सबसे पहले जिस चीज़ का फ़ैसला होगा वो ना हक़ ख़ून के मुताअ़ल्लिक़ होगा। (बुख़ारी–सही–6/99-ह०–6533)
(मुस्लिम–सही–4/303-ह०–4381)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/775-ह०–1396)
(नसाई–सुनन–3/124-ह०–3999,4000)

–: एक बूढ़ी औ़रत का वाक़्या :–

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब समुन्दरी मुहाजिरीन आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास पहुँचे तो आप ने फ़रमाया कि तुमने हब्शा में जो अ़जीब बातें देखी वो हमें नहीं बताओगे उनमें से चन्द नौजवानों ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल ज़रुर बतायेंगे एक मर्तबा हम बैठे हुये थे कि वहाँ के दरवेशियों की एक बुढ़िया सर पर पानी का एक मटका उठाये हमारे पास से गुज़री फिर एक हब्शा के जवान के पास से गुज़री तो उसने अपना एक हाथ उस बुढिया के दोनों काँधों के दरमियान रखा और उसे धक्का दे दिया तो वो–

बुढ़िया घुटनों के बल गिर पड़ी और उसका मटका टूट गया फिर जब वो उठी तो उसकी तरफ़ मुतवज्जै होकर कहने लगी कि तुम्हें अ़नक़रीब इ़ल्म हो जायेगा ऐ मक्कार जब अल्लाह तअ़ाला कुर्सी क़ायम फ़रमायेगा और अव्वलीन व आख़िरीन को जमाअ़ फ़रमायेगा और हाथ व पाँव अपने करतूत बयान करेंगे उस वक़्त तुम्हें इ़ल्म हो जायेगा कि अल्लाह के यहाँ मेरा और तुम्हारा क्या फ़ैसला होता है फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस बुढ़िया ने सच कहा कि अल्लाह तअ़ाला उस क़ौम को कैसे पाक करे जिस क़ौम में कमज़ोरो की ख़ातिर ताक़तवर से मुवाख़ज़ा न किया जाये।
(इब्ने माजा–सुनन–3/301-ह०–4010)

–: रोज़े क़यामत मौत को ज़िब्हा कर दिया जायेगा :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़यामत के दिन मौत को एक सफ़ेद मेंढे की शक्ल में लाया जायेगा फिर जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान उसको ठहराया जायेगा फिर कहा जायेगा ऐ जन्नत वालो तुम इसे पहचानते हो ये मौत है फिर कहा जायेगा ऐ दोज़ख़ वालो क्या तुम इसे पहचानते हो ये मौत है फिर हुक्म होगा और वो मेंढा (मौत) को

ज़िब्हा कर दिया जायेगा फिर कहा जायेगा ऐ-जन्नत वालो तुम्हें जन्नत में हमेशा रहना है तुम्हें कभी मौत न आयेगी और ऐ दोज़ख़ वालो तुम्हें हमेशा इसी दोज़ख़ में रहना है और तुम्हें कभी मौत न आयेगी फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयते मुबारका पढ़ी "आप उन्हें हसरत (व नदामत) के दिन से डरायें जब हर बात का फ़ैसला कर दिया जायेगा मगर वो ग़फ़लत (की हालत) में पड़े हैं और ईमान नहीं लाते" (सू०-मरयम-19/39)
(मुस्लिम-सही-6/389-ह०-7181)

-: बेशुमार लोग बग़ैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे :-

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझसे वाअ़दा फ़रमाया है कि वो मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार उम्मतियों को बग़ैर हिसाब और बग़ैर अ़ज़ाब के जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा और हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार मज़ीद होंगे और तीन मुट्ठी मेरे रब की मुट्ठियों में से मज़ीद होगी।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/258-ह०-2437)
(इब्ने माजा-सुनन-3/399-ह०-4286)

–: रोज़े हश्र नेक लोगों को उनके नेक आअ़माल के बाइस बेहतर सिला :–

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और उस दिन जन्नत परहेज़गारों के क़रीब कर दी जायेगी। (सू०–शुअ़रा–26/90)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और अल्लाह ऐसे लोगों को जिन्होंने परहेज़गारी इख़्तियार की है उन्हें उनकी कामयाबी के साथ निजात देगा न उन्हें कोई बुराई पहुँचेगी और न वो ग़मगीन होंगे।
(सू०–ज़ुमर–39/60)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और जिन लोगों के चेहरे सफ़ेद (रौशन) होंगे तो वो अल्लाह की रहमत में होंगे और वो उसमें हमेशा रहेंगे।
(सू०–आले इमरान–3/107)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
उस दिन बहुत से चेहरे (हसीन) बा रौनक़ और तरो ताज़ा होंगे अपनी नेक काविशों के बाइस खुश व खुर्रम होंगे
(सू०–ग़ाशिया–88/8,9)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-

उन लोगों के लिये जो नेकी करते रहे इस दुनियाँ में भी भलाई है और आख़िरत का घर तो ज़रुर ही बेहतर है और परहेज़गारों का घर क्या खूब है सदाबहार बाग़ात हैं जिनमें वो दाख़िल होंगे जिनके नीचे से नहरे बह रही होंगी उसमें उन के लिये वो सब कुछ है जो वो चाहेंगे वो (मयस्सर) होगा इस तरह अल्लाह तअ़ाला परहेज़गारों को सिला अ़ता फ़रमाता है। (सू०-नह्ल-16/30,31)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-

ये हक़ है कि बेशक नकोकारों का नामा-ए-आअ़माल इल्लीईन (बुलन्द मर्तबा लोगों के दफ़्तर) में है और आपने क्या जाना इल्लीईन क्या है वो लिखी हुयी एक किताब है (जिसमें नेकोकारों के अ़मल दर्ज होते हैं जिसका मुशाहदा मुक़र्रब फ़रिश्ते करते हैं बेशक नेकोकार लोग (ऐशो आराम व राहतो मसर्रत से) नेअ़मतों वाली जन्नत में होंगे तख़्तों पर बैठे नज़ारे कर रहे होंगे (और) आप उनके चेहरों से ही नेअ़मत व राहत की रौनक़ और शगुफ़्तगी माअ़लूम कर लेंगे उन्हें बड़ी लज़ीज़ शराबे तहूर पिलायी जायेगी।
(सू०-मुतफ़्फ़िफ़ीन-83/18 ता 25)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-

उस दिन बादशाही सिर्फ़ अल्लाह की होगी वही उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमायेगा पस जो लोग

ईमान लाये और नेक अ़मल करते रहे वो नेअ़मत के बाग़ात में है (क़याम पज़ीर) होंगे। (सू०–हज–22/56)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत तीन क़िस्म के लोग मुश्क के टीले पर होंगे और लोग उन पर रश्क करेंगे एक वो शख़्स जो पाँचों वक़्त की अज़ान कहे दूसरा वो शख़्स जो क़ौम का इमाम हो और क़ौम उससे राज़ी हो और तीसरा वो गुलाम जो अल्लाह तआ़ला और अपने मालिक का हक़ अदा करे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/352-ह०–2566)

–: रोज़े हश्र बदकारों का अंजाम :–

मैदाने महशर में चीखो पुकार मची होगी पुलसिरात और मीज़ान क़ायम किया जायेगा और जहन्नुम भड़काई जायेगी और लोगों को उनके आअ़माल नामे दिये जा रहे होंगे और वो उसमें देखेंगे जो उन्होंने दुनियाँ में अच्छे और बुरे काम किये होंगे और लोग सख़्त ख़ौफ़ व परेशानियों से घिरे होंगे सिवाये रब तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दों के और वो अल्लाह तआ़ला की रहमत में होंगे और कुछ लोग दोज़ख़ में डाले जा रहे होंगे और कितने ही लोग ज़लील व रुसवा हो

रहे होंगे और कितने ही लोगों की परदा पोशी होगी और कितने ही लोग शर्मसार हो रहे होंगे और बाअ़्ज़ लोग निजात पा जायेंगे और बाअ़्ज़ लोग शदीद अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे और बाअ़्ज़ को अल्लाह तआ़ला की रहमत हासिल होगी और हमें अपना पता नहीं कि मेरा हाल क्या होगा।

इरशादे बारी तआ़ला है :-

बल्कि उनका (असल) वाअ़्दा तो क़्यामत है और क़्यामत की घड़ी बहुत ही सख़्त और बहुत ही तल्ख़ है बेशक मुजरिम लोग गुमराही व दीवानगी (या आग की लपेट) में हैं जिस दिन वो लोग अपने मुँह के बल दोज़ख़ में घसीटे जायेंगे (तो उनसे कहा जायेगा) आग में जलने का मज़ा चखो (सू०-क़्मर-54/46 ता 48)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और आप क़्यामत के दिन उन लोगों को जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला है देखेंगे कि उनके चेहरे सियाह होंगे क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है। (सू०-ज़ुमर-39/60)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

तुम में से बाअ़्ज़ बाअ़्ज़ के दुश्मन होंगे फिर जब मेरी जानिब से तुम्हारे पास कोई हिदायत (वही) आ जाये सो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा तो वो न (दुनियाँ में) गुमराह होगा

और न (आख़िरत में वो) बद नसीब होगा और जिसने मेरे ज़िक्र (यानी मेरी याद और नसीहत) से मुँह फेरा तो उसके लिये दुनियाँवी मआ़श तंग कर दिया जायेगा और हम उसे क़यामत के दिन अन्धा उठायेंगे तो वो कहेगा ऐ मेरे रब तूने मुझे (आज) अन्धा क्यों उठाया हालाँकि मैं (दुनियाँ में) बीना था इरशाद होगा ऐसा (इसलिये हुआ कि दुनियाँ में) तेरे पास हमारी निशानियाँ आयीं पस तूने उन्हें भुला दिया और आज इसी तरह तू (भी) भुला दिया जायेगा और इसी तरह हम उस शख़्स को बदला देते हैं जो (गुनाहों में) हद से निकल जाये और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाये और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब बड़ा ही सख़्त और हमेशा रहने वाला है।
(सू०–ताहा–20/123 ता 127)

इरशादे बारी तआ़ाला है :–
और दोज़ख़ गुमराहों के सामने ज़ाहिर कर दी जायेगी और उनसे कहा जायेगा वो (बुत) कहाँ हैं जिन्हें तुम पूजते थे अल्लाह के सिवा क्या वो तुम्हारी मदद कर सकते हैं या खुद अपनी मदद कर सकते हैं (कि अपने आप को दोज़ख़ से बचा लें) सो वो (बुत भी) उस (दोज़ख़) में ओंधे मुँह गिरा दिये जायेंगे और गुमराह लोग (भी) और इबलीस की सारी फ़ौजें (भी वासिले जहन्नुम होंगी) वो (गुमराह लोग) उस (दोज़ख़) में बाहम झगड़ा करते हुये कहेंगे अल्लाह की क़सम हम–

खुली गुमराही में थे जब हम तुम्हें सब जहानों के रब के बराबर ठहराते थे और हमको (उन) मुजरिमों के सिवा किसी ने गुमराह नहीं किया सो (आज) न कोई हमारी सिफ़ारिश करने वाला है और न कोई गरम जोश दोस्त है सो काश हमें एक बार (दुनियाँ में) पलटना (नसीब) हो जाता तो हम मोमिन हो जाते बेशक इस (वाक़ेआ़) में (कुदरते इलाही की) बड़ी निशानी हैं और उनके अक्सर लोग मोमिन न थे।
(सू०–शुअ़रा–26/90 ता 103)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
हम उन्हें (दुनियाँ में) थोड़ा सा फ़ायदा पहुँचायेंगे फिर हम उन्हें बेबस करके सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ ले जायेंगे। (सू०–लुक़मान–31/24)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
दुनियाँ में (चन्द रोज़) लुत्फ़ अंदेज़ी के है फिर उन्हें हमारी ही तरफ़ पलटना है फिर हम उन्हें सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखायेंगे उसके बदले में जो वो कुफ़्र किया करते थे। (सू०–यूनुस–10/70)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
यही वो लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले में दुनियाँ की ज़िन्दगी ख़रीद ली है पस न उन पर से अ़ज़ाब हल्का किया जायेगा और न ही उनको मदद दी जायेगी। (सू०–बक़राह–2/86)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-

उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी बर्बादी होगी (अब) तुम उस (अ़ज़ाब) की तरफ़ चलो जिसे तुम झुठलाया करते थे (अब) तुम (दोज़ख़ के धुँऐं पर मबनी) उस साये की तरफ़ चलो जिसके तीन हिस्से हैं जो न तो ठन्डा साया है और न ही आग की तपिश से बचाने वाला है बेशक वो (दोज़ख़) ऊँचे महल की तरह (बड़े-बड़े) शोअ़ले और चिंगारियाँ उड़ाती है (यूँ भी लगता है) गोया वो (चिंगारियाँ) ज़र्द रंग वाले ऊँट हैं उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है ये ऐसा दिन है कि वो (उसमें) बोल भी न सकेंगे और न ही उन्हें इजाज़त दी जायेगी कि वो माअ़ज़रत कर सकें उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है ये फ़ैसले का दिन है (जिसमें) हम तुम्हें और सब पहले के लोगों को जमाअ़ करेंगे फिर अगर तुम्हारे पास (अ़ज़ाब से बचने का) कोई हीला है तो वो हीला मुझ पर चलाओ उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है।
(सू०-मुरसलात-77/28 ता 40)

इरशादे बारी तअ़ाला है :-

उस दिन झुठलाने वालों के लिये तबाही होगी जो लोग रोज़े जज़ा को झुठलाते हैं और उसे कोई नहीं झुठलाता सिवाये हर उस शख़्स के जो सरकश व गुनाहगार है जब उस पर हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि ये

तो अगले लोगों की कहानियाँ हैं ऐसा हरगिज़ नहीं बल्कि (हक़ीक़त ये है कि) उनके दिलों पर उन आअ़माले (बद) का जंग चढ़ गया है जो वो कमाया करते थे (इसलिये आयतें उनके दिलों पर असर नहीं करतीं) हक़ ये है कि बेशक उस दिन उन्हें अपने रब के दीदार से (महरुम करने के लिये) पर्दा कर दिया जायेगा फिर वो दोज़ख़ में झोंक दिये जायेंगे फिर उनसे कहा जायेगा ये वो (अ़ज़ाबे दोज़ख़) है जिसे तुम झुठलाया करते थे। (मुतफ़्फ़िफ़ीन–83/10 ता 17)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–

बेशक जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों का थोड़ी सी क़ीमत के ऐवज़ सौदा कर देते हैं यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कोई हिस्सा न होगा और न क़यामत के दिन अल्लाह उनसे कलाम फ़रमायेगा और न ही उनकी तरफ़ निगाह करेगा और न उन्हें पाकीज़गी देगा और उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।
(सू०–आले इमरान–3/77)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–

और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाये फिर वो उनसे मुँह फेर ले बेशक हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं।
(सू०–सज्दा–32/22)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

जिस दिन हम बड़ी सख़्त गिरफ़्त करेंगे तो (उस दिन) हम यक़ीनन इन्तिक़ाम ले ही लेंगे।
(सू०–दुख़ान–44/16)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

फिर वो उन्हें क़यामत के दिन रुसवा करेगा और इरशाद फ़रमायेगा मेरे वो शरीक कहाँ हैं जिनके हक़ में तुम (मोमिनों से) झगड़ा किया करते थे वो लोग जिन्हें इ़ल्म दिया गया है कहेंगे बेशक आज काफ़िरों पर (हर क़िस्म की) रुसवाई और बर्बादी है जिनकी रुहें फ़रिश्ते इस हाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वो अपनी जानों पर ज़ुल्म किये जा रहे होते हैं सो वो (रोज़े क़यामत) इताअ़त व फ़रमां बरदारी का इज़हार करेंगे (और कहेंगे कि) हम (दुनियाँ में) कोई बुराई नहीं करते थे क्यों नहीं बेशक अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम किया करते थे पस तुम दोज़ख़ के दरवाज़ों से दाख़िल हो जाओ तुम उसमें हमेशा रहने वाले हो सो तकब्बुर करने वालों का क्या ही बुरा ठिकाना है। (सू०–नह्ल–16/27 ता 29)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

जिस दिन ज़ालिमों को उन की माअ़ज़रत फ़ायदा न देगी और उनके लिये फटकार होगी और उनके लिये (दोज़ख़ का) बुरा घर होगा।
(सू०–मोमिन/ग़ाफिर–40/52)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
जो शख़्स उससे मुँह फेरेगा तो बेशक वो क़यामत के दिन सख़्त बोझ उठायेगा वो उस (अ़ज़ाब) में हमेशा रहेंगे और उनके लिये क़यामत के दिन बहुत ही बुरा बोझ होगा।
(सू०–ताहा–20/100,101)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और बहुत से चेहरे उस दिन ऐसे होंगे जिन पर गर्द पड़ी होगी (मज़ीद) उन (चेहरों) पर सियाही छाई होगी यही लोग काफ़िर व फ़ाज़िर (बद किरदार) होंगे।
(सू०–अबस–80/40 ता 42)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
(उस दिन) कई चेहरे सियाह होंगे तो जिनके चेहरे सियाह हो जायेंगे (तो उनसे कहा जायेगा) क्या तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया तो जो कुफ़्र तुम करते रहे थे सो उसके अ़ज़ाब (का मज़ा चख लो)।
(सू०–आले इमरान–3/106)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
उस दिन कितने ही चेहरे ज़लील व ख़्वार होंगे मुसीबत झेलते हुये थकन से चूर होंगे वो धहकती हुई आग में जा गिरेंगे उन्हें खौलते हुये चश्मे से पानी पिलाया जायेगा उनके लिये ख़ारदार खुश्क

ज़हरीली झाड़ियों के सिवा कोई खाना न होगा (ये खाना) न उन्हें सेर करेगा और न ही भूक मिटायेगा। (सू०–ग़ाशिया–88/2 ता 7)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो उन्हीं लोगों के लिये ज़िल्लत आमेज़ अ़ज़ाब होगा। (सू०–हज–22/57)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और उस दिन आप मुजरिमों को ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ देखेंगे उनके लिबास गन्धक (या ऐसे रोग़न) के होंगे (जो आग को खूब भड़काता है) और उनके चेहरों को आग ढ़ाँप रही होगी ताकि अल्लाह हर शख़्स को उनके (आअ़माल) का बदला दे दे जो उसने कमा रखे हैं बेशक अल्लाह हिसाब में जल्दी फ़रमाने वाला है।
(सू०–इब्राहीम–14/49 ता 51)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

जो लोगों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन में ना हक़ सरकशी व फ़साद फैलाते हैं ऐसे ही लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सू०–शूरा–42/42)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और आप उन्हें देखेंगे कि वो दोज़ख़ पर ज़िल्लत और ख़ौफ़ के साथ सर झुकाये हुये पेश किये–

जायेंगे (तो वो उसे चोरी–चोरी) छुपी निगाहों से देखते होंगे और ईमान वाले कहेंगे बेशक नुकसान उठाने वाले वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को और अपने अह्ल व अ़याल को क़यामत के दिन ख़सारे में ड़ाल दिया याद रखो बेशक ज़ालिम लोग दायमी अ़ज़ाब में (मुब्तिला) रहेंगे।
(सू०–शूरा–42/45)

–: तीन क़िस्म के लोगों पर अज़ाब :–

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन क़िस्म के लोगों से अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन कलाम नहीं फ़रमायेगा और न ही उनकी तरफ़ (निगाहे रहमत से) देखेगा और न ही उनको गुनाहों से पाक करेगा और उनको सख़्त अ़ज़ाब होगा और आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने ये कलिमात तीन बार दोहराये फिर आप से अ़र्ज़ किया गया कि वो कौन लोग हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया (तकब्बुर के बाइस) टख़नों से नीचे कपड़ा लटकाने वाला और देकर एहसान जताने वाला और झूठी क़सम खाकर सौदा बेचने वाला। (मुस्लिम–सही–1/202-ह०–293)
(नसाई–सुनन–2/167-ह०–2567)
(अबू दाऊद–सुनन–5/168-ह०–4087)
(नसाई–सुनन–3/556-ह०–5339)

-: तीन रियाकारों का बुरा अंजाम :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन बारगाहे खुदावन्दी में एक शहीद पेश होगा तो अल्लाह तआ़ला उसको अपनी नेअ़मतें शुमार करायेगा तो शहीद उन तमाम नेअ़मतों का इक़रार करेगा फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तुमने कौन सा अ़मल किया यानी इन नेअमतों के शुक्र में तो वो कहेगा ऐ अल्लाह मैंने तेरी राह में जिहाद किया यहाँ तक कि मैं शहीद हो गया फिर हुक्म होगा कि तू झूठा है बल्कि तूने जिहाद इस वजह से किया था कि तू लोगों में बहादुर मशहूर हो जाये और मख़्लूक़ कहे कि फुलां शख़्स बड़ा बहादुर है और तेरी बहादुरी दुनियाँ में मशहूर हो गई फिर उस शहीद के लिये हुक्म होगा कि इसे दोज़ख़ में ले जाओ तो फ़रिश्ते उसको घसीटते हुये मुँह के बल दोज़ख़ में डाल देंगे

फिर वो शख़्स पेश होगा जिसने इ़ल्मे दीन सीखा और दूसरों को सिखाया होगा तो अल्लाह तआ़ला उसको अपनी नेअ़मतें शुमार करायेगा तो वो शख़्स उन तमाम नेअ़मतों का इक़रार करेगा फिर रब तआ़ला फ़रमायेगा कि तूने इन नेअ़मतों के बदले क्या आअ़माल अंजाम दिये तो वो शख़्स

जवाब देगा ऐ अल्लाह मैंने तेरे लिये इ़ल्म सीखा और सिखाया उस पर हुक्म सुनाया जायेगा कि तू झूठा है बल्कि तूने इ़ल्म इसलिये सीखा और सिखाया ताकि तू दुनियाँ में अ़ालिम मशहूर हो जाये और तूने कु़रान इस वजह से पढ़ा ताकि लोग तुझको क़ारी कहें और तू इस नाम से शोहरत हासिल कर चुका फिर उस शख़्स को दोज़ख़ में डालने का हुक्म होगा तो फ़रिश्ते उसको घसीटते हुये मुँह के बल दोज़ख़ की आग में डाल देंगे और वो शख़्स दोज़ख़ की आग में जा गिरेगा

फिर वो शख़्स हाज़िर होगा जिसको अल्लाह तअ़ाला ने दुनियाँ में माल व दौलत अ़ता की तो अल्लाह तअ़ाला उस शख़्स को अपनी नेअ़मतें शुमार करायेगा तो वो शख़्स उन तमाम नेअमतों का इक़रार करेगा फिर हुक्म होगा कि तूने इन नेअ़मतों के बदले क्या अ़मल किये वो शख़्स अ़र्ज़ करेगा ऐ अल्लाह मैंने तेरी रज़ा और खुशनूदी हासिल करने के लिये मैने अपने माल व दौलत को तेरी राह में ख़र्च किया उस पर हुक्म होगा कि तू झूठा है बल्कि तू सख़ी कहलाने की वजह से ख़र्च करता था और तू दुनियाँ में सख़ी मशहूर हो गया फिर उस शख़्स को दोज़ख़ में डालने का हुक्म होगा तो फ़रिश्ते उसे घसीटते हुये मुँह के बल दोज़ख़ में डाल देंगे।
(नसाई–सुनन–2/349-ह०–3142)

-: तमाम याजूज माजूज दोज़ख़ में :-

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला क़यामत के दिन फ़रमायेगा ऐ आदम वो अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हूँ और इस हाज़िरी में मेरी सआ़ादत है और हर क़िस्म की भलाई तेरे ही हाथ में है फिर अल्लाह तआ़ाला फ़रमायेगा ऐ आदम दोज़ख़ का लश्कर अलग कर दो तो आदम (अ़लैहिस्सलाम) अ़र्ज़ करेंगे कि दोज़ख़ का लश्कर कितना है तो अल्लाह तआ़ाला फ़रमायेगा हर हज़ार में से नौ सौ निन्नयानवे (999) उस वक़्त ख़ौफ़ के बाइस बच्चे बूढ़े हो जायेंगे और हर हामला अपना हमल गिरा देगी और तुम लोगों को बेहोश होते देखोगे हालाँकि वो बेहोश न होंगे बल्कि अल्लाह का अ़ज़ाब बड़ा सख़्त होगा सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह वो एक शख़्स हम में से कौन होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम खुश हो जाओ क्योंकि वो एक शख़्स तुम में से होगा और नौ सौ निन्नयानवे (999) याजूज माजूज के होंगे नीज़ फ़रमाया कि मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम अह्ले जन्नत का निस्फ़ (आधा हिस्सा) होगे। (मुस्लिम–सही–1/351-ह०–532)
(बुख़ारी–सही–3/527-ह०–3348, 6530)

-: मीज़ान का बयान :-

मीज़ान एक क़िस्म का तराजू है जिस पर इन्सानों व जिन्नों के आअ़माल तौले जायेंगे पस जिसकी नेकियों का पलड़ा भारी होगा तो वो ऐशो इशरत व मसर्रत के साथ जन्नत में क़याम पज़ीर होगा और जिसका पलड़ा हल्का रहेगा यानी जिसकी बुराईयाँ व गुनाह ज़्यादा होंगे उसका ठिकाना दोज़ख़ होगा।

-: क़यामत के दिन मख़लूक़ तीन जमाअ़तों में तक़सीम होगी :-

रोज़े क़यामत मख़लूक़ तीन जमाअ़तों में तक़सीम होगी एक वो होंगे जिनके पास कोई नेकी न होगी तो जहन्नुम से एक सियाह गर्दन निकलेगी और उन लोगों को उचक ले जायेगी और वो जहन्नुम में चले जायेंगे और दूसरी जमाअ़त में वो लोग होंगे जिन पर कोई गुनाह न होगा तो एक मुनादी आवाज़ देगा कि जो लोग हर हाल में अल्लाह की रज़ा पर राजी रहे और सब्र व शुक्र पर क़ायम रहे और गुनाहों से बचते रहे और नेक आअ़माल करते रहे वो लोग खड़े हो जाये और जन्नत की तरफ़ चल पड़े और तीसरी जमाअ़त में वो लोग होंगे जिनकी नेकियाँ व गुनाह मिले जुले होंगे लेकिन उन्हें माअ़लूम न होगा कि उनके गुनाह-

ज़्यादा है या उनकी नेकियाँ ज़्यादा है तो उनको ये बात बताने के लिये अल्लाह तआ़ला मीज़ान क़ायम फ़रमायेगा हालाँकि अल्लाह तआ़ला से कोई बात छुपी नहीं है वो हर ग़ैब का जानने वाला और हर ज़ाहिर व पोशीदा का जानने वाला आ़लिमुल ग़ैब है मगर वो लोगों को उनके गुनाह व नेकियों के कम या ज़्यादा होने की पहचान करायेगा ताकि मुआ़फ़ी के वक़्त उसका फ़ज़्लो करम ज़ाहिर हो और अ़ज़ाब के वक़्त उसका अ़द्ल व इन्साफ़ ज़ाहिर हो ताकि कोई ये न कहे कि मेरे साथ इन्साफ़ नहीं हुआ और लोगों की आँखें उस तराज़ू पर लगी होंगी व दिल काँप रहे होंगे और ये वक़्त निहायत ख़ौफ़ का वक़्त होगा।

इरशादे बारी तआ़ला है :-

जब वाक़ेअ़ होने वाली (क़यामत) वाक़ेअ़ हो जायेगी उस के वाक़ेअ़ होने में कोई झूठ नहीं है (वो क़यामत किसी को) पस्त कर देने वाली (और किसी को) बुलन्द कर देने वाली है जब ज़मीन कंपकपा कर शदीद लरज़ने लगेगी और पहाड़ टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जायेंगे फिर वो गुबार बनकर मुन्तशिर हो जायेंगे और तुम लोग तीन क़िस्मों में बंट जाओगे सो (एक) दाँयी जानिब वाले दाँयी जानिब वालों का क्या कहना और (दूसरे) बाँयी जानिब वाले क्या (ही बुरे हाल में होंगे) बाँयी जानिब वाले और (तीसरे) सबक़त ले जाने वाले वो तो सबक़त करने वाले ही हैं-

यही लोग (अल्लाह के) मुक़र्रब होंगे नेअ़मतों के बाग़ात में रहेंगे। (सू०–वाक़ेआ़–56/1 ता 12)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
पस वो शख़्स की जिस (के आअ़माल) के पलड़े भारी होंगे तो वो खुश गवार ऐश व मसर्रत में होगा और जिस शख़्स के (आअ़माल के) पलड़े हल्के होंगे तो उसका ठिकाना हाविया (दोज़ख़ का गढ़ा) होगा और आप क्या जानते है कि हाविया क्या है (वो दोज़ख़ की) सख़्त दहकती आग (का इन्तिहाई गहरा गढ़ा) है।
(सू०–क़ारिया–101/6 ता 11)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और उस दिन (आअ़माल का) तौला जाना हक़ है सो जिनके (नेकियों के) पलड़े भारी होंगे तो वही लोग कामयाब होंगे और जिनके (नेकियों के) पलड़े हल्के होंगे तो यही वो लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को नुकसान पहुँचाया इस वजह से कि वो हमारी आयतों के साथ जुल्म करते थे।
(सू०–आअ़राफ़–7/8,9)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
पस जिनके पलड़े (ज़्यादा आअ़माल के बाइस) भारी होंगे तो वही लोग कामयाब व कामरान होंगे और जिनके पलड़े (आअ़माल का वज़न न होने के बाइस) हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने–

अपने आप को नुकसान पहुँचाया वो हमेशा दोज़ख़ में रहने वाले हैं उनके चेहरों को आग झुलस देगी और उसमें उनकी सूरतें बिगड़ जायेंगी (फिर उनसे कहा जायेगा) क्या तुम पर मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनायी जाती थीं फिर तुम उसे झुटलाया करते थे वो कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आ गयी थी और हम यक़ीनन गुमराह क़ौम थे ऐ हमारे रब तू हमें यहाँ से निकाल दे फिर अगर हम दोबारा वही काम करें तो बेशक हम ज़ालिम होंगे इरशाद होगा अब इसी में ज़िल्लत के साथ पड़े रहो और मुझसे बात न करो बेशक मेरे बन्दों में से एक तबक़ा ऐसा भी था जो (मेरे हुजूर) अ़र्ज़ किया करता था ऐ हमारे रब हम ईमान ले आये हैं पस तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमां और तू ही सबसे बेहतर रहम फ़रमाने वाला है तो तुम उनका मज़ाक उड़ाया करते थे यहाँ तक कि उन्हीं (के साथ छेड़ छाड़) ने तुम्हें मेरी याद तक से ग़ाफ़िल कर दिया और तुम उनकी हंसी उड़ाते रहे बेशक आज मैंने उन्हें उनके सब्र का जो वो करते रहे ये सिला अ़ता फ़रमाया है कि वो कामयाब हो गये।
(सू०–मुमिनून–23/102 ता 111)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और हम क़यामत के दिन अ़द्ल व इन्साफ़ के तराजू रख देंगे सो किसी जान पर कोई जुल्म न

किया जायेगा और अगर (किसी का अ़मल) राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे भी हाज़िर कर देंगे और हम हिसाब करने को काफ़ी हैं। (सू०–अम्बिया–21/47)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
आज के दिन हर जान को उसकी कमायी का बदला दिया जायेगा आज कोई ना इन्साफ़ी न होगी बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (सू०–ग़ाफ़िर/मोमिन–40/17)

कलमा ए शहादत मीज़ान पर भारी होगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया रोज़े क़यामत मेरी उम्मत में से एक शख़्स को पुकारा जायेगा और उसके साथ निन्नयानवे (99) दफ़्तर (आअ़माल नामों के) रख दिये जायेंगे और हर दफ़्तर इतना बड़ा होगा कि जहाँ तक निगाह जाये फिर अल्लाह तआ़ला उससे पूछेगा क्या तू इनमें से किसी अ़मल का इन्कारी है तो वो अ़र्ज़ करेगा नहीं फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या मेरे क़ातिब (फ़रिश्तों ने) तुझ पर कोई जुल्म किया है वो कहेगा नहीं फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तेरे पास कोई नेकी है वो कहेगा ऐ मेरे रब मेरे पास तो कोई नेक अ़मल नहीं है

फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि आज के दिन तुझ पर कोई ज़्यादती नहीं की जायेगी और तेरी बहुत सी नेकियाँ मेरे पास मौजूद हैं फिर एक कागज़ निकाला जायेगा जिस पर अशहदु अन ला इलाहा इल्लल्लाहू व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलूह लिखा होगा वो शख़्स कहेगा कि मेरे इतने सारे आअ़माल नामों के मुक़ाबले ये एक कागज़ मेरे क्या काम आयेगा फिर एक पलड़े में सब दफ़्तर (उसके आअ़माल नामे) रख दिये जायेंगे और दूसरे पलड़े में वो कागज़ रख दिया जायेगा तो वो सब दफ़्तर का पलड़ा उठ जायेगा और एक कागज़ का पलड़ा झुक जायेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/403-ह०–4300)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/417-ह०–2639)

-: हौज़े कौसर का बयान :-

इरशादे बारी तआ़ला है :-
बेशक हमने आपको (हर ख़ैर व फ़जीलत में) बे इन्तिहां कसरत बख़्शी है।
(सू०-कौसर-108/1)

वज़ाहत- कौसर से मुराद हौज़े कौसर या नहरे जन्नत भी है और कुरान व नबूवत व हिकमत भी है और फज़ाइल व मुअ़जिज़ात की कसरत या उम्मत की कसरत भी मुराद ली गई है और रिफ़अ़ते ज़िक्र और ख़ुलके़ अ़ज़ीम भी मुराद है और दुनियाँ व आख़िरत की नेअ़मतें भी हैं और नुसरते इलाहिया और कसरते फुतूहात भी मुराद हैं और रोज़े क़यामत मक़ामे महमूद व शफ़ाअ़ते ज़ुम्मा भी मुराद लिया गया है।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को औंघ आ गई फिर आप मुस्कुराते हुये उठे तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया कि आप क्यों मुस्कुराये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझ पर अभी-अभी एक सूरत नाज़िल हुई है फिर आपने पढ़ा "इन्ना आअ़तैना कल कौसर...." जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने इसे पूरा-

पढ़ लिया तो फ़रमाया क्या तुम जानते हो कौसर क्या है सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं आपने फ़रमाया ये एक नहर है जो मेरे रब ने मुझे जन्नत में देने का वाअ़दा फ़रमाया है और इस पर कसीर ख़ैर होगी इस पर मेरा हौज़ होगा जिस पर क़यामत के दिन मेरी उम्मत के लोग आयेंगे और इसके पीने के बर्तन सितारों की ताअ़दाद से भी ज़्यादा होंगे। (अबू दाऊद–सुनन–6/601-ह०–4747)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब मुझे मेअ़राज हुई तो मैं एक नहर के किनारे पर पहुँचा जिसके दोनों किनारों पर खोलदार ख़ैमे लगे हुये थे मैंने पूछा ऐ जिबरईल ये नहर कैसी है तो उन्होंने बताया कि ये कौसर है जो अल्लाह तआ़ला ने आपको अ़ता फ़रमाई है।
(बुख़ारी–सही–4/889-ह०–4964)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरा हौज़ इतना बड़ा है कि उसका फ़ासला बैतुल मुक़द्दस से काअ़बा मुअज़्ज़मा तक है और उसका पानी दूध की तरह सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है और उसके सोने व चाँदी के बर्तनों की ताअ़दाद–

आसमान के सितारों से भी ज़्याादा हैं उस हौज़ पर मेरी उम्मत के लोग जो मेरे ताबेदार हैं वो आयेंगे और मेरे हौज़ से पियेंगे और जो शख़्स उस हौज़ में से एक घूँट भी पियेगा उसे फिर कभी प्यास न लगेगी और मेरे हौज़ पर सबसे पहले मेरी उम्मत के फुक़रा व मुहाजिरीन और मैले कुचैले कपड़ों वाले आयेंगे सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप हम लोगों को (यानी अपनी उम्मत के लोगों को) पहचान लेंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ तुम्हारे मुँह और हाथ सफ़ेद होंगे वुजू के निशान से और ये निशान किसी और उम्मत के न होंगे। (इब्ने माजा–3/403-ह०–4301,4302,4303)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/261-ह०–2444)
(बुख़ारी–सही–6/120-ह०–6579)
(मुस्लिम–सही–1/371-ह०–581)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे हौज़ के बर्तन आसमान के सितारों की ताअ़दाद से ज़्यादा हैं और जो इससे पियेगा और वो कभी प्यासा न होगा इस हौज़ में जन्नत के दो परनाले बहते हैं इस हौज़ की लम्बाई चौड़ाई बराबर है इसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। (मुस्लिम–सही–6/25-ह०–5989)
(नसाई–सुनन–1/366-ह०–907)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कौसर जन्नत में एक नहर है उसके दोनों किनारे सोने के बने हुये हैं और पानी बहने के मक़ाम में याकूत और मोती हैं उसकी मिट्टी मुश्क से ज़्यादा खुश्बूदार है और उसका पानी शहद से ज़्यादा मीठा है और बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/416-ह०–4334)

➡ हज़रत जुन्दब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारा पेश ख़ेमा होऊँगा यानी आगे जाकर तुम्हारे आने का मुन्तज़िर रहूँगा और तुम्हारे पिलाने का सामान दुरुस्त करुँगा।
(मुस्लिम–सही–6/20-ह०–5966)

–: होज़े कौसर पर कुछ लोग रोक दिये जायेंगे :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को औंघ आ गई फिर आप मुस्कुराते हुये उठे तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप क्यों मुस्कुराये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फरमाया–

कि मुझ पर अभी–अभी एक सूरत नाज़िल हुई है फिर आपने पढ़ा "इन्ना आअ़तैना कल कौसर.." जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने इसे पूरा पढ़ लिया तो फ़रमाया क्या तुम जानते हो कौसर क्या है सहाबा ने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं फिर आपने फ़रमाया ये एक नहर है जो मेरे रब ने मुझे जन्नत में देने का वाअ़दा फ़रमाया है और इस पर मेरा हौज़ होगा जिस पर क़यामत के दिन मेरी उम्मत के लोग आयेंगे और इसके पीने के बर्तन सितारों की ताअ़दाद से भी ज़्यादा होंगे फिर एक शख़्स उसमें से बाहर खींचा जायेगा तो मैं कहूँगा ऐ मेरे रब ये तो मेरी उम्मत में से है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा (ऐ महबूब) आप नहीं जानते कि आपके बाद जो इसने किया है (यानी दीन से फिर गया और शरीअ़ते इस्लाम के ख़िलाफ़ काम किये) फिर मैं कहूँगा तू दूर हो तू दूर हो जिसने मेरे बाद अपना दीन बदल लिया। (नसाई–सुनन–2/306-ह०–907)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं अपने हौज़ पर तुमसे पहले मौजूद रहूँगा और तुम में से कुछ लोग मेरे सामने लाये जायेगे फिर उन्हें मेरे सामने से हटा दिया जायेगा तो मैं कहूँगा ऐ मेरे रब ये तो मेरे साथी हैं तो मुझसे–

कहा जायेगा (ऐ महबूब) आप नहीं जानते कि इन्होंने आपके बाद दीन में क्या क्या नई नई चीज़ें ईज़ाद कर ली थीं फिर मैं कहूँगा दूरी हो उस शख़्स के लिये जिसने मेरे बाद दीन में तब्दीली कर ली थी।
(बुख़ारी–सही–6/118-ह०–6576)
(बुख़ारी–सही–6/121-ह०–6584)

➡ हज़रत अबू हाज़िम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारा पेश ख़ैमा होऊँगा और जो वहाँ आयेगा और मेरे उस हौज़ से पियेगा तो फिर वो कभी प्यासा न रहेगा और मेरे सामने कुछ लोग आयेंगे जो मुझे पहचानते होंगे और मैं उन्हें पहचानता होऊँगा फिर वो मेरे पास आने से रोक दिये जायेंगे फिर मैं कहूँगा ऐ मेरे रब ये तो मेरे लोग हैं तो जवाब मिलेगा कि आप नहीं जानते जो इन्होंने आपके बाद किया है (यानी काफ़िर या मुनाफ़िक़ या ख़ारजी) हो गये तो फिर मैं कहूँगा कि दूर हो दूर हो जिसने मेरे बाद अपना दीन बदल लिया था।
(मुस्लिम–सही–6/21-ह०–5968,5969)

रोज़े क़यामत हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का मक़ाम व इ़ज़्ज़तो इकराम

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब लोग क़ब्रों से उठाये जायेंगे तो सबसे पहले मैं अपनी क़ब्र से बाहर आऊँगा और जब तमाम लोग बारगाहे खुदा वन्दी में इकट्ठे होंगे तो मैं ही उनका पेशवा होऊँगा और मैं उनका ख़तीब होऊँगा और जब सब लोग ख़ामोश होंगे और अल्लाह तआ़ला से कोई भी कलाम न कर सकेगा तो मैं ही उनकी शफ़ाअ़त करूँगा और जब लोग मायूस हो जायेंगे तो मैं ही उनको खुशख़बरी देने वाला होऊँगा उस दिन बुजुर्गी और रहमत की चाबियाँ मेरे ही हाथ में होंगी और मेरे ही हाथ में हम्दे इलाही का झण्डा होगा और मैं ही अपने रब के हुज़ूर तमाम औलादे आदम में सबसे ज़्यादा मुकर्रम व बुजुर्ग हूँ और उस दिन मेरे गिर्द एक हज़ार खुद्दाम तवाफ़ कर रहे होंगे वो गर्द व गुबार से महफ़ूज़ सफ़ेद खूबसूरत बिखरे हुये मोती लग रहे होंगे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1016-ह०–3610)
(दारमी सुनन–1/102-ह०–49)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं अल्लाह का हबीब हूँ लेकिन मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं और मैं रोज़े क़यामत हम्द का झण्डा उठाऊँगा और मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं और मैं पहला शफ़ीअ़ (शफ़ाअ़त करने वाला) हूँ और मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं और मैं पहला वो शख़्स हूँ जो जन्नत की कुन्डी खट खटाऊँगा और मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं और अल्लाह तआ़ला जन्नत को मेरे लिये खोल देगा और मुझे उसमें दाख़िल फ़रमायेगा और मेरे साथ फुक़रा मोमिनीन होंगे और मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं और मैं ही तमाम अव्वलीन व आख़िरीन में सबसे ज़्यादा मुकर्रम व मुहतरम हूँ और मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1018-ह०–3616)
(दारमी–सुनन–1/100-ह०–48)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं सबसे पहला शख़्स हूँ जिसकी ज़मीन (क़ब्र) शक़ होगी फिर मुझे जन्नत के जोड़ो में से एक जोड़ा पहनाया जायेगा फिर मैं अ़र्श की दाँयी जानिब खड़ा होऊँगा और उस मुक़ाम पर मख़लूक़ात में से मेरे सिवा कोई खड़ा न होगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1017-ह०–3612)

अल्लाह तआ़ाला हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) को मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमायेगा

इरशादे बारी तआ़ाला है :-
यक़ीनन आपका रब आपको मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमायेगा। (सू०-बनी इसराईल-17/79)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं रोज़े क़यामत मक़ामे महमूद पर खड़ा किया जाऊँगा तो एक अन्सारी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मक़ामे महमूद से क्या मुराद है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस दिन तुम्हें नंगे पाँव व नंगे बदन और ग़ैर मख़तून (बग़ैर ख़त्ना) के जमाअ़ किया जायेगा पस उस दिन सबसे पहले जिसे लिवास पहनाया जायेगा वो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम होंगे फिर अल्लाह तआ़ाला फ़रमायेगा ऐ फ़रिश्तो मेरे ख़लील को लिवास पहनाओ पस दो सफ़ेद मुलायम कपड़े लाये जायेंगे पस हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) उन्हें ज़ैबे तन फ़रमायेंगे फिर वो अ़र्श की जानिब रुख़ करके तशरीफ़ फ़रमां होंगे फिर उनके बाद मुझे लिवास लाकर दिया जायेगा तो मैं उसे पहनूँगा फिर मैं अ़र्श की दाँयी जानिब ऐसे मक़ामे अरफ़ाअ़ (निहायत बुलन्द) पर खड़ा-

होऊँगा जहाँ मेरे सिवा कोई और नहीं होगा और मुझ पर तमाम अव्वलीन व आख़िरीन रश्क करेंगे
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/296-ह०–3385)
(दारमी–सुनन–2/509-ह०–2842)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/98-ह०–10017)
(अहमद बिन हम्बल–अलमुस्नद–1/572-ह०–3786)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है वो फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन सब लोग गिरोह दर गिरोह हो जायेंगे और हर उम्मत अपने अपने नबी के पीछे होगी और अ़र्ज़ करेगी ऐ फुलां शफ़ाअ़त फ़रमाइये यहाँ तक कि शफ़ाअ़त की बात आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) पर आकर ख़त्म होगी पस उस रोज़ अल्लाह तआ़ला शफ़ाअ़त के लिये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमायेगा।
(बुख़ारी–सही–4/646-ह०–4718)
(नसाई–सुनन कुबरा–6/381-ह०–295)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) तमाम अम्बिया किराम के इमाम होंगे और सब अम्बिया हुजूर के झण्डे के नीचे होंगे

➡ हज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला–

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़यामत के दिन मैं सारे अम्बिया का इमाम व उनका ख़तीब होऊँगा और उनकी शफ़ाअ़त करने वाला होऊँगा और मैं ये फ़ख़्र के लिये नहीं कहता बल्कि हक़ तआ़ला ने मुझे ये नेअ़मत अ़ता फ़रमाई है उसको मैं ज़ाहिर करता हूँ।

(इब्ने माजा–सुनन–3/410-ह०–4314)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मैं (तमाम) औलादे आदम का क़ाइद (सरदार) होऊँगा और मुझे (इस पर) फ़ख़्र नहीं और हम्द का झण्डा मेरे हाथ में होगा और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं और हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) व तमाम अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) उस दिन मेरे झण्डे के नीचे होंगे और मुझे (इस पर) कोई फ़ख़्र नहीं और मैं वो शख़्स होऊँगा जिसके लिये सबसे पहले ज़मीन शक़ होगी और मुझे (इस पर) कोई फ़ख़्र नहीं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोग तीन बार ख़ौफ ज़दा होंगे फिर वो हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की ख़िदमत में हाज़िर होकर शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त करेंगे फिर दीगर अम्बिया–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के पास जाकर दरख़्वास्त करेंगे फिर बिल आख़िर लोग मेरे पास आयेंगे और मैं उनके साथ (उनकी शफ़ाअ़त के लिये)–

चलूँगा रावी कहते हैं हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) ने फ़रमाया गोया कि मैं अब भी हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को देख रहा हूँ कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं जन्नत के दरवाज़े की ज़ंजीर खट खटाऊँगा फिर पूछा जायेगा कौन तो जवाब दिया जायेगा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) चुनाँचा वो मुझे खुश आमदीद कहते हुये मेरे लिये दरवाज़ा खोलेंगे फिर मैं (बारगाहे इलाही में) सज्दा रेज़ हो जाऊँगा तो अल्लाह तआ़ला मुझ पर अपनी हम्दो सना का कुछ हिस्सा इत्तलाअ़ फ़रमायेगा फिर मुझसे कहा जायेगा सर उठायें माँगे अ़ता किया जायेगा और शफ़ाअ़त कीजिये आपकी शफ़ाअ़त कुबूल की जायेगी और कहिये आपकी बात सुनी जायेगी फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया यही वो मक़ामे महमूद है जिसके बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि यक़ीनन आपका रब आपको मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमायेगा।

(सू०–बनी इसराईल–17/79)

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/713-ह०–3148)

(इब्ने माजा–सुनन–3/406-ह०–4308)

(इब्ने हिब्बान–सही–14/398-ह०–4678)

(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–5/4-ह०–11000)

–: शफ़ाअ़त का बयान :–

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
उस दिन लोग शफ़ाअ़त के मालिक न होंगे सिवाए उनके जिन्होंने (खुदाये) रहमान से वाअ़दा (शफ़ाअ़त) ले लिया है। (सू०–मरयम–19/87)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
और उस दिन से डरो जिस दिन कोई जान किसी दूसरे की तरफ़ से कुछ बदला न दे सकेगी और न उसकी तरफ़ से (किसी ऐसे शख़्स की) कोई शिफ़ारिश कुबूल की जायेगी (जिसे इज़्ने इलाही हासिल न होगा) और न उसकी तरफ़ से (जान छुड़ाने के लिये) कोई मुअ़ावज़ा कुबूल किया जायेगा और न (अम्रे इलाही के ख़िलाफ़) उनकी मदद की जायेगी। (सू०–बक़राह–2/48)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
कौन ऐसा शख़्स है जो उसके हुजूर उसके इज़्न के बग़ैर सिफ़ारिश कर सके (सू०–बक़राह–2/255)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
उस दिन शफ़ाअ़त सूद मन्द न होगी सिवाये उस शख़्स (की सिफ़ारिश) के जिसे (खुदाये) रहमान ने इज़्न (व इजाज़त) दे दी है और जिसकी बात से वो राज़ी हो गया है। (सू०–ताहा–20/109)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
(और) उसके हुजूर उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। (सू०-यूनुस-10/3)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और उसकी बारगाह में शफ़ाअ़त नफ़अ़ न देगी सिवाये उसके जिसके हक़ में उसने इज़्न दिया होगा। (सू०-सबा-34/23)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
जिस दिन जिबरईल और तमाम फ़रिश्ते सफ़ बस्ता खड़े होंगे (और) कोई लब कुशाई न कर सकेगा सिवाये उस शख़्स के जिसे खुदाये रहमान ने इज़्ने (शफ़ाअ़त) दे रखा है। (सू०-नबा-78/38)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) शफ़ाअ़त फ़रमायेंगे और दोज़ख़ से लोगों को बाहर निकालेंगे

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं रोज़े क़यामत तमाम इन्सानों का सरदार हूँ अल्लाह तआ़ला अगलों और पिछलों को एक चटयल मैदान में जमाअ़ फ़रमायेगा और सूरज उनके बहुत नज़दीक आ जायेगा उस वक़्त बाअ़ज़ लोग कहेंगे क्या तुम नहीं देखते कि तुम किस हाल में हो और किस मुसीबत में मुब्तिला हो सो ऐसे शख़्स को तलाश-

क्यों नहीं करते जो तुम्हारे रब के हुजूर तुम्हारी शफ़ाअ़त करे बाअ़ज़ लोग कहेंगे तुम सबके बाप तो हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) हैं तुम उनके पास जाओ फिर वो उनकी ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ करेंगे ऐ सय्यदना आदम आप अबुल बशर हैं क्या आप अपने रब के हुजूर हमारी शफ़ाअ़त नहीं फ़रमायेंगे क्या आप नहीं देखते कि हम किस मुसीबत में गिरफ़्तार है और हम किस हाल को पहुँच गये हैं फिर आदम (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमायेंगे कि मेरा रब आज इतना ग़ज़ब नाक है कि इतना ग़ज़ब नाक न वो पहले हुआ था और न कभी बाद में होगा मुझे उसने एक दरख़्त से मना फ़रमाया था तो मुझसे उसके हुक्म में लग़ज़िश हुई लिहाज़ा मुझे अपनी फ़िक्र है तुम किसी दूसरे के पास चले जाओ और तुम हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) के पास जाओ

तब लोग हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) की बारगाह में हाज़िर होकर अ़र्ज़ करेंगे ऐ सय्यदना नूह (अ़लैहिस्सलाम) आप अहले ज़मीन के सबसे पहले रसूल हैं और अल्लाह तआ़ला ने आपका नाम शकूर (शुक्र गुज़ार बन्दा) रखा है फिर लोग उनके पास जायेंगे और कहेंगे कि क्या आप नहीं देखते कि हम किस मसाइबो आलाम में गिरफ़्तार हैं क्या आप अपने रब के हुजूर हमारी शफ़ाअ़त नहीं फ़रमायेंगे तब सय्यदना हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमायेंगे मेरे रब ने आज ग़ज़ब

का वो इज़हार फ़रमाया है कि इससे पहले ऐसा इज़हार कभी नहीं फ़रमाया था और न आइन्दा ऐसा इज़हार फ़रमायेगा मुझे खुद अपनी फ़िक्र है तुम किसी और के पास चले जाओ फिर इसी तरह लोग दीगर अम्बिया हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा (अ़लैहिमुस्सलाम) वग़ैराह के पास जायेंगे और इसी तरह का वो न में जबाब पायेंगे बिल आख़िर उन्हें कहा जायेगा कि तुम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमते अक़दस में जाओ फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया-

फिर लोग मेरे पास आयेंगे तो मैं अ़र्श के नीचे बारगाहे इलाही में सज्दा करूँगा और (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) फ़रमाया जायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अपना सर उठाओ और शफ़ाअ़त करो आपकी शफ़ाअ़त कुबूल की जायेगी और माँगो आपको अ़ता किया जायेगा और आपकी बात सुनी जायेगी फिर मैं अ़र्ज़ करूँगा ऐ मेरे रब मेरी उम्मत-मेरी उम्मत कहा जायेगा जाओ दोज़ख़ से उन लोगों को निकाल लाओ जिनके दिलों में एक जौ के बराबर ईमान है फिर मैं जाऊँगा और ताअ़मीले हुक्म करूँगा फिर मैं वापस आऊँगा व ताअ़रीफ़ी कलिमात से अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना करूँगा और अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर सज्दे में

गिर जाऊँगा फिर मुझसे कहा जायेगा अपना सर उठाओ और कहो आपकी बात सुनी जायेगी और सवाल करो आपका सवाल पूरा किया जायेगा और सिफ़ारिश करो आपकी सिफ़ारिश कुबूल की जायेगी मैं अ़र्ज़ करुँगा ऐ मेरे रब मेरी उम्मत-मेरी उम्मत मुझसे कहा जायेगा जाओ उन लोगों को दोज़ख़ से निकाल लाओ जिनके दिलों में ज़र्रा या राई के दाने के बराबर भी ईमान है चुनांचा मैं जाऊँगा और ताअ़मीले हुक्म करुँगा फिर मैं वापस आऊँगा और ताअ़रीफ़ी कलिमात से रब तआ़ला की हम्द व सना करुँगा और अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर सज्दे में गिर जाऊँगा

फिर मुझसे कहा (जायेगा) अपना सर उठाओ कहो आपकी बात सुनी जायेगी सवाल करो आपका सवाल पूरा किया जायेगा सिफ़ारिश करो आपकी सिफ़ारिश कुबूल की जायेगी मैं अ़र्ज़ करुँगा ऐ मेरे रब मेरी उम्मत-मेरी उम्मत मुझे कहा जायेगा कि जाओ और उन लोगों को दोज़ख़ से निकाल लाओ जिनके दिलों में राई के दाने से भी कम ईमान हो मैं जाऊँगा और ताअ़मीले हुक्म करुँगा फिर मैं चौथी बार वापस आऊँगा और ताअ़रीफ़ी कलिमात से अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना करुँगा फिर अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर सज्दे में गिर जाऊँगा तब अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अपना सर उठाओ जो कहोगे उसे सुना जायेगा

जो माँगोगे दिया जायेगा जो शफ़ाअ़त करोगे कुबूल की जायेगी मैं अ़र्ज़ करुँगा ऐ मेरे रब मुझे उन लोगों को भी जहन्नुम से निकालने की इजाज़त दे जिन्होंने सिर्फ़ ला इलाहा इल्लल्लाह ही कहा था फिर अल्लाह तबारक व तअ़ाला मुझे उन लोगों को भी निकालने की इजाज़त देगा फिर मैं दोज़ख़ से उन लोगों को भी निकालूँगा।

(बुख़ारी–सही–6/624-ह०–7510)
(बुख़ारी–सही–3/515-ह०–3340)
(मुस्लिम–सही–1/329-ह०–480)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/253-ह०–2434)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला क़यामत के दिन लोगों को जमाअ़ फ़रमायेगा उस वक़्त लोग कहेंगे अगर हम अपने रब के हुजूर किसी सिफ़ारशी को ले जायें तो मुम्किन है कि हम इस हालत से निजात पा जाये चुनांचा वो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के पास जायेंगे और अ़र्ज़ करेंगे कि आप ही वो नबी हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने अपने दस्ते कुदरत से तख़लीक़ किया और आपके अन्दर अपनी रुह फूँकी चुनांचा फ़रिश्तों को हुक्म दिया तो उन्होंने आपको सज्दा किया लिहाज़ा आप हमारे रब के हुजूर हमारे लिये सिफ़ारिश कर दें तो वो कहेंगे कि मैं इस–

लायक़ नहीं हूँ फिर वो अपनी लग़ज़िश का ज़िक्र करके कहेंगे कि तुम नूह (अ़लैहिस्सलाम) के पास चले जाओ वो पहले रसूल हैं जिन्हें रब तआ़ला ने मबऊ़स फ़रमाया है चुनांचा लोग हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) के पास आयेंगे तो वो भी यही जवाब देंगे कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ और वो अपनी एक लग़ज़िश का ज़िक्र करके कहेंगे कि तुम इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के पास जाओ जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपना ख़लील बनाया था फिर लोग उनके पास जायेंगे तो वो भी यही कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नही हूँ और वो अपनी एक ख़ता का ज़िक्र करके कहेंगे कि तुम मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास जाओ उनसे अल्लाह तआ़ला हम कलाम हुआ था फिर लोग मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास जायेंगे तो वो भी यही कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ और वो अपनी एक लग़ज़िश का ज़िक्र करके कहेंगे कि तुम ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास जाओ फिर लोग हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास जायेंगे तो वो भी कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ तुम हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के पास जाओ

चुनांचा लोग मेरे पास आयेंगे तो मैं अपने रब से इजाज़त तलब करूँगा फिर जब मैं अपने रब को देखूँगा तो सज्दा रेज़ हो जाऊँगा फिर अल्लाह तआ़ला जितनी देर चाहेगा मुझे सज्दे में पड़ा रहने देगा फिर मुझसे कहा जायेगा अपना–

सर सज्दे से उठाओ और माँगो आपको अ़ता किया जायेगा और गुफ़्तगू करो आपकी बात सुनी जायेगी और सिफ़ारिश करो आपकी सिफ़ारिश कुबूल की जायेगी उस वक़्त मैं अपने रब की ऐसी हम्द व सना करुँगा जिसकी अल्लाह तआ़ला ने मुझे ताअ़लीम दी होगी फिर मैं सिफ़ारिश करुँगा तो मेरे लिये एक हद मुक़र्रर कर दी जायेगी फिर मैं लोगों को दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल करुँगा फिर मैं अल्लाह के हुजूर जाऊँगा और सज्दे में गिर जाऊँगा और दूसरी, तीसरी या चौथी बार इसी तरह सज्दे में गिर जाऊँगा हत्ता कि जहन्नुम में वही लोग रह जायेंगे जिन्हें कुरान ने रोक लिया होगा। (हज़रत क़तादा ने कहा कि इससे मुराद वो लोग हैं जिन पर जहन्नुम में हमेशा रहना वाजिब होगा) (बुख़ारी–सही–6/110-ह०–6565)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया रोज़े क़यामत मेरी शफ़ाअ़त की सआ़दत सबसे ज़्यादा उसे हासिल होगी जिसने कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह ख़ुलूस दिल से पढ़ा होगा (बुख़ारी–सही–6/113-ह०–6570)

➡ इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक क़ौम हुजूर

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की शफ़ाअ़त से जहन्नुम से निकलेगी जब वो जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे तो (वहाँ) उन्हें जहन्नुमी के नाम से पुकारा जायेगा।
(बुख़ारी–सही–6/112-ह०–6566)
(इब्ने माजा–सुनन–3/410-ह०–4315)
(अबू दाऊद–सुनन–6/597-ह०–4740)

हुजूर को इख़्तियारे शफ़ाअ़त अ़ता हुई

➡हज़रत औ़फ़ बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) एक तवील हदीस में बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने (एक सफ़र के दौरान) फ़रमाया कि मेरे रब की तरफ़ से आने वाला (एक फ़रिश्ता) रात को मेरे पास आया तो उसने मुझसे मेरी आधी उम्मत को बग़ैर हिसाबो किताब के जन्नत में दाख़िल किये जाने और हक़्क़े शफ़ाअ़त दोनों में से एक को चुनने का इख़्तियार दिया तो मैंने शफ़ाअ़त को इख़्तियार कर लिया नीज़ फ़रमाया कि बेशक मेरी शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के हर उस फ़र्द के लिये होगी जो अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/260-ह०–2441)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/473-ह०–6470)
(मुस्नद अहमद–10/1054-ह०–24477)

-: हुजूर की सिफ़ारिश कबीरा गुनाह वालों के लिये :-

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी सिफ़ारिश मेरी उम्मत के उन लोगों के लिये होगी जो कबीरा गुनाहों के मुरतकिब होंगे।
(अबू दाऊद-सुनन-4/596-ह०-4739)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/258-ह०-2435)

(गुनाहगारों को उम्मीद रखनी चाहिये कि उनकी सिफ़ारिश होगी और उन्हें मुआ़फ़ कर दिया जायेगा मगर साथ ही शदीद ख़ौफ़ भी रखना चाहिये क्योंकि ये भी माअ़लूम नहीं किस गुनाहगार की सिफ़ारिश होगी और कौन इससे महरुम रहेगा)

शफ़ाअ़ते अम्बिया, शुहदा, व उ़ल्मा

➡ हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तीन लोग शफाअ़त करेंगे- (1) अम्बिया-किराम (2) शुहदाऐ-किराम (3) उ़ल्माए-किराम।
(इब्ने माजा-सुनन-3/410-ह०-4313)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया रोज़े क़यामत शहीद की सिफ़ारिश अपने घर वालों के सत्तर अफ़राद के हक़ में कुबूल की जायेगी।
(अबू दाऊद–सुनन–3/72-ह०–2522)

–: सबसे पहले उम्मते मुस्लिमा जन्नत में दाख़िल होगी :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हम आख़िरी उम्मत हैं और क़यामत के दिन सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। (बुख़ारी–सही–6/140-ह०–6624)

–: अल्लाह की सौ रहमतें :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बिला शुबा अल्लाह तआ़ला की सौ रहमतें हैं उनमें सिर्फ़ एक रहमत अपनी तमाम मख़लूक़ में जमाअ़ कर दी है इसी वजह से तमाम मख़लूक़ एक दूसरे से प्यार व मुहब्बत करते हैं जैसे माँ अपने बच्चे से मुहब्बत करती है बाक़ी तमाम रहमतें अल्लाह तआ़ला ने अपने पास क़यामत के दिन लिये रख छोड़ी है।

(यानी क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला अपनी उन तमाम रहमतों से अपने बन्दो को बख़्शेगा)
(इब्ने माजा–सुनन–3/400-ह०–4293)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/979-ह०–3541)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने आसमानों व ज़मीन को पैदा फ़रमाया उसी दिन सौ रहमते पैदा फ़रमायीं और सौ रहमतों में से एक रहमत ज़मीन पर भेजी इसी वजह से माँ अपने बच्चे पर रहमत करती है और चरिन्दे जानवर एक दूसरे पर और परिन्दे एक दूसरे पर रहम करते हैं और निन्नयानवे (99) रहमतों को उसने क़यामत के दिन के लिये उठा रखा है जब क़यामत का दिन होगा तो उस दिन अल्लाह तआ़ला उन तमाम रहमतों को पूरा फ़रमायेगा।
(बुख़ारी–सही–5/585-ह०–6000)
(इब्ने माजा–सुनन–3/401-ह०–4294)
(मुस्लिम–सही–6/310-ह०–6974)

-: अल्लाह के ग़ज़ब पर अल्लाह की रहमत ग़ालिब है :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बिला शुबा अल्लाह तआ़ला ने जब तमाम मख़लूक़ को पैदा किया तो फ़रमाया कि मेरे ग़ज़ब पर मेरी रहमत ग़ालिब है और अल्लाह तआ़ला ने अपनी पाक ज़ात पर ये लाज़िम कर लिया है कि मेरी रहमत मेरे गुस्से पर ग़ालिब रहेगी और ये अ़र्श पर अब भी लिखा हुआ है।
(बुख़ारी–सही–6/561-ह०–7404)
(इब्ने माजा–सुनन–3/401-ह०–4295)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/980-ह०–3543)
(बुख़ारी–सही–3/444-ह०–3194)

-: अल्लाह तआ़ला अपने बन्दो को अ़ज़ाब देना नहीं चाहता :-

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हम एक जिहाद में नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ थे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का गुज़र कुछ लोगों के पास से हुआ तो आपने-

उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो तो उन्होंने कहा कि हम मुसलमान हैं उनमें से एक औ़रत आग से अपना तन्नूर (एक गोल मिट्टी का बर्तन जिसे घड़े में लगाकर रोटियाँ पकाते हैं, रोटी बग़ैराह पकाने का मक़ाम) को रौशन कर रही थी जब तन्नूर से धुआँ निकला तो उसने अपने बेटे को पीछे ढ़केल दिया उसके बाद हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास आकर पूछने लगी क्या आप अल्लाह के रसूल हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ मैं अल्लाह का रसूल हूँ तो उसने कहा मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों मुझे ये बतायें क्या अल्लाह की रहमत सब रहम करने वालों से ज़्यादा है।

तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक फिर उसने कहा कि बच्चा चाहे जितना भी शरारती व नाफ़रमान हो माँ उसे आग में नहीं फैंक सकती तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला भी अपने बन्दों को कभी अ़ज़ाब देना नहीं चाहता मगर ये कि जो सरकश हों और अल्लाह तआ़ला को एक मानने से मुन्कर हों और अल्लाह तआ़ला का बन्दो पर हक़ ये है कि अल्लाह उन्हें बख़्श दे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/401-ह०–4297)

–: अल्लाह तआ़ाला की रहमत से लोग दोज़ख़ से निकाले जायेंगे :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन नेक मोमिन अपने परवर दिगार से उन मुसलमान भाईयों के मुताअ़ल्लिक़ तक़ाज़ा और मुतालबा करेंगे जो दोज़ख़ में होंगे और कहेंगे ऐ मेरे रब तूने मेरे उन भाईयों को आग में दाख़िल कर दिया है जो हमारे साथ नमाज़ अदा करते थे और रोज़े रखते थे और हज किया करते थे

तो अल्लाह तआ़ाला फ़रमायेगा कि अच्छा जाओ और जिन्हें तुम पहचानते हो उन्हें दोज़ख़ से निकाल लाओ चुनाँचा वो लोग दोज़ख़ में उनके पास जायेंगे और उनकी शक्लें देखकर उन्हें पहचान लेंगे उनमें से बाअ़ज़ को दोज़ख़ की आग ने पिण्डलियों तक पकड़ रखा होगा और बाअ़ज़ों को टख़नों तक आग ने पकड़ रखा होगा फिर अल्लाह तआ़ाला फ़रमायेगा कि उनको भी निकाल लो जिनके दिल में एक दीनार के बराबर ईमान है फिर अल्लाह तआ़ाला फ़रमायेगा उनको भी दोज़ख़ से निकाल लो जिनके दिल में एक रत्ती भर ईमान हो।
(नसाई–सुनन–3/467-ह०–5016)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है उन्होंने कहा कि हमने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या क़यामत के दिन हम अपने रब को देखेंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मतलाअ़ साफ़ होने की सूरत में क्या तुम्हें चाँद और सूरज को देखने में कोई दिक्कत होती है हमने कहा नहीं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि यक़ीनन तुम्हें अपने रब के दीदार में कोई दिक्कत पेश नहीं आयेगी नीज़ फ़रमाया एक ऐलान करने वाला ऐलान करेगा हर क़ौम उसके साथ जाये जिसकी वो पूजा किया करती थी तब सलीब के पुजारी अपनी सलीब के साथ, बुतों के पुजारी अपने बुतों के साथ और तमाम माअ़बूदाने बातिला की पूजा पाठ करने वाले अपने अपने माअ़बूदों के साथ चले जायेंगे हत्ता कि अल्लाह तआ़ाला की इबादत करने वाले नेक व बद और बच्चे कच्चे अहले किताब के कुछ लोग बाक़ी रह जायेंगे इसके बाद जहन्नुम उनके सामने लायी जायेगी वो ऐसी चमकदार होगी जैसे मैदान का रेत होता है (जो दूर से पानी माअ़लूम होता है)

फिर यहूद से पूछा जायेगा कि तुम किसकी पूजा करते थे वो कहेंगे कि हम उजैर बिन अल्लाह की पूजा किया करते थे तो उन्हें जवाब मिलेगा कि तुम झूठे हो खुदा के न कोई बीबी है न कोई औलाद फिर उन्हें जहन्नुम में डाल दिया-

जायेगा फिर नसारा से कहा जायेगा तुम किसकी पूजा किया करते थे वो जवाब देंगे कि हम मसीह बिन अल्लाह की पूजा किया करते थे उनसे कहा जायेगा कि तुम झूटे हो अल्लाह की न कोई बीबी है और न कोई औलाद फिर उन्हें भी जहन्नुम में डाल दिया जायेगा यहाँ तक कि वही लोग बाक़ी रहेंगे जो ख़ालिस अल्लाह की इबादत किया करते थे नेक व बद दोनों क़िस्म के मुसलमान फिर अल्लाह तआ़ला उनके सामने दूसरी सूरत में आयेगा और कहेगा मैं तुम्हारा रब हूँ वो कहेंगे तू ही हमारा परवर दिगार है और उस दिन अम्बिया-किराम के अलावा अल्लाह तआ़ला से कोई बात न कर सकेगा

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तुम्हें अपने रब की कोई निशानी माअ़लूम है जिसके ज़रिये तुम उसे पहचान सको वो कहेंगे ''पिण्डली ज़रिया ए शिनाख़्त है'' फिर अल्लाह तआ़ला अपनी पिण्डली खोल देगा तो हर मोमिन उसके हुज़ूर सज्दा रेज़ हो जायेगा सिर्फ़ वो लोग बाक़ी रहेंगे जो महज़ रियाकारी और शौहरत के लिये उसे सज्दा करते थे वो सज्दा करना चाहेंगे लेकिन सज्दा न कर सकेंगे उनकी पुश्त तख़्ते की तरह हो जायेगी

फिर पुलसिरात लाया जायेगा हमने अ़र्ज़ किया पुलसिरात क्या है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला-

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो गिरने और फिसलने का मक़ाम है और उस पर लोहे के नोकदार आँकड़े व काँटें होंगे वो लोहे के कुण्डे साअ़दान नामी झाड़ी के काँटों की तरह होंगे जो नजद में पायी जाती है उस पर से अहले ईमान पलक झपकने व बिजली की मानिन्द व हवा की मानिन्द व तेज़ रफ़्तार घोंडों व तेज़ रफ़्तार ऊँटों की तरह गुज़र जायेंगे उनमें से कुछ सही सालिम निजात पाने वाले होंगे जबकि कुछ जख़्मी होकर बिल आख़िर उसे ऊ़बूर कर जायेंगे और कुछ झुलस कर आग में गिरने वाले होंगे यहाँ तक कि आख़िरी शख़्स खुद को घसीटकर उसे पार करेगा

उस वक़्त लोग अल्लाह तआ़ला से तक़ाज़ा और मुतालबा करेंगे जब वो देखेंगे कि अपने भाईयों में से सिर्फ़ उन्हें निजात मिली है वो अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हमारे भाई हमारे साथ नमाज़े पढ़ते थे हमारे साथ रोज़े रखते थे और हमारे साथ नेक अ़मल करते थे उन्हें दोज़ख़ से निजात अ़ता फ़रमां तो अल्लाह तआ़ला उनसे फ़रमायेगा जाओ जिसके दिल में एक दीनार के बराबर भी ईमान पाओ उसे दोज़ख़ से निकाल लाओ और अल्लाह तआ़ला उनके चेहरों पर आग को हराम कर देगा तो वो आयेंगे और देखेंगे कि कुछ तो क़दमों तक आग में गायब होंगे और कुछ निस्फ़ पिण्डली तक दोज़ख़ में होंगे वो जिन्हें पहचान लेंगे उन्हें दोज़ख़ से निकाल लायेंगे फिर जब वो

वापस आयेंगे तो रब तआ़ला उनसे फ़रमायेगा कि जाओ और जिसके दिल में निस्फ़ दीनार के बराबर ईमान हो उसे भी निकाल लाओ चुनांचा वो जिनको पहचानते होंगे तो उनको दोज़ख़ से निकाल लायेंगे फिर जब वापस आयेंगे तो अल्लाह तआ़ला उनसे फ़रमायेगा कि जाओ जिसके दिल में ज़र्रा बराबर ईमान हो उसे भी निकाल लाओ फिर वो जिन्हें पहचानते होंगे उन्हें निकाल लायेंगे

अम्बिया-किराम व अहले ईमान और फ़रिश्ते शफ़ाअ़त करेंगे उसके बाद रब तआ़ला इरशाद फ़रमायेगा कि अब खास मेरी शफ़ाअ़त बाक़ी रह गयी है फिर अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ से एक मुट्ठी भरेगा और ऐसे लोगों को निकालेगा जो जलकर कोयला हो चुके होंगे फिर वो जन्नत के एक किनारे पर वाक़ैअ़ नहर में डाले जायेंगे फिर वो आबे हयात से इस तरह निकलेंगे जिस तरह मोती चमकता है फिर उनकी गर्दनों पर मुहर लगा दी जायेगी (कि ये अल्लाह तआ़ला के आज़ाद कर्दा हैं) फिर वो जन्नत में दाख़िल होंगे।
(बुख़ारी-सही-6/583-ह०-7439)
(मुस्लिम-सही-1/303-ह०-454)